।। श्री हरिः ।।

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

कुंभनदास

सूरदास

परमानंददास

गोविन्दस्वामी

कृष्णदास

छीतस्वामी

चतुर्भुजदास

नंददास

कीर्तन प्रबोध

पुष्टिभक्तिसंगीत पाठ्य क्रम. नं. २

।। श्री हरिः ।।

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

प. पू. गो. श्री निकुंजलता बेटीजीकी प्रेरणासे एवं आपके ही मनोरथ स्वरुप ''श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट'' की स्थापना कई सालों पहले मुंबईमें की गई ।

ट्रस्टका प्रमुख उद्देश्य वैष्णवोंसे लेकर सभी जरुरतमंदो को किसीभी प्रकारका भेदभाव रखे बिना तबीबी इलाज शस्त्रक्रीया, दवाईयां इत्यादिमें यथाशक्य मदद करना है । जिसमें ह्रदयशस्त्रक्रीया हो या सारवार हो, केन्सर या किडनी डायालिसिस या अन्य रोगोंमें यह ट्रस्ट काफी मदद रुप हो रहा है । ''कुसुमबेन रसिकलाल एवं रसिकलाल मणीलाल लाकडावाला मेडीकल फंड'' के जरीये औषधोपचार इत्यादिमें मदद की जाती है ।

मुम्बई स्थित भाटीया होस्पीटलमें ट्रस्टकी और से ''प्रवीणचन्द्र लल्लुभाई कचरिया मेडिकल बेड'' नामसे बेड रखी गई है । मेडीकल सहायके सिवा जरुरतमंद विद्यार्थीओंको स्कूल, कोलेज, फीस, पुस्तकें, नोटबुक इत्यादिमें भी सहाय की जाती है । ट्रस्टके माध्यमसे गरीबोंको अन्नभी वितरण होता है । दुष्काल, चक्रवात, पूर पीडितों एवं धरती कंप इत्यादि प्राकृतिक आपत्तियोंमेभी ट्रस्ट द्वारा राहत कार्य होता है ।

यह ट्रस्ट जगद्गुरु श्रीमद् वल्लभाचार्यजीके दिव्य सिद्धान्तों के आधार पर भारतीय धर्म, दर्शन एवं संस्कृतिका प्रचार प्रसार कर जन समाजका आध्यात्मिक उत्थान करनेके लिये कई प्रकारकी प्रवृत्तियाँ कर रहा है । जिसमें आचार्यचरण श्री महाप्रभुजी, प्रभुचरणश्री गुसांईजी एवं अन्य महानुभावोके जन्मोत्सव पर विशाल कार्यक्रमोंका आयोजन करना, पूज्यपाद श्री निकुंजलता बेटीजी एवं अन्य श्री वल्लभकुलके महानुभावोंके वचनामृत एवं विद्वानोंके प्रवचन रखना; भगवत्सेवा शिबिर, संस्कार शिबिर, कीर्तन शिबिर एवं संमेलन रखना इत्यादि का समावेश होता है ।

पू.पा.गो श्री निकुंजलता बेटीजी संस्थापित ''बृहद् मुंबई बैष्णव महीला समाज'' के सहयोगसे समस्त मुंबईमे कीर्तन वर्ग चल रहे हैं । जिसमे सी.पी.टेन्क, वालकेश्वर, वोर्डन रोड, पेडर रोड, तारदेव, माटुंगा, पार्ला, अंधेरी, कांदीवली, बोरीवली, दहींसर इत्यादी उपनगरोंमें कीर्तन वर्ग चल रहे हैं । ट्रस्ट द्वारा पुष्टिभक्तिसंगीत प्रशिक्षणका पंचवर्षीय पाठ्यक्रम तैयार किया गया है । जिसमें प्रवेशिका, प्रबोध, सुबोध, प्रवीण एवं विशारद कीर्तन प्रशिक्षण का समावेश होता है। प्रतिवर्ष ट्रस्ट द्वारा परीक्षामें बैठनेवाले विद्यार्थीओंको प्रथम प्रवेशिका से लेकर विशारद तकमें उत्तीर्ण होनेवाले विद्यार्थीओंको सुन्दर सर्टीफिकेट दिया जाता है । उपनगरों सहित पुरे मुंबईसे विद्यार्थी परीक्षा देते हैं । इतना हि नहीं भारत के अन्य शहरोंसे लेकर विदेशोसे में भी ट्रस्ट द्वारा गायन, वादन और नृत्यकी परीक्षाभी ली जाती है ।

ट्रस्टके मेनेजींग ट्रस्टी श्री सुरेन्द्रभाई महेता और मानद् सेक्रेटरी श्री बालकृष्णभाई पोपावाला हैं, जो सुचारु रुपसे कार्य संचालन कर रहे है ।

।। श्री हरिः ।।

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

कीर्तन प्रबोध

पुष्टिभक्तिसंगीत पाठ्यक्रम नं. २

मार्गदर्शन :

पू. पा. गो. श्री निकुंजलता बेटीजी महोदया

कीर्तनकार एवं स्वरलीपि :

श्री जमुनाप्रसादजी शर्मा **डॉ. नटवरगोपाल मापावाला (अग्रवाल)**

संकलन :

कु. ख्याति निर्मल द्वारकादास

भावोद्बोधन :

श्रीमती कल्पनाबेन शाह

प्रकाशक :

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

कार्यालय :

६०४, मेकर चेम्बर-५,
नरिमन पॉईंट, मुंबई - ४०० ०२०.
फोन : २२८३५२९५/२२८७५५३४

(सर्व हक्क प्रकाशक के स्वाधीन)

अनुक्रमणिका

क्रमांक विषय पृष्ठ क्रमांक

१) पू. पा. गो. श्री आचार्यवर्यों के आशिर्वचन V,VI,VII,

२) जो सुख होत गोपाल गाये - पू.पा.गो निकुंजलताबेटीजी 1

३) पाठ - १ - संगीत विषयक जानकारी 4

४) पाठ - २ - ताल विभाग 11

५) पाठ - ३ - वाद्य परिचय 16

६) पाठ - ४ - हमारी कीर्तन प्रणाली - २ 22

७) पाठ - ५ -राग विभाग 28

५.१ - राग देवगंधार 28

कीर्तन - १ - मंगल रुप निधान सांवरो 29

कीर्तन - २ - आज माई धन धोवत नंदरानी 31

कीर्तन - ३ - नैनभर देखो नंदकुमार 31

कीर्तन - ४ - बरनों श्री वल्लभ अवतार 34

कीर्तन - ५ - मन मोहन अद्‌भुत डोल बनी 35

कीर्तन - ६ - प्रगटी नागरी रूप निधान 36

५.२ - राग मालकौंस 38

कीर्तन - ७ - तुमसों बोलवेकी नाहीं 40

कीर्तन - ८ - श्री यमुना यमुना नाम भजो 42

कीर्तन - ९ - सब मिल आवो गावो बजावो मृदंग 42

कीर्तन - १० - आवन कह गयें अजहून आये पिय 44

कीर्तन - ११ - जरीके जरायवेकों तातेतन तायवेकूं 45

क्रमांक	विषय	पृष्ठ क्रमांक
	५.३ - राग धनाश्री	47
	कीर्तन - १२ - रानी तेरो चिर जियो गोपाल	49
	कीर्तन - १३ - रानीजु आपुन मंगल गावें	51
	कीर्तन - १४ - नेक गोपाल ही दीजो टेर	51
	कीर्तन - १५ - मेरो माई माधोसों मन मान्यो	53
	कीर्तन - १६ - सबे मिली मंगल गावो माई	54
	५.४ - वृन्दावनी सारंग	56
	कीर्तन - १७ - जाको वेद रटत ब्रह्मा रटत	57
	कीर्तन - १८ - यमुना जल क्रीडत श्याम	60
	कीर्तन - १९ - घरघर ग्वाल देत है हेरी	60
	कीर्तन - २० - हमारो देव गोवर्धन रानो	63
	कीर्तन - २१ - चक्रके धरणहार गरुडके असवार	63
	कीर्तन - २२ - छाक ले आई ग्वालिन गोरी	66
	५.५ - राग गौरी	68
	कीर्तन - २३ - बनतें आवत गावत गौरी	70
	कीर्तन - २४ - ततथैई ततथैई ततताथैई थेई	72
	कीर्तन - २५ - गोकुल गाम सुहावनो	72
	कीर्तन - २६ - श्याम सनेही गाईयै	75
	कीर्तन - २७ - अरि चल दूल्हे देखन जाय	76
	५.६ - राग पूर्वी	79
	कीर्तन - २८ - आगे गाय पाछे गाय	80
	कीर्तन - २९ - श्री विठ्ठलेश चरण कमल	83

क्रमांक	विषय	पृष्ठ क्रमांक
	कीर्तन - ३० - रासमंडलमें बने गिरिधरनलाल	83
	कीर्तन - ३१ - मैयारी में केसी गाय चराई	86
	कीर्तन - ३२ - कदंब चढिकान्ह बुलावत गैया	86
	५.७ - राग हमीर	88
	कीर्तन - ३३ -गिरिधर सबही अंगको बांको	90
	कीर्तन - ३४ - यातें माई भवन छाँड़ बन जैये	91
	कीर्तन - ३५ - श्री वल्लभलाल के गुण गाऊं	91
	कीर्तन - ३६ - केसर फूल बीनत राधा गोरी	93
	कीर्तन - ३७ - गये पाप ताप दूर देखत दरस परस चरन	94
	५.८ - राग ईमन	96
	कीर्तन - ३८ - मेरे तो गिरिधर ही गुणगान	97
	कीर्तन - ३९ - दूध पियो हो कुँवर कन्हाई	99
	कीर्तन - ४० - रुचिर पद कमल श्री वल्लभाधीशके	99
	कीर्तन - ४१ - दोरी दोरी आवत मोहि मनावत	101
	कीर्तन - ४२ - श्याम सजनी शरद रजनी	102
१०)	जीवन चरित्र - श्री गुसांईजी	105
११)	जीवन चरित्र - श्री सूरदासजी	113
१२)	जीवन चरित्र - श्री छीतस्वामीजी	119
१३)	आश्रय पद	124
	कीर्तन - ४३ - राग तिलंग - श्री वल्लभ ही को भारी भरोसो	124
	कीर्तन - ४४ - राग हंसध्वनी - श्री गोवर्धनकी रहिये तरेटी	126

श्रीमद् गोस्वामी श्री१०८ श्रीरसिकरायजी

गो. रसिकरायजी
नवी हवेली - बाबालाचौक, उपलेटा

शुभाशीर्वाद संदेश

श्री महाप्रभुजी की आज्ञा ''कृष्ण सेवा सदा कार्या (सि.मु.) सर्वदासर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिप : जैसे वाक्योंसे पुष्टि मार्ग के अधिकारी जीवों के लिये भगवान् श्री कृष्ण का भजन करना मुख्य कर्तव्य है।

आचार्यचरण, श्री प्रभुचरण एवं श्री गोकुलनाथजी ने भजन प्रणालिका बताई है जिसमें भगवत्सेवान्तर्गत नवविध भक्ति का समावेश किया है । जो कि ''श्रवण-कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य एवं आत्मनिवेदन जिसमें कीर्तन भक्ति का विशेष महत्व है । प्रभु के सन्मुख - मंगला से राजभोग तक एवं - उत्थापन से शयन तक कीर्तनों का विनियोग होता है । चाहे वल्लभवंशज गो. बालको का घर हो या अनुयायी वैष्णवों के घर, जहाँ भगवत्स्वरुप की सेवा होती हो, समय-एवं प्रसंगोचित उत्सव, पर्व इत्यादि में विविध प्रकार के रागों में इन परम महानुभाव अष्टसखाओंनें प्रत्यक्ष प्रभु की लीलाओं का अनुभव किया है उस अनुभवों को काव्यत्मक रूप दिया एवं - सेवामें विनियोग भी किया वह परंपरा आजतक निभाई जा रही है । कीर्तन शिक्षा का आयोजन विशेष रुपसे अब हो रहा है वह अति श्लाघनीय है ।

अति प्रसन्नता का विषय है कि पू. श्री नि कुंजलता बेटीजी (जी जी) की निश्रा में - हवेली संगीत के क्लास चल रहे है । जिसमें विशेषतः महिलाएं कीर्तन का अभ्यास कर रही है ।

अभ्यास क्रम के लिये कीर्तन - प्रवेशिका पुस्तिका का प्रकाशन - हुवा है जिसमें प्रथम - प्रवेश - प्राप्त कीर्तन के अभ्यास करने वालों को राग, ताल एवं स्वरों की नोटेशन होने से कीर्तन सीखने वालों को व्यवस्थित शिक्षा प्राप्त होसके - एवं सुव्यवस्थित प्रणालिका अनुसार कीर्तन का अभ्यास हो सके, गो. पू. जीजीका यह प्रयास - हमारी कीर्तन - परंपरा को अक्षुण्ण रखने में बहोत हो सहायक हो सकेगा । आशा ही नहिं, विश्वास भी है कि वैष्णव समाज इस से लाभान्वित होंगे ।

यह कार्य सुंदर रुपसे चलता रहे ऐसी शुभकामना सह ।

भवदीय -

- ગો. રસિકરાયજી

गो. रसिकरायजी
उपलेटा

E-mail : mmgoswamiji@yahoo.com
mmgoswamiji@gmail.com

।। विजयते श्री बालकृष्णः प्रभुः ।।
।। श्रीनागद्मन श्रीनाथो जयति ।।

मंदिर फोन : (0265) 2462465

जगद्गुरु श्रीमद् वल्लभचार्य महाप्रभु प्रवर्तित शुध्धाद्वैत पुष्टिमार्गीय वैष्णव संपदायाचार्य
वाक् पतिपीठाधीश्वर

श्रीमद् गोस्वामी श्री१०८ श्रीमथुरेश्वरजी महाराजश्री

श्रीवाक् पतिपीठ,
श्रीगोवर्धननाथजी हवेली
पाणी टांकी रोड, कारेलीबाग,
वडोदरा - ३९० ०१८, गुजरात-भारत

शुभाशीर्वाद संदेश

जगद्गुरु महाप्रभु श्रीमद् वल्लभाचार्यचरण द्वारा निर्दिष्ट पुष्टिभक्तिमार्ग जीवात्मा और परमात्माको प्रेमाद्वैतसे जोडनेवाला सेतु है । श्रीमद् वल्लभाचार्यजी द्वारा ब्रह्मसंबंधसे दीक्षित जीवका प्रभुख कर्तव्य कृष्णसेवा है । इस स्नेहात्मिका सेवाके तीन मुख्य अंग, राग-भोग-और श्रृंगार है । रसरुप श्री प्रभुकी रागात्मिका सेवामें कीर्तन मुख्य है । अष्टछाप भगवदीयों द्वारा गुणगान कीये गये लीलासभर इन किर्तनों द्वारा प्रभु रीझते है और भगवद् लीलाओंके गुणगानसे हमारा चित भी प्रभुकी उन लीलाओमें निरुध्ध हो जाता है । यदि यह कीर्तन शास्त्रीय परंपराबद्ध राग-ताल भावपूर्वक गाया जाय तो हमारा अंतःकरण भी रसार्द्र हो जाता है ।

वैष्णवोको अपने सेव्य प्रभुको रीझानेके लिए किर्तनगान रागसभर और सुगम हो सके ऐसे उच्च हेत्वर्थ हमारी प्रिय भगिनी श्रीनिकुंजलता बेटीजीने बहुत परिश्रमसे और संशोधनसे पुष्टिभक्तिसंगीतका पंचवर्षीय अभ्यासक्रम प्रारंभ किया है; जिसमें प्रभुको जगाने से लेकर पोढाने तकके विविध कीर्तन स्वरलीपि और वाद्योंकी जानकारी सह एवं वर्षोत्सव तथा नित्य कीर्तन प्रणालीकाके आलेख द्वारा अत्यंत सेवोपयोगी जानकारीके साथ अष्टसखाओके संक्षिप्त चरित्र सम्मिलित हैं । श्रीनिकुंजतला बेटीजीके मार्गदर्शनसे इस अभ्यासक्रमकी परीक्षाएँ भी भारतवर्ष और विदेशोमें ली जाती है ।

पुष्टिभक्ति संगीत और हमारी भगवत् सेवाप्रणालीमें उपयोगी ऐसी इस पुस्तिकाका प्रकाशन होने जा रहा है बहुत आनंद का बिषय है । और इसलिये श्रीगुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट एवं श्रीनिकुंजलता बेटीजीको अपनी ओर से हार्दिक बधाई-अभिनंदन एवं शुभाशीर्वाद प्रदान करते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है ।

इस अभ्यासक्रमके अभ्यास द्वारा वैष्णव सृष्टि भी लाभान्वित होकर श्रीप्रभुसेवाको अधिदैवीकी बना सके ऐसी शुभकामना और शुभाशीर्वाद सह ।

गोस्वामी मथुरेश्वरजी

।। श्रीबालष्णकृष्ण: प्रभुर्विजयतेतराम् ।।

।। श्रीमद् वल्लभविट्ठलेशौ विजयेते ।।

GOSWAMI PRASHANT KUMAR

Govind Bhavan, Brihan Mandir, Bhuleshwar, Mumbai - 400 002.
mob : 9122-93225 32951

शुभाशीर्वाद संदेश

श्रीगुसाँईजी चैरीटेबल ट्रस्ट के द्वारा कीर्तन प्रबोध - पुष्टिभक्ति सङ्गीत पाठ्यक्रम पुस्तिका - २ का प्रकाशन हो रहा है; यह जानकर प्रसन्नता हो रही है ।

प.आ.गो.श्रीनिकुञ्जलता बेटीजी की प्रेरणा तथा मार्गदर्शन में संस्था कई वर्षों से कीर्तन - अष्टछाप सङ्गीत के प्रचार - प्रसार में कार्यरत है । समय - समय पर संस्था द्वारा कीर्तन कार्यक्रम, प्रशिक्षण शिबिर, सैमिनार का आयोजन होता रहा है । विशेषकर, पाठ्यक्रम के रुप में प्रशिक्षण का प्रयोग सराहनीय है ।

वर्तमान पुस्तिका में रागों के साथ - साथ वाद्य परिचय नामक पाठ रखा गया है जिसमें पाठकों को पखावज तथा तबला का परिचय कराया जा रहा है ।

संस्था द्वारा इस दिशा में निरन्तर कार्य होता रहे; ऐसी शुभकामना ।

गोस्वामी श्री प्रशांतकुमारजी

पूज्यपाद श्री निकुंजलताबेटीजी महोदया

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्टके प्रेरक, संस्थापक एवं
पुष्टिभक्तिसंगीत अभ्यासक्रमके प्रणेता

।। श्री ।।

।। जो सुख होत गोपाल गाये ।।

श्रीगुसांईजी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पुष्टिभक्तिसंगीत प्रशिक्षणके अभ्यासक्रम अंतर्गत पाठ्य क्रम नं. १ ''कीर्तन प्रवेशिका'' पुस्तिका के बाद, पाठ्यक्रम नं. २ ''कीर्तन प्रबोध'' पुस्तिका का प्रकाशन करते हुए मुझे अतीव प्रसन्नता हो रही है ।

श्रीमहाप्रभुजी एवं श्रीगुसांईजी के परम कृपापात्र इन अष्टछाप भगवदीय एवं अष्टछाप इतर भगवदीयोंके कीर्तनोंकी रसरुप वाणी अनुभवित एवं फलात्मक एवं निरोधात्मक है । इन कीर्तनों का रसपान गान या श्रवणके माध्यमसे हम करते हैं । श्रीआचार्यचरण आज्ञा करते हैं कि ''ज्ञात्वा पाने महारस:'', समजकर पान करने पर अधिक रस मिलता है । पुष्टिभक्तिसंगीत अभ्यासक्रम का यही हेतु है कि वैष्णवोंको कीर्तनका ज्ञान प्राप्त हो और सुन्दरतया कीर्तनगान करके स्वसेव्य प्रभुकी प्रसन्नता संपादन कर सके ।

कीर्तनगान करनेवाले वैष्णवोंको सदैव यह ध्यानमें रखना चाहिये कि वे अवश्य हि कीर्तनों की गरीमा को बनाय रखकर कीर्तन गान करें । जहाँ तहाँ जिस किसी स्थलमें कीर्तन गान नहीं करना चाहिए । लीला या स्वरुप या भाव-भावना संबंधी पद श्री...... के सन्मुख या श्रीवल्लभकुल परिवार के सन्मुख या भगवद्वार्ता इत्यादि

स्थलों पर या वैष्णवों के घरमें श्रीमहाप्रभुजी आदि पुष्टिमार्गीय भगवद् स्वरुपों के चित्रजी सन्मुख गान करना चाहिये । किन्तु पुष्टिमार्गीय उपयुक्त स्थलोंको छोडकर अन्य मंदिरोंमें या शोक सभाओं में या ऐसे स्थलों पर गान नहिं करना चाहिए ।

इस द्वितीय वर्ष की ''कीर्तन प्रबोध'' पुस्तिकामें नये आठ राग स्वरलीपि सहित दिये है । उसी स्वर लीपिमें सभी रागोमें एक और पद भी रियाज़के लिये दिया है । विशेषमें प्रत्येक रागमें कीर्तनकी नई बंदिश स्वरलीपिके साथ दी है, जिससे शिक्षणार्थी अधिक प्रयत्नसे अच्छी तरह शास्त्रीय परंपरासे सिखकर गा सके । इसके अलावा संगीत विषयक जानकारी में थाट, नाद, ध्वनिकी जानकारी एवं विविध ताल एवं तबला पखावजकी जानकारी वाद्य परिचयमें दी है । ''हमारी कीर्तन प्रणाली'' लेखमें हमारे यहाँ कीर्तनमें गाये जानेवाले रागोमें कुछ जानकारी दी है । साथ ही श्रीगुसांईजी, श्रीसूरदासजी एवं छीतस्वामीके संक्षिप्त जीवन चरित्र भी दिये हैं ।

इस अभ्यासक्रमकमें अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ एवं आशिर्वचन प्रदान करने के लिये हमारे माननीय श्रीवल्लभकुल महानुभावोंके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ । इस पुस्तिकाके वाद्यपरिचय पाठमें आपना आलेख देने के लिए चि. गो. श्री. प्रशांतकुमारजीको आशीर्वाद और धन्यवाद देती हूँ ।

इस पुस्तिकामें स्वरलीपि और सी.डी.में अपना कंठ देनेके लिये

कीर्तनकार श्रीजमुनाप्रसादजी शर्माको एवं उद्घोषिका श्रीमति कल्पनाबेन शाह को एवं हमारी प्रिय श्रीमती उर्मिलाबेन वोराको कुछ नई बंदिशोंके लिये धन्यवाद देती हूँ । श्रीगुसांईजी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित इस पाठ्यक्रम का नागपूर, अमरावती और विदर्भ के कई स्थलोमें व्यापके लिये मूर्धन्य कीर्तनकार गिरधरगोपालजी अग्रवाल और डॉ. नटवरगोपालजी मापावालाको मैं सहृदय आशिर्वाद देती हूँ । नागपूरमें कॉलेजके प्राध्यापक एवं नि:शुल्क कीर्तन प्रशिक्षण वर्ग चलानेवाले डॉ. नटवरगोपालजी मापावालाको इस पुस्तिकामें अपनी विशिष्ट सरल बंदिशे देनेके लिए मैं हार्दिक धन्यवाद देती हूं ।

कु. ख्याति एवं श्रीमति नैनाबेन निर्मल द्वारकादास जो आज कई वर्षों से मेरी आज्ञानुसार इस पाठ्यक्रम की परीक्षाओंका संचालन देशविदेशके कई स्थलों पर कर रहे हैं और पुस्तिकाके नवीन रुप और मुखपृष्ठ डीझाईन से लेकर मुद्रण तक सुन्दर संकलन सुचारुतया करने के लिये एवं कुछ रागोमें अपनी नई बंदिशें देने के लिये मैं हार्दिक धन्यवाद एवं आशिर्वाद देती हूँ ।

अन्त में मेरी शुभकामनाएँ है कि अधिक से अधिक वैष्णव भाईबहनें इस अभ्यासक्रमका लाभ लें और कीर्तन गानमें आगे बढकर स्वसेव्य श्री...... को प्रसन्न करें ।

निकुञ्जलता बेटीजी
सूरत. बडौदा. मुंबई

पाठ १ : संगीत विषयक जानकारी

'कीर्तन प्रवेशिका' में हम पढ चुके हैं कि गीत, वाद्य और नृत्यके त्रिवेणी संगमसे संगीत बनता है । संगीत-कला अन्य कलाओं की तरह मानसिक बोध करानेकी अनुकृति नहीं करती, बल्कि वह स्वयं की इच्छा की अनुकृति है और यह बोध करानेकी क्रिया इसीकी छाया है । संगीतके सशक्त प्रभावका यही कारण है कि वह स्वयं असली तत्त्वकी अभिव्यक्ति करता है । संगीत-कला किसी विशेष सीमित आनंद, दुःख, पीड़ा, भय, शान्ति या प्रसन्नताको व्यक्त नहीं करती, बल्कि वह इनके सामान्य और सार्वभौमिक स्वरूपको अभिव्यक्ति देती है । संगीत-तत्त्व मीमांसा और दर्शन से उत्पन्न होता है; इसका स्त्रोत अचेतन मन है ।

१.१ संगीत का प्रभाव :-

संगीतसे केवल आनंदानुभूति ही नहीं होती, ध्वनियाँ मानसिक स्थितियों की सूचक होती हैं । संगीत हमारी आत्मामें भक्तिमय अनुभूतियाँ भर देता है । संगीतमें एक गति है और हमारी क्रियाएँ भी गत्यात्मक होती हैं । दोनों में सादृश्य होनेके कारण ही मात्र ध्वनिमय रागिनियाँ हमारी आत्माको प्रभावित कर लेती हैं ।

ध्वनि दो प्रकारकी होती है -

(१) कोलाहल (२) कर्णप्रिय ध्वनि ।

आंदोलनों की अनियमित गतिसे उत्पन्न ध्वनि, कोलाहल या शोर कहलाती है । जब आंदोलनों की गति नियमित होती है तब वह ध्वनि कर्णप्रिय है, वही संगीतमें उपयोगी होती है - ऐसी ध्वनि को संगीतमें नाद कहते हैं ।

१.२ नाद :

नकारं प्राणनामानं दकारमनलं विदुः ।
जातः प्राणाग्निसंयोगात्तेन नादोऽभिधीयते ।। - **संगीत-रत्नाकर (१।३।६)**

अर्थात् - 'नकार' प्राण वाचक (वायु-वाचक) तथा 'दकार' अग्नि-वाचक है । अतः जो वायु और अग्निके योग (सम्बन्ध) से उत्पन्न होता है, उसीको 'नाद' कहते हैं ।

संगीतका संबंध भी नाद (आवाज) से है क्योंकि नाद संगीतका प्राण है । नाद के दो प्रकार हैं

"आहतोऽनाहतोश्चेति द्विधा नादौ निगद्यते ।" -**(संगीत-रत्नाकर)**
'आहत' (व्यक्त) नाद एक है और दूसरा है 'अनाहत' (अव्यक्त) नाद ।

(१) आहत नाद :-

जो नाद हमें कानोंसे सुनाई देता है और जो दो वस्तुके घर्षण या आघात से उत्पन्न होता है उसे 'आहत' नाद कहा जाता है ।

(२) अनाहत नाद :-

जो नाद कानों से नहीं सुना जा सकता, जो केवल ज्ञान से ही जाना जाता है, उसे 'अनाहत' नाद कहते हैं । इसी अनाहत नादकी उपासना हमारे प्राचीन ऋषि-मुनी करते थे, इसलिए संगीतका प्रत्यक्ष संबंध केवल 'आहत' नाद से ही माना जाता है ।

नादकी व्याख्या :-

नियमित आंदोलन संख्यावाली ध्वनि जो संगीतमें काम आती है, जो मधुर है और चित्तको प्रसन्नतासे भर देती है, ऐसी ध्वनिको संगीतमें नाद कहा जाता है । अर्थात् सब नाद ध्वनि है लेकिन सब ध्वनि नाद नहीं होती ।

नाद के तीन विशिष्ट गुण :-

(क) नादका ऊँचा - नीचापन :-

स्वर - कम्पन की संख्या ज्यों -ज्यों बढ़ती जाती है त्यों-त्यों स्वर ऊंचा चढ़ता जाता है । स्वर-कम्पनकी संख्या ज्यों-ज्यों घटती है, त्यों-त्यों स्वर निम्नतर होता जाता है । स्वरकी इस क्रियाको ऊँचाई-निचाई कहते है । यहाँ यह बात लक्ष्यमें रखनी चाहिए कि, नाद के छोटे या बड़ेपन का संबंध आंदोलनोंकी संख्यासे नहीं है, क्योंकि एक ही नाद छोटा या बड़ा हो सकता है, किंतु वह नाद ऊँचा या नीचा नहीं हो सकता ।

(ख) नाद का छोटा - बड़ापन :-

एक ही स्वर-कम्पन को कम या अधिक ताकत से कहने से आवाज़ छोटी या बड़ी होती है ।

(ग) नाद की जाति या गुण :-

जाति या गुणही स्वरकी आवश्यक पहचान या विशेषता है । नादकी जाति से यह मालूम होता है कि जो आवाज आ रही है, वह किसी मनुष्यकी है या किसी वाद्य से निकल रही है ।

उदाहरणार्थ - एक नाद हारमोनीयम, सारंगी, सितार से प्रकट हो रहा है और एक नाद मनुष्यके गले से, तो हम बिना देखे ही बता सकते हें कि उनमेंसे कौनसा नाद वाद्यका है और कौनसा नाद गले का है ।

१.३ श्रुति :-

संस्कृतमें ‘श्रु’ शब्द का अर्थ है सुनना और इसीसे श्रुति शब्द बना है । ‘‘श्रुयते इति श्रुतिः’’ जो संगीतोपयोगी नाद कानोंसे स्पष्ट सुना और पहचाना जा सकता है उसे श्रुति कहते हैं । या दो अत्यंत निकट स्वरों के बीचका अति सूक्ष्म अंतर जो कानोंसे स्पष्ट सुना या पहचाना जा सकता हो; जैसे हमारे सप्तक का ।

हमारे संगीत शास्त्रकार प्राचीन समयसे बाईस नाद मानते चले आ रहे हैं । ये नाद क्रमशः एक-दूसरे से ऊँचे चढ़ते चले गए हैं । इन्हीं बाईस नादों को ‘‘श्रुति’’ कहते हैं । बाईस श्रुतियों पर गान करनेमें सर्वसाधारण को कठिनाई होती, अतः इन बाईसमेंसे बारह स्वर चुनकर गान कार्य होने लगा ।

श्रुतिका संगीतमें उपयोग :-

संगीतमें उपयोगी सात शुद्ध स्वरोंको उनके कोमल और तीव्र रूप सहित मिलाकर बारह स्वर बनते हैं । उनमेंसे (षड़ज) (सा) और ‘पंचम’ (प) को अचल स्वर कहते हैं क्योंकि ये स्वर अपने स्थान से कभी नहीं हटते हैं। ये दो स्वर कभी विकृत नहीं होते । शेष पांच स्वर याने - ‘रिषभ’ (रे), गांधार (ग), मध्यम (म), ‘धैवत’ (ध) और ‘निषाद’ (नी) - अपने स्थानसे हटते है, इसलिए उन्हें विकारी स्वर कहते है क्योंकि ये स्वर कभी शुद्ध कभी कोमल या कभी तीव्र होते हैं।

शुद्ध स्वर :- निश्चित श्रुति पर तय किया हुआ स्वर ।
उदाहरणतया - सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां

कोमल स्वर :- शुद्ध स्वरसे थोड़ा नीचा स्वर ।
उदाहरणतया - रे॒, ग॒, ध॒, नि॒

तीव्र स्वर :- शुध्ध स्वरसे थोडा ऊँचा स्वर ।
उदाहरणतया - म॑

स्वरों में श्रुतियों को बाँटने का नियम :-

प्राचीन ग्रंथकारोंने श्रुतियों को निम्नलिखित क्रम से स्वरों में विभाजित किया है ।

''चतुश्चतुश्चतुश्चैव षड्जमध्यमपंचमाः ।
द्वे द्वे निषादगांधारौ त्रिस्त्रीऋषभधैवतौ ।।'' -संगीत-रत्नाकर

अर्थात् - षड़ज, मध्यम और पंचम स्वरों में चार-चार श्रुतियाँ, निषाद और गांधार में दो-दो श्रुतियाँ और ऋषभ और धैवत स्वरों में तीन-तीन श्रुतियाँ हैं।

इस प्रकार बाईस श्रुतियाँ सात स्वरोमें बाँट दी गयी हैं ।

१.४ थाट :-

संगीतके इन बारह स्वरोंमें अलग-अलग स्वरसमूह लेकर इनमेंसे राग बनाये जाते हैं । जिन स्वर-समूहोंमें से अनेक राग उत्पन्न होते हें ऐसे स्वरसमूहको 'मेल' या 'थाट' कहते हैं ।

नादसे स्वर, स्वर से सप्तक और सप्तक से मेल या ठाठ या थाट तैयार होता है । उत्तर भारतीय हिन्दुस्तानी संगीत पद्धतीमें मुख्यतया दस थाट माने जाते हैं जब कि दक्षिण भारतीय संगीत प्रणालिमें बहत्तर ठाठ माने जाते हैं ।

मेल या थाटको राग नहीं कहा जा सकता, लेकिन मेल या थाटमें से राग उत्पन्न होते हैं । इसलिए इसे राग का जनक या पिता माना जाता है । 'चतुर' पंडित की निम्नलिखित कविता से दस ठाठों के नाम सरलता से याद हो जाते हैं ।

‘‘यमन, बिलावल और खमाजी, भैरव, पूरवि, मारव काफी ।
आसा, भैरवि, तोड़ि बखाने, दशमित ठाठ ‘चतुर’ गुनि माने ।।’’

दस प्रचलित ठाठ के नाम इस प्रकार हैं -

१) यमन २) बिलावल ३) खमाज ४) भैरव ५) पूर्वी ६) मारवा ७) काफी ८) आसावरी ९) भैरवी १०) तोड़ी

१.५ अलंकार :-

प्राचीन ग्रंथकार ‘अलंकार’ की परिभाषा इस प्रकार करते हैं -

‘विशिष्टवर्णसंदर्भमलंकार प्रचक्षते’

अर्थात् - कुछ नियमित वर्ण समुदायों को अलंकार कहते हैं ।

अलंकार का अर्थ है ‘आभूषण’ या ‘गहना’ । जिस प्रकार आभूषण शरीरकी शोभा बढाता है, उसी प्रकार अलंकारोंके द्वारा गायन की शोभा बढ़ जाती है ।

‘अभिनव रागमंजरी’ में लिखा है कि जैसे चन्द्रमा के बिना रात्री, जल के बिना नदी, उसी प्रकार अलंकार के बिना गीत भी शोभाको प्राप्त नहीं होते ।

अलंकार को ‘पलटा’ भी कहते हैं । प्रत्येक विद्यार्थीको नित्य अलंकारों का अभ्यास करना ही चाहिए क्योंकि अलंकारोंके अभ्यास से ही अच्छा, स्वरज्ञान होता है ।

अलंकारों से राग का विस्तार करनेमें सहायता होती है । अलंकारों के ही आधार पर तान इत्यादि बनती है ।

प्रत्येक अलंकारका अवरोह, आरोहका उल्टा होता है । और उसके आरोह - अवरोहके सभी टुकडे एकही नियमका पालन करते हुऐ आगे बढ़ते है । गलेका अभ्यास और वाद्य बजानेमें हाथ चलानेका अभ्यास, अलंकारोंसे ही पक्के हो सकते है ।

कीर्तन प्रवेशिका में हमने कुछ अलंकारोंका अभ्यास किया है। इस बार कुछ और अलकांरोंका अभ्यास करेंगे ।

१) सा रे ग सा, रे ग म रे, ग म प ग, म प ध म, प ध नी प,
ध नी सां ध, नि सां रें नी, सां रें गं सां ।
सां रें गं सां, नी सां रें नी, ध नी सां ध, प ध नी प,
म प ध म, ग म प ग, रे ग म रे, सा रे ग सा ।

२) सा रे ग ग, रे ग म म, ग म प प, म प ध ध,
प ध नी नी, ध नी सां सां ।
सां नी ध ध, नी ध प प, ध प म म, प म ग ग,
म ग रे रे, ग रे सा सा ।

३) सा, सा रे सा, सा रे ग रे सा, सा रे ग म ग रे सा,
सा रे ग म प म ग रे सा, सा रे ग म प ध प म ग रे सा,
सा रे ग म प ध नी ध प म ग रे सा,
सा रे ग म प ध नी सां नी ध प म ग रे सा ।
सां, सां नी सां, सां नी ध नी सां, सां नी ध प ध नी सां,
सां नी ध प म प ध नी सां, सां नी ध प म ग म प ध नी सां,
सां नी ध प म ग रे ग म प ध नी सां,
सां नी ध प म ग रे सा रे ग म प ध नी सां ।

पाठ २ : ताल विभाग

प्राचीन संगीताचार्योंने संगीतके सुर और तालको शरीर और प्राणकी उपमा दी है । इससे स्पष्ट होता है की संगीतमें सुरके साथ ताल का कितना महत्त्व है । मनमाने तरीकोंसे स्वरगान करनेसे वह मधुर संगीत नहीं बन जाता । जब वह ताल और लयमें निबद्ध होता है, तब ही वह उत्तम संगीत बन सकता है ।

२.१ ताल :-

संगीतमें समय नापनेके साधन को ताल कहते है । विभिन्न मात्राओंके समूहको भी ताल कहा जाता है । ताल शब्द ''तल'' धातुसे बना है। 'संगीतरत्नाकर' के अनुसार गायन, वादन और नृत्य तालसे ही शोभायमान होते हैं।

२.२ तालकी पहचान :-

हमारी संगीत प्रणालीमें भिन्न भिन्न अनेक ताल पाये जाते हैं । तालका आधार भिन्न भिन्न मात्राओं पर है । जैसे झपताल दस मात्रा का, एकताल बारह मात्राका, आडाचौताल चौदह मात्राका, इत्यादि । एक संपूर्ण तालको छोटे छोटे हिस्सोमें बांट दिया जाता है। उन हिस्सोंको विभाग या मात्राखंड कहते है । एक विभागमें २,३,४ या इससे अधिक मात्राएँ हो सकती हैं । जैसे तीनतालमें चार चार मात्राके चार विभाग होते हैं । तो चौतालमें दो दो मात्रा के छः विभाग होते हैं ।

इस तरह, विभिन्न तालोंको अलग उनके विभाग और मात्राके कारण पहचाना जा सकता है ।

झपताल - मात्रा १०,

खंड - चार ताली १,३,८, खाली ६

तबलेके बोल

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
X		२			०		३		

पखावज के बोल

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धा	गे	धा	गे	दिं	ता	गे	धा	गे	दिं
X		२			०		३		

एकताल - मात्रा १२

खंड ६ ताली: १,५,९,११ खाली ३,७

तबलेके बोल

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
धीं	धीं	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	त्ता	धागे	तिरकिट	धी	ना
X		०		२		०		३		४	

एकतालका यह रूप खयाल गायनके लिये है ।

पखावजके बोल - चौताल / द्रुपद

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
X		०		२		०		३		४	

आडाचौताल - मात्रा १४

खंड ७, ताली १,३,७,११ खाली ५,९,१३

तबलेके बोल

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
धिं	धिं	धा	तिरकिट	तू	ना	क	त्ता	धीं	धीं	ना	धीं	धीं	ना
x		२		०		३		०		४		०	

पखावजके बोल मात्रा १४, खंड ५, ताली १,३,७,११ खाली ५

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
धा	-	दिं	-	ता	-	ति	ट	क	त	ग	दि	ग	न
x		२		०		३				४			

कीर्तनोंमें अर्ध - आड़ा-चौताल मात्रा ७ का प्रयोग होता है ।

१	२	३	४	५	६	७
धा	दिं	ता	तीट	कत	गदी	गन
x	२		३		४	

तालमें ताली देना और हाथको बाजुपर ले जाना ये दोनों ही क्रिया अत्यंत महत्त्वकी है । इसकी स्पष्टताके लिये ताल में प्रयुक्त किये जानेवाले सम, ताली, खाली, जैसे अतिमहत्त्व के शब्द (पर्याय) समझने चाहिए।

सम - सम, तालका वह स्थान है, जहां से गाना, बजाना या ताल का ठेका शुरु होता है । इसपर ताली रहती है और वह साधारण तालीकी अपेक्षा जोरसे दी जाती है । सम आमतौर से पहली मात्रा पर आता है । सम पर ही प्राय: गाना बजाना प्रारंभ होता है । ताल में सम ''**x**'' इस चिन्हसे दिखाया जाता है ।

ताली या भरी - तालमें समकी ताली छोडकर, तालके जिन हिस्सोंपर जो दूसरी तालियां बजाई जाती है उन्हें ताली या भरी कहते हैं । जब हाथसे ताल दिया जाता है, तब तालीको ताली या थाप देकर दिखाया जाता है ।

खाली - खाली प्राय: तालके बीचमें आती है । दो से विभक्त हो सके ऐसी मात्रावाले तालको अगर दो भागोंमें बांट दिया जाय, तो पहले विभाग की पहली मात्रा 'सम' और दुसरे विभागकी पहली मात्रा खाली के नाम से जानी जाती है ।

ताल की यह एक अतिमहत्त्वपूर्ण मात्रा है । खाली हमेशा हाथ बाजुपर ले जाकर दिखाई जाती है जहां ताली नहीं बजाई जाती । लिखने में खाली के लीये ''०'' चिन्हका उपयोग किया जाता है ।

खाली से सम पर आने का अंदाज ठीक लग जाता है । उदाहरण के तौरपर - तीनतालमें -

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
x				२				०				३			

आवर्तन - तालकी पहली मात्रा से ताल की आखरी मात्रा तक की सीमा को - ''आवर्तन'' कहते हैं। अर्थात् ताल के एक पूरे चक्र को आवर्तन कहते हैं।

बोल - तबला या मृदंगके लिये प्राचीन शास्त्रकारोंने भिन्न-भिन्न बोल ऐसे ही बनाये, जैसे इन ताल वाद्योंसे नाद प्रगट होते हैं। तबला या मृदंगपर बजनेवाले ऐसे अक्षरोंसे निर्मित, जो शब्द बनते हैं उन्हें ''बोल'' कहते हैं। जैसे धा, धिन, किट, इत्यादि । ऐसे बोलोंको जब हम तबला या मृदंगपर बजाते हैं तब उसे ''ठेका'' कहा जाता है । उदा. धाधीना, धातीना - ये दादरा ताल के बोल है, जब उसे तबले पर बजाया जाता है, तब वह ठेका कहलाता है। पुष्टिमार्गीय कीर्तन संगीतमें तालको अत्यंत महत्त्वका जाना जाता है। केवल प्रात: मंगलामें, तालवाद्योंका उपयोग नहीं किया जाता है। अति कोमल वीणा, तंबूर जैसे वाद्योंको मधुरतासे बजाकर, श्रीठाकुरजीको जगाया जाता है । पश्चात् शयन पर्यंत सभी अष्टयाम सेवा क्रममें कीर्तन गानके साथ मृदंग या पखावज बजाकर ताल दिया जाता है । झांझका उपयोग उत्सवोमें अधिकतर किया जाता है ।

पाठ ३ - वाद्य परिचय

मृदङ्ग - पखावज

लेखक : पू.पा.गो.१०८ श्री प्रशांतकुमारजी महोदयश्री

मृदङ्ग भारत की ही नहीं, अखिल विश्व का प्राचीनतम वाद्य है । एक पौराणिक गाथा के अनुसार, महादेव ने त्रिपुरासुर का वध करने के पश्चात् आनन्द ताण्डव किया । चिरकाल तक शिव ताण्डव चलता रहा । परिणामस्वरुप, धरती काँपने लगी और रसातल में धँसने लगी । यह देख कर ब्रह्माजी घबराये । उन्होंने एक उपाय निकाला । त्रिपुरासुर के रक्त से भीजी हुई मृत्तिका से ब्रह्माजी ने एक वाद्य बनाया और गणेशजी को इसे बजाने को कहा । गणेशजी ने द्रुतगति में हो रहे ताण्डव के ताल से ताल मिलाया और धीरे - धीरे लय कम करते हुए शिव को शान्त किया । इस तरह पृथ्वी की रक्षा हुई, सबका मङ्गल हुआ तभीसे मृदङ्ग को आदिवाद्य और मङ्गलवाद्य कहा जाने लगा ।

एक अन्य वार्ता के अनुसार स्वाती मुनि को इस वाद्य का रचयिता माना गया है । एक बार महर्षि स्वाती तालाब से पानी लेने गये । अचानक तेज पवन के साथ वर्षा होने लगी । तालाब में खिले हुए कमलपुष्पों पर वर्षा की बूँदे गिरीं । इससे एक सुन्दर, कर्णप्रिय ध्वनि उत्पन्न हुई । स्वाती मुनि इस ध्वनि से बहुत प्रभावित हुए । अपने मस्तिष्क एवं हृदय में इस ध्वनि को धारण करके मुनि अपने आश्रममें लौट आये । तत्काल उन्होंने विश्वकर्मा को बुलवाया और उन्हें ऐसा एक वाद्य बनाने को कहा कि जिसे बजाने पर वैसी ही ध्वनि निकले जो उनके कर्ण में प्रतिक्षण गूँज रही थी । विश्वकर्मा ने

तालाब की मृत्तिका से ही तीन मुख वाला एक वाद्य बनाया । इस वाद्य का नाम रखा गया **पुष्कर** । संस्कृत में पुष्कर का अर्थ कमल, सरोवर, वर्षा होता है । कालान्तर में पुष्कर वाद्य को बनाने के लिये मृत्तिका की जगह काष्ठ का उपयोग होने लगा । यहीं से जन्म हुआ **मृदङ्ग** का ।

मृदङ्ग (मृत् + अङ्ग) का अर्थ है - मृत्तिका का अङ्ग है जिसका; वह मृदङ्ग; वह वाद्य जो सम्पूर्ण या आंशिक रूप से मृत्तिका का बना हो। मृदङ्ग को और भी कई नामों से जाना जाता है जैसे, मरदल, मुरज, मादल, पखवाज, पखावज, इत्यादि । पखावज शब्द फारसी **मुहावरा - पख अवाज** से बना है । अर्थात् जो मृदु/मन्द ध्वनि प्रकट करे । हाथ के एक भाग (खाँख से लेकर कोहनी तक) को भी पख कहते हैं । पख को बलपूर्वक हिलाने से आवाज निकाली जाती हो, वह **पखावज** ।

रामायण एवं महाभारत के काल में मृदङ्ग अपने सम्पूर्ण स्वरूप को प्राप्त कर चुका था । तत्कालीन समय में वीणा एवं मृदङ्ग प्रसिद्ध वाद्य थे । कुछ दशक पहले, मोहेञ्जोदारो की खुदाई के समय शोधकर्त्ताओं को कुछ अवशेष मिले जिनमें एक व्यक्ति ने मृदङ्ग के आकार का एक वाद्य रस्सी से गले में लटका रखा है और दोनों हाथों से उसे बजा रहा है । ६ठी-७वी शताब्दी के मन्दिरों एवं गुफाओ की शैलाकृतियों में भी मृदङ्ग देखा जा सकता है ।

मुसलमान शासनकाल में भारतीय संस्कृति पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है; विशेषकर उत्तर भारत में। कतिपय विद्वानों का ऐसा मानना है कि इस प्रभाव ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय सङ्गीत को नया आयाम दिया । साहित्य, कला, सङ्गीत, काव्य एवं बन्दिशों मे अभूतपूर्व निखार आया । तत्पश्चात्, मुगल सम्राट अकबर के काल में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय

सङ्गीत बुलन्दियों पर था । मियाँ तानसेन, बैजू बावरा, आदि गायकों को भला कोई कैसे भूल सकता है ।

अनुमान से कहा जा सकता है प्रायः इसी काल में मृदङ्ग, पखावज नाम से अधिक प्रसिद्ध हुआ । १५वी-१६वी शताब्दी के पद-साहित्य में दोनों ही नामो का उल्लेख मिलता है ।

मङ्गलवाद्य होने के नाते, पखावज मन्दिरों में कीर्तन-भजन के साथ बजाया जाता था (अभी भी है) । साथ-साथ वीणा, सरोद, सुरबहार जैसे तन्तुवाद्यों के साथ सङ्गत के रूप में भी पखावज का उपयोग होने लगा । कत्थक नृत्य में भी मृदङ्ग का उपयोग होने लगा। ध्रुवपद-धमार गायकों ने तो हमेशा ही पखावज का साथ लिया । अष्टछाप सङ्गीत (पुष्टि भक्ति सङ्गीत) में मृदङ्ग का विशिष्ट स्थान है । अन्य सम्प्रदायों में समाज गायन में भी मृदङ्ग की मुख्य भूमिका रही ।

आधुनिक काल में, मृदङ्ग, एकलवाद्य के रुप में उभर कर आया है । देश-विदेश के विभिन्न सङ्गीत समारोंह में पखावज वादन स्वतन्त्र रुप से होता है ।

वैसे तो मृदङ्ग के बहुत ज्यादा घराने नहीं है । वर्तमान में मृदङ्गाचार्य नाना पाणसे तथा मृदङ्गाचार्य कुन्दौसिंहजी के घराने सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय हैं ।

तबला

तबला भारतीय मूल का तालवाद्य है । एक सुप्रसिद्ध किंवदन्ति के अनुसार १३वी शताब्दी के सूफी सन्त, अमीर खुसरो को तबला का जन्मदाता माना जाता है । ऐसा कहा जाता है कि एक बार अमीर खुसरो पखावज बजा रहे थे । सहसा पखावज बीच में से टूट गयी । तब भी उन्होंने बजाना चालू रखा । टूटा वाद्य तब भी बोला; यही बन गया **तबला** । तबला, अरबी भाषा का शब्द तब्ल - अर्थात्, एक प्रकार का ढोल (वाद्य) से बना है । यद्यपि, खुसरो के साहित्य में, इतिहास में, कहीं पर भी इस प्रसङ्ग का उल्लेख नहीं मिलता है ।

आकार से स्पष्ट प्रतीत होता है जैसे मृदङ्ग को दो हिस्सों मे काट कर वाद्य बनाया हो । बजाने की पद्धति भी लगभग मृदङ्ग के समान ही है । फर्क इतना है कि थाप के बजाय तबला में उङ्गलियों का उपयोग अधिक होता है । भारत के उत्तरीय भाग (पञ्जाब-बनारस-लखनउ-दिल्ली आदि) में तबला अत्यधिक प्रसिद्ध है । किन्तु, आश्चर्यजनकरुप से दक्षिण भारत में यह वाद्य बिलकुल नदारद रहा है । इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि तबला कोई बहुत प्राचीन वाद्य नहीं है ।

कुछ और तथ्यों से ज्ञात होता है कि तबला का आविष्कार, १८वी शताब्दी में हुआ और तबला वादकों में दिल्ली के उस्ताद उद्दार खाँ का नाम सबसे उल्लेखनीय है; जिन्होंने तबला को नई पहचान दी ।

ऐतिहासिक अन्वेषण करने पर कुछ ऐसे प्रमाण मिलते हैं जो उपर्युक्त सर्व दलीलों को खोखली सिद्ध करते हैं । महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध

पर्यटक स्थल लोनावला के समीप करली गाँव में भज की गुफाएँ हैं । ईसाह से २०० वर्ष पूर्व की इन गुफाओं में एक महिला को, एक नर्तकी के साथ तबला बजाते हुए देखा जा सकता है ।

पूर्व में तबला केवल कव्वाली, ग़ज़ल की महफिलों में अथवा कत्थक नृत्य में बजता था । लेकिन कुछ दशकों से तबला उच्चस्तरीय तालवाद्य के रुप में विश्वभर के सङ्गीत समारोहों की शोभा बढ़ा रहा है ।

तालवाद्य की विशेषताएँ

१. काल - एक आवर्त्तन पूरा होने में जो समय लगता है, जो मात्रा-ताली-खाली में विभाजित है ।

२. मार्ग - ठेका बजाने की पद्धति ।

३. क्रिया - ठेका की प्रस्तुति (पेशकश) ।

४. अङ्ग - ठेका का स्वरुप (बोल) ।

५. गृह - जिस स्थान से ठेका का आरम्भ होता है, वह गृह अथवा सम । सम को अलग-अलग अन्दाज़ में दिखा कर वादक अपना कौशल दिखाता है । जैसे, मात्रा पर (सम), विषम, अतीत, अनाघात ।

६. जाति - चतस्त्र, तिस्त्र, मिश्र, खण्ड इत्यादि ।

७. लय - दोगुन, चौगुन, छगुन, अठगुन, डेढ़ी, आदि ।

८. प्रस्तार - किसी एक चलन वाले बोल को भिन्न - भिन्न प्रकार से अलग - अलग तिहाईयाँ लेकर बजाना ।

९. परण - चक्रदार ।

१०. रेला - शृङ्गार।

पखावज और तबला के भेद

१) पखावज प्राचीनतम घनवाद्य है ।	१) तबला आधुनिक घनवाद्य है ।
२) मृदंग की उत्पत्ति मिट्टी से हुई है ।	२) तबले की उत्पत्ति मृदंग से हुई है ।
३) पखावज, बीचमें से पोला एक ही वाद्य है, जिसकी दोनों और दांया - बायां होता है ।	३) तबले दो होते हैं । एक दांया - दूसरा - बायां।
४) पखावजमें गूंज अधिक होती है ।	४) तबले में इतनी गूंज नहीं होती ।
५) पखावजमें थाप का काम अधिक होता है, उंगलियों का कम ।	५) तबले में उंगलियों का काम ज्यादा होता है और थाप का प्रयोग कम होता है ।
६) पखावज पर गीला आटा लगाया जाता है । जिससे ध्वनिमें गहराई और गूंज आती है ।	६) तबले पर स्याही लगी रहती है ।
७) पखावज का उपयोग मंदिरोमें कीर्तनगान के समय और दक्षिण भारत के संगीत में होता दिखाई देता है ।	७) तबले का उपयोग संगीत के हर कार्यक्रम में दिखाई देता है ।
८) पखावज का महत्त्व भक्तिसंगीत और कीर्तन में ज्यादा रहा है । कीर्तनोंमें प्रभु सन्मुख पखावज ही बजती है ।	८) तबला, संगीत में महत्त्वका अंग बन गया है ।

पाठ : ४ हमारी कीर्तन प्रणाली भाग -२

लेखिका - पूज्यपाद गो. श्री. निकुञ्जलता बेटीजी महोदया

हमारे यहाँ कीर्तन-गानमें रागोंका बडा ही महत्त्व है । सभी पदगान शास्त्रीय पद्धती से नियत रागोंमें गाये जाते हैं । रागों का अपना विशिष्ट स्वरुप है । दिन रात के विविध समयके वातावरण के अनुरुप विभिन्न राग विभिन्न समय पर गाये जाते हैं । मध्यरात्रिसे लेकर दिनके मध्यान्ह तक गाये जानेवाले रागोंका प्रातः सेवा प्रणालीमें, मध्यान्हसे लेकर मध्य रात्रि तक गाये जानेवाले रागों का सायं सेवा प्रणालीमें समावेश किया गया है । श्रीजी की सेवामें प्रातःकाल के संधिप्रकाश राग मंगला समय एवं सायं संधिप्रकाश राग भोग एवं संध्यार्तिमें गाये जाते हैं।

हमारे कीर्तन गान की विशेषता यह है कि जिस प्रकार भोग (सामग्री) और शृंगारमें ऋतु अनुसार परिवर्तन होता रहता है । तदनुसार कीर्तन गान के रागों में भी ऋतुओंके अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं । शीतकालमें गाये जानेवाले राग अधिकतर उष्ण प्रकृतिके होते हैं । जो विशेष रुपमें हेमन्त, शिशिर ऋतुमें ही गाये जाते हैं । जबकि उष्णकाल (ग्रीष्मऋतु) में शीत प्रकृति के राग गाये जाते हैं । वर्षा ऋतुमें वर्षा के अनुरुप राग गाया जाता है ।

शीतकालमें कान्हरा के विविध प्रकार, ग्रीष्ममें सारंग के विविध प्रकार और वर्षामें मल्हार के विविध प्रकार विशिष्ट रुप से गाये जाते हैं । अश्विन मासमें शरद ऋतुके प्रधान राग गाये जाते हैं । वसंत के दिनोंमें वसंत राग एवं तत्काल अनुरुप राग गाया जाता है । उपरोक्त राग उस विशेष ऋतुमें विशेष रुप से गाये जाते हैं ।

हमारे यहाँ अष्टयाम सेवामें प्रभु के सुखका कितना खयाल रखा गया है कि गर्मीकी ऋतुमें प्रभुको सभी प्रकार से सीतोपचार किया जाता है, फिर भी स्नानयात्रा के दिन जब श्रीप्रभुको अगले दिन के भरे हुए सुगन्धित शीतल जल से स्नान कराया जाता है, तब श्रीको अति शीत न लगे इसलिये शीतकालीन उष्णराग तोडीमें पदगान होता है ।

सम्प्रदायकी ऋतु अनुसार सेवा प्रणालीकी एक और यह भी विशिष्टता है कि प्रत्येक ऋतुके आरंभके पूर्व कुछ दिन ऋतु आगमन माना जाता है और दो ऋतुओंके बीचका समय ऋतु संधिकालका है । इस ऋतु संधिकालमें ऋतु आगमनके विशिष्ट पद एवं राग गाये जाते हैं । वसंत पंचमी के चार दिन पहेले (माघ शुक्ल १ से ४) शीत-वसंतकी संधिकालमें वसंत आगमन के रुपमें वसंत-बहार के पद गाये जाते हैं । होरीडोल के दूसरे दिन से चैत्र शुक्ल १५ तक वसंत ऋतु होते हुए भी ग्रीष्म ऋतु आगमन यानि कि वसंत-ग्रीष्मका संगम माना जाता है । इस समय प्रायः शीतोष्ण प्रकृति के नूर-सारंग, मधुमाद-सारंग, बिलावलके कुछ प्रकार एवं नट, गौरी, केदार आदि राग गाये जाते हैं ।

ज्येष्ठ शुक्ल पूनमके बाद वर्षा ऋतुका आरंभ माना जाता है । अतः स्नान यात्रा से रथयात्रा तक ग्रीष्मवर्षाके संधिकालमें सूहा, सुघराई, सोरठ इत्यादि रागमें पदगान होता है ।

प्रभु सेवामें शीतकालकी मर्यादा देवप्रबोधनीसे वसंत तक और उष्णकालकी मर्यादा अक्षयतृतीया से रथयात्रा तक मानी गई है । रथयात्रा से वर्षाऋतु का प्रारंभ माना गया है ।

हमारे यहाँ श्री की दैनिक (नित्य) सेवामें सुबह जगाने से लेकर सायं पोढाने तक जो कीर्तन गान होता है उसमें दिनके एवं ऋतुके समयानुसार परिवर्तन किस प्रकार होता है और नियत समयमें नियत रागमें पदगान किस प्रकार होता है वह देखेंगे ।

शीतकाल

शीतकालमें पदगान निम्न रागोंमें होता है ।

भैरव, रामकली, ललित, मालकौंस, परज, जेतश्री, सोहनी, धनाश्री, आशावरी, टोडी, पूर्वी, नट, गौरी, नायकी, कान्हरा, कल्याण, बिहाग इत्यादि ।

इनमें से ललित, मालकौंस, परज, जेतश्री, सोहनी, धनाश्री, आशावरी, तोडी, नायकी - यह राग केवल शीतकालमें ही गाये जाते हैं ।

मागसर कृ. १० यानि श्रीगुसांईजी के उत्सवके दूसरे दिनसे उष्णकालीन राग सारंग का उत्सवके सिवा गान बंध हो जाता है । अन्य उष्णकालीन राग भी नहीं गाये जाते ।

शीतकालमें जगानेके, कलेउके एवं मंगलादर्शनके पद भैरव, रामकली एवं मंगला, शृंगारमें खंडीताके पद ललित एवं मालकौंस रागमें गाये जाते हैं ।

भोजन के पद एवं राजभोग सन्मुख हिलग, पनघट उसी दिनके शृंगारकी भावनाके पद राग धनाश्री, आशावरी, टोडीमें गाये जाते हैं । सायं भोग दर्शनमें नट, संध्यार्तिमे पूर्वी एवं गौरी रागमें आवनी एवं शृंगार भावानुसार पद गाये जाते हैं । ब्यारु (शयनभोग-अर्धसमय) के पद कान्हरा, ईमनमें, शयन दर्शनमें सन्मुख कान्हरा, अडाना, नायकी, बिहागमें, मानके पद कान्हरा, पोढने के पद बिहाग रागमें गाये जाते हैं ।

वसन्त

माघ शु . १ से माघ शु. ४ तक वसंत आगमनके वसंत बहार के पद मालकौंस रागमें गाये जाते हैं । माघ शु. ५ - वसंत पंचमी के दिनसे माघ शु. १५ (होरी-डंडा) तक सभी समयमें वसंतरागमें पदगान होता है । खेल दर्शनमें (राग वसंत की आलापचारीके बाद) श्रीगुसांईजी रचित अष्टपदी ''हरिरिह व्रजयुवती शतसंगे'' कुंज एकादशी तक गाई जाती है । माघ शु. १५ होरीडंडा रोपण (सुबह या सायं) से धमार शुरु होती है । राजभोग दर्शनमें बिलावलकी धमार एवं तोडी, धनाश्री, आशावरी इत्यादि राग एवं सायं शयनमें कल्याण एवं कान्हरामें धमार गाई जाती है । श्रीनाथजी के पाटोत्सव (गुर्जर माघ कृ. ७) से हर राग मुक्त हो जाते हैं । राजभोग दर्शनमें सारंग रागकी धमार शुरु होती है । इन दिनों काफी रागभी विशेष गाया जाता है । कुंज एकादशी से धमार बंध होती है और डोल के पद डोल तक गाये जाते हैं ।

उष्णकाल

उष्णकालमें गाये जानेवाले राग -

बिभास, देवगंधार, रामकली, बिलावल और उसके प्रकार, सारंग और उसके प्रकार (सामंत सारंग, नूरसारंग, गौड सारंग, मधुमाद सारंग, शुद्ध सारंग, वृन्दावनी सारंग इत्यादि) ।

इन रागोमेंसे बिभास, सारंग और उसके प्रकार, सोरठ, हमीर, केदार - ये राग विशेष रुपमें उष्णकालमें गाये जाते हैं ।

जगायवेके, कलेउके एवं मंगला दर्शनके पद राग भैरव, बिभास एवं रामकलीमें गाये जाते हैं । मंगला दर्शन एवं शृंगार में भैरव, बिलावल, बिभास, रामकलीमें खंडिता के पद गाये जाते हैं ।

द्वितीया पाट (फा.कृ.२) से स्नानयात्रा तक शृंगारमें बिलावल रागमें पदगान होता है । स्नानयात्रासे ठकुरानी तीजतक बिलावल राग गाया नहीं जाता है । स्नान यात्रा से रथयात्रा तक शृंगार, ग्वाल, पलना इत्यादिमें सुवा (सूहा) रागमें पद गाये जाते हैं । राजभोग दर्शनमें पनघट एवं कुंजभावके एवं उस दिन के शृंगार भाव के एवं फुलमंडली के पद सामंत सारंग, सारंग के विविध प्रकार में गाये जाते हैं । इन दिनों रागमाला एवं सुघराई राग भी विशेषमें गाया जाता है । अक्षयतृतीयासे रथयात्रा तक खसखाना, चन्दन इत्यादि के पद उपरोक्त रागमें ही गाये जाते हैं ।

भोग दर्शन - अक्षयतृतीयासे स्नानयात्रा तक सारंग रागमें, संध्यार्तिमें हमीर इत्यादि रागमें पदगान होता है ।

स्नानयात्रा से रथयात्रा तक भोग-संध्यार्तिमें सोरठ रागमें पदगान होता है । शयनमें कुंजभावके पद द्वितीया पाट से गाये जाते हैं । अक्षयतृतीया से स्नानयात्रा तक चंदनके पद, कुल्हे के शृंगार हो तब कुल्हेके शृंगार के पद और बधाई हो तब बधाई गाई जाती है ।

वर्षाऋतु

रथयात्रासे वर्षा ऋतु शुरु होती है । उस दिन से मल्हार राग शुरु होता है । ठकुरानी तीजतक सभी समय के सभी पदगान मल्हार रागमें ही होते हैं । मल्हार रागके विविध प्रकार गाये जाते हैं । ठकुरानी तीजसे सभी राग गाये जाते हैं । हिंडोलाके दिनोमें सायं सभी राग गाये जाते हैं । श्रावण शु. ११ से विशेषकर मल्हार राग बंध होता है । लेकिन हिंडोरा झूलते समय गाया जाता है ।

शरद ऋतुमें मालव इत्यादि राग भी गाया जाता है । सभी ऋतुओमें तत् तत् ऋतुके विशेष राग की आलापचारी प्रथम गाई जाती है । बादमें उस रागका पदगान होता है । इतना याद रहे कि बधाईके पदोमें रागोंका बन्धन नहीं है । यहाँ जो रागोंका क्रम दिया गया है वो सामान्य रुपसे सर्वत्र प्रचलित है । इसके अतिरिक्त जिसके घरकी जैसी रीत प्रणाली उसके अनुसार तत् तत् समयमें तत् तत् राग, समय एवं ऋतु अनुसार पद गाये जाते हैं ।

इस तरह आचार्यजी महाप्रभुजी एवं प्रभुचरण श्रीगुसांईजीने अष्टयाम सेवामें प्रभुके सुख एवं प्रसन्नता का ध्यान रखते हुए समय समयकी लीलाओं के पदगान समयानुसार एवं ऋतु अनुसार विभिन्न रागोंमें कितनी सुन्दरतया सुनियोजीत किये हैं । यही हमारे कीर्तन गान की विशेषता है ।

पाठ ५ - राग विभाग

५.१ राग देवगंधार

“रे - ध कोमल सुर करें, चढ़ते रि-ध कौ टार
ध-रे वादी संवादी सों, राग देवगंधार।।”

अतिप्राचीन प्रचलित रागोंमें से एक - राग देवगंधार है। प्रचारमें राग देवगंधार आसावरी थाट का है किन्तु पुष्टिभक्ति कीर्तन प्रणालीमें इसे भैरव थाटका राग मानते हैं।

राग परिचय : इस रागमें रे - ध स्वर, एवं अवरोहमें नि कोमल लगते हैं, शेष सभी स्वर शुद्ध हैं। इस रागमें कुछ गुणीजन दोनों गंधार और दोनों ऋषभ का प्रयोग करते हैं ।

थाट - भैरव
वादी - धैवत
संवादी - ऋषभ
जाति - संपूर्ण

गायन समय - प्रातःकाल। पुष्टिमार्गमें इस रागमें विशेषतः बधाई के पद गाये जाते हैं। सम्प्रदायकी प्रातःकालीन सेवा प्रणालीमें यह राग श्रृंगार दर्शन तक गाया जाता है। पुष्टिसंप्रदायमें जन्माष्टमी के दिन प्रातः पंचामृत के समय तथा रात्री को जन्म समय राग देवगंधार में बधाई गानेकी प्रणाली है।

आरोह : सा रे ग म प ध नी रें सां
अवरोह : सां नी ध प, धनीधपम, गरे, सा
पकड़ : रें सां, धम, पधनीधपम, गरे, सा

स्वर विस्तार :

१) सा, गमप, ध॒ प, मगरे॒ सा ।

२) सा, रे॒मप, म प, नी॒ ध॒ प, ध॒म प,
गरे॒, ग म, ग म प ध॒ म प, ग॒ रे॒, सा।

३) म प ध॒ सां, रें॒ सां, नी॒ध॒ प, ग म ध॒ प, गमरे॒सा।

४) सां रें॒ गं रें॒ सां, नीसांनी ध॒प , ग म प ध॒, नी॒ ध॒ प,
ग म ग रे॒ सा ।

कीर्तन नं. १

श्री जन्माष्टमीकी बधाई : राग देवगंधार : ताल - आडा - चौताल : मात्रा - १४

मंगल रूप निधान सांवरो मंगल रूप निधान।।
जा दिनतें हरि गोकुल प्रकटे, दिन दिन होत कल्यान ।।१।।
बैठी रहो श्यामगुन सुमिरो, रैन दिना सब याम।।
श्रीभट के प्रभु नैनभर देखों, कमल नयन घनश्याम ।।२।।

मुखड़ा

X	२		३		४		X	२		३		४	
रें॒	सां	सां	ध॒	म	प	ध॒रें॒	सां	ध॒	प	ग	म	प	प
मं	ग	ल	रू	-	प	नि-	धा	-	न	सां	व	रो	-
ध॒	प	म	ग	रे॒	ग	म	ग	रे॒	सा	ग	म	प	प
मं	ग	ल	रू	-	प	नि	धा	-	न	सां	व	रो	-

अन्तरा

X	२		३		४		X	२		३		४	
धम	प	ध	सां	नी	रें	सां	रें	रें	रें	ग	रें	सां	सां
जा-	दि	न	ते	-	ह	रि	गो	कु	ल	प्र	क	टे	-
धसां	सां	नी	ध	म	प	धरें	सां	ध	प	ग	म	प	प
दिन	दि	न	हो	-	त	क-	ल्या	-	न	सां	व	रो	-
ध	ध	प	म	रे	ग	म	रे	रे	सा	ग	म	प	प
मं	ग	ल	रू	-	प	नि	धा	-	न	सां	व	रो	-

स्थायी

सा	ग	म	प	प	प	म	ध	ध	ध	नी	ध	प	प
बै	ठी	र	हो	-	-	-	श्याम	गु	न	सु	मि	रो	-
पध	प	म	ग	रे	ग	म	ग	रे	सा	ग	म	प	प
रै-	न	दि	ना	-	स	ब	या	-	म	सां	व	रो	-

अंतरा

X	२		३		४		X	२		३		४	
धम	प	ध	सां	नी	रें	सां	रें	रें	रें	ग	रें	सां	सां
श्री-	भ	ट	के	-	प्र	भु	नैन	भ	र	दे	-	खो	-
धसां	सां	नी	ध	म	प	धरें	सां	ध	प	ग	म	प	प
कम	ल	न	य	न	घ	न-	श्या	-	म	सां	व	रो	-
ध	ध	प	म	रे	ग	म	रे	रे	सा	ग	म	प	प
मं	ग	ल	रू	-	प	नि	धा	-	न	सां	व	रो	-

इसी स्वरलीपि पर आप निम्नलिखित पद गा सकते हैं।

कीर्तन नं. २

धनतेरसकौ पद :राग - देवगंधार ताल - आडा चौताल : मात्रा - १४

आज माई धन धोवत नंदरानी ।।
कार्तिक वदि तेरस दिन उत्तम, गावत मधुरी बानी ।।१।।
नवसत साज सिंगार अनुपम, करत आप मन मानी ।।
कुंभनदास लाल गिरिधरको, देखत हियो सिरानी ।।२।।

कीर्तन नं. ३

श्री जन्माष्टमीकी बधाई :राग - देवगंधार ताल - त्रिताल : मात्रा - १६

नैनभर देखो नंदकुमार ।।
जसुमति कूख चन्द्रमा प्रकट्यो, या व्रजको उजियार।।१।।
बन जिन जाउ आज सब कोउ, गो सुत गाय गुवार।।
अपने अपने भेष सबे मिलि, लावो विविध सिंगार ।।२।।
हरद दूब अक्षत दधि कुमकुम, मंडित करो दुवार।।
पूरौ चौक विविध मुक्ताफल, गावो मंगलचार।।३।।
चहुं वेदधुनि करत महामुनी, होत नक्षत्र विचार।।
उदय पुन्यको पुंज सांवरो, सकल सिद्धी दातार ।।४।।
गोकुल वधु निरखि आनंदित, सुंदरताको सार।।
दास चतुर्भुज प्रभु सब सुखनिधि, गिरिधर प्रान आधार।।५।।

मुखड़ा

X				२				०				३			
रें॒	रें॒	सां	नी॒	ध॒	म	प	ध॒रें॒	सां	नी॒	ध॒	प	ग	म	प	प
दे	-	खो	-	नं	-	द	कु-	मा	-	-	र	नै	न	भ	र
ध॒	ध॒	प	म	ग	रे॒	ग	म	ग	रे॒	सा	सा	ग	म	प	प
दे	-	खो	-	नं	-	द	कु	मा	-	-	र	नै	न	भ	र

अंतरा

X				२				०				३			
ध॒	म	प	ध॒	सां	नी	रें॒	सां	रें॒	रें॒	रें॒	रें॒	ग	रें॒	सां	सां
ज	सु	म	ति	कू	-	ख	चं	-	द्र	मा	-	प्र	ग	ट्यो	-
ध॒	सां	नी॒	ध॒	प	म	प	ध॒	सां	नी॒	ध॒	प	ग	म	प	प
या	-	ब्र	ज	को	-	उ	जि	या	-	-	र	नै	न	भ	र

स्थायी

X				२				०				३			
म	म	ग	म	प	प	प	म	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	नी॒	ध॒	प	प
ब	न	जि	न	जा	-	उ	आ	-	ज	स	ब	को	-	ऊ	-
प	ध॒	प	म	ग	रे॒	ग	म	ग	रे॒	सा	सा	ग	म	प	प
गो	-	सु	त	गा	-	य	गु	वा	-	-	र	-	-	-	-

अन्तरा

X				२				०				३			
ध॒	म	प	ध॒	सां	नी	रें॒	सां	रें॒	रें॒	रें॒	रें॒	ग	रें॒	सां	सां
अ	प	ने	-	अ	प	ने	-	भे	-	ष	स	बें	-	मि	लि
ध॒	सां	नी॒	ध॒	प	म	प	ध॒	सां	नी॒	ध॒	प	ग	म	प	प
ला	-	वो	-	वि	वि	ध	सिं	गा	-	-	र	नै	न	भ	र

स्थायी

X				२				०				३			
म	म	ग	म	प	प	प	म	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	नी॒	ध॒	प	प
ह	र	द	दू	-	ब	अ	-	क्ष	त	द	धि	कु	म	कु	म
प	ध॒	प	म	ग	रे॒	ग	म	ग	रे॒	सा	सा	ग	म	प	प
मं	-	डि	त	क	रो	-	दु	वा	-	-	र	नै	न	भ	र

अन्तरा

X				२				०				३			
ध॒	म	प	ध॒	सां	नी	रें॒	सां	रें॒	रें॒	रें॒	रें॒	गं	रें॒	सां	सां
पू	-	रौ	-	चौ	-	क	वि	वि	ध	मु	-	क्ता	-	फ	ल
ध॒	सां	नी॒	ध॒	प	म	प	ध॒	सां	नी॒	ध॒	प	ग	म	प	प
गा	-	वो	-	मं	-	ग	ल	चा	-	-	र	नै	न	भ	र

स्थायी

X				२				०				३			
म	म	ग	म	प	प	प	म	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	नी॒	ध॒	प	प
च	हुं	-	वे	-	द	धु	नि	क	र	त	म	हा	-	मु	नी
प	ध॒	प	म	ग	रे॒	ग	म	ग	रे॒	सा	सा	ग	म	प	प
हो	-	त	न	क्ष	-	त्र	वि	चा	-	-	र	-	-	-	-

अन्तरा

X				२				०				३			
ध॒	म	प	ध॒	सां	नी	रें॒	सां	रें॒	रें॒	रें॒	रें॒	गं	रें॒	सां	सां
उ	द	य	पु	-	न्य	को	-	पुं	-	ज	सां	-	व	रो	-
ध॒	सां	नी॒	ध॒	प	म	प	ध॒	सां	नी॒	ध॒	प	ग	म	प	प
स	क	ल	सि	-	द्धि	दा	-	ता	-	-	र	नै	न	भ	र

स्थायी

X				२				०				३			
म	म	ग	म	प	प	प	म	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	नी॒	ध॒	प	प
गो	-	कु	ल	व	धू	-	नि	र	खि	आ	-	नं	-	दि	त
प	ध॒	प	म	ग	रे॒	ग	म	ग	रे॒	सा	सा	ग	म	प	प
सु	-	न्द	र	ता	-	को	-	सा	-	-	र	-	-	-	-

अन्तरा

X				२				०				३			
ध॒	म	प	ध॒	सां	नी	रें॒	सां	रें॒	रें॒	रें॒	रें॒	ग	रें॒	सां	सां
दा	-	स	च	तु	र	भु	ज	प्र	भु	स	ब	सु	ख	नि	धि
ध॒	सां	नी॒	ध॒	प	म	प	ध॒	सां	नी॒	ध॒	प	ग	म	प	प
गि	रि	ध	र	प्रा	-	न	आ	धा	-	-	र	नै	न	भ	र

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद गा सकते है।

कीर्तन नं. ४

श्री महाप्रभुजी की बधाई : राग - देवगंधार : ताल - त्रिताल : मात्रा - १६

बरनों श्री वल्लभ अवतार ।।
गोकुल पति प्रकटे फिर गोकुल, सकल विश्व आधार ।।१।।
सेवा भजन बताय निजजनकों, मेट्यो यम व्योहार ।।
कुंभनदास प्रभु गिरिधर आये, दैवी उतरे पार।।२।।

कीर्तन नं. ५

डोल कौ पद : राग - देवगंधार:ताल - धमार : मात्रा - १४

मनमोहन अद्‌भुत डोल बनी।।
तुम झुलों हों हरखि झुलाऊँ, वृन्दावन चंदघनी।।१।।
परम विचित्र रच्यो विश्वकर्मा, हीरालाल मनी।।
'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरनलाल छबि, कापे जात गनी।।२।।

स्थायी

x					२		०			३			
सां	-	-	सां	-	सां	-	नी	ध	-	प	-	ध	रें
अ	-	-	द्	-	भु	त	डो	-	-	ल	-	-	ब
सां	-	-	नी	ध	प	-	म	-	-	प	-	प	-
नी	-	-	म	-	न	-	मो	-	-	ह	-	न	-
नी	ध	-	ध	-	प	-	ध	प	म	ग	-	प	म
अ	-	-	द्	-	भु	त	डो	-	-	ल	-	-	ब
ग	-	-	म	-	ग	-	रे	-	-	सा	-	-	-
नी	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-

अन्तरा

x					२		०			३			
म	म	-	म	-	प	-	ध	-	-	सां	-	-	-
तु	म	-	झू	-	-	-	लों	-	-	हों	-	-	-
सां	रें	-	रें	-	रें	-	गं	रें	-	सां	-	सां	-
ह	र	-	खि	-	-	झु	ला	-	-	ऊँ	-	-	-
सां	-	-	सां	-	सां	-	नी	ध	-	प	ध	ध	रें
वृं	दा	-	व	-	न	-	चं	-	-	द	-	-	घ
सां	नी	-	ध	-	प	-	म	-	-	प	-	प	-
नी	-	-	म	-	न	-	मो	-	-	ह	-	न	-

स्थायी

x					२		०			३			
मम	म	म	-	प	-	-	ध̲ध̲	ध̲	प	नी̲	ध̲	प	-
पर	म	वि	चि	-	त्र	र	च्यो-	वि	श्व	क	र	मा	-
ध̲	प	म	ग	रे̲	ग	म	ग	रे̲	रे̲	-	-	सां	-
ही	रा	-	ला	-	ल	म	नी	-	-	-	-	-	-

अन्तरा

x					२		०			३			
ध̲	-	-	-	-	-	-	सां	-	-	-	-	-	-
च	-	-	तु	-	र	-	भु	-	ज	प्र	-	भु	-
रें̲	-	-	-	-	-	सां	गं	रें̲	-	गं	रें̲	सां	-
गि	रि	-	ध	र	न	-	ला	-	ल	छ	-	बी	-
गं	रें̲	-	सां	सां	सां	सां	नी̲	-	-	ध̲	ध̲	प	प
का	-	-	पे	-	-	-	जा	-	-	त	-	-	ग
नी̲	ध̲	प	ध̲	-	प	-	म	-	-	प	-	प	-
नी	-	-	म	-	न	-	मो	-	-	ह	-	न	-

कीर्तन नं. ६

श्री राधाष्टमीकी बधाई : राग - देवगंधार : ताल - त्रिताल : मात्रा - १६

प्रगटी नागरी रूप निधान ।।
देखि देखि बूझत जो परस्पर, नहीं त्रिभुवनमें आन।।१।।
उपमा को जे, जेकहियत है, ते जु भये निरमान ।।
कुंभनदास लाल गिरिधर की, जोरी सहज समान ।।२।।

मुखड़ा

X				२				०				३			
रें	रें	सां	नी̲	ध̲	म	प	ध̲रें	सां	नी̲	ध̲	प	ग	म	प	प
ना	ग	री	-	रू	-	प	नि-	धा	-	न	प्र	ग	टी	-	-
ध̲	ध̲	प	म	ग	रे̲	ग	म	ग	रे̲	सा	सा	ग	म	प	प
ना	ग	री	-	रू	-	प	नि	धा	-	-	न	प्र	ग	टी	-

अन्तरा

X				२				०				३			
म	प	ध̲	-	नी̲	-	सां	सां	ध̲	ध̲	सां	रें	सांरें	गं̲	रें	सां
दे	-	खि	दे	-	खि	बू	-	झ	त	जो	प	र-	स्प	-	र
रें	नी̲	ध̲	प	ध̲	म	पध̲	मप	ग̲	रे	सा	रे	ग	-	म	प
न	ही	त्रि	भु	व	न	में-	--	आ	-	-	न	प्र	ग	टी	-

स्थायी

X				२				०				३			
ध̲	म	पध̲	नी̲सां	ध̲	प	पध̲	मप	ग̲	-	रे	म	प	प	प	-
उ	प	मा-	--	को	-	जे-	--	जे	-	क	हि	य	त	है	-
ग̲	ग̲	रे	सा	रे	-	सा	रे	ग	म	प	प	नी̲	ध̲	प	-
ते	जु	भ	ये	नि	र	मा	-	-	-	-	न	प्र	क	टी	-

अन्तरा

X				२				०				३			
म	प	ध̲	-	नी̲	-	सां	सां	ध̲	ध̲	सां	रें	सांरें	गं̲	रें	सां
कुं	-	भ	न	दा	-	-	स	ला	ल	गि	रि	ध-	र	की	-
रें	नी̲	ध̲	प	ध̲	म	पध̲	मप	ग̲	रे	सा	रे	ग	-	म	प
जो	-	री	-	स	ह	ज-	--	स	मा	-	न	प्र	ग	टी	-

५.२ राग मालकौंस

''रि - प वर्जित औड़व मधुर, सब कोमल सुर मान ।
म - स वादी - संवादिसौं, मालकौंस पहचान ।।''

राग मालकौंस गंभीर प्रकृति का राग है। इस रागमें ध्रुपद और ख्याल गायकी अधिकतर पायी जाती है। यह राग भैरवी थाट से उत्पन्न होता है। यह राग औड़व जातिका राग है क्योंकि इस राग के आरोह - अवरोह दोनों में 'ऋषभ' और 'पंचम' स्वर वर्जित है। इस राग का वादी स्वर 'मध्यम' और संवादी स्वर 'षड़ज' है।

राग मालकौंस उष्णप्रकृतिका होनेसे विशेषकर शीतकालमें गाया जाता है। वैसे तो इस रागका गायन समय रात्रीका तीसरा प्रहर है, किन्तु पुष्टिमार्गमें यह राग प्रातःकालीन है। मंगलासे श्रृंगार दर्शन के पहले तक, राग ललित के साथ-साथ मालकौंस राग श्री ठाकुरजीके सन्मुख, श्री गुसांईजी के उत्सव के बाद पौष शुक्ल एकम से शुरु होते हुए वसंत पंचमी के दिन मंगला तक गाया जाता है। कहा जाता है कि जब तानसेन और बैजू - बावराने मालकौंस राग गाया था तब पत्थर भी पिघल गया था। जब पत्थर पिघल सकता है तब निश्चित रूपसे यह राग मनुष्यके उर्मितंत्र पर भारी प्रभाव ला सकता है।

राग मालकौंस की विशेषता :

१) इस रागकी चलन तीनों सप्तकोंमें समान रूपसे होती है ।

२) इस रागमें बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, ध्रुपद, धमार, तराना, मसीतखानी-रज़ाखानी गतें सभी गाई - बजाई जाती हैं । इस रागमें ठुमरी नहीं गाई जाती ।

३) इस रागमें केवल 'नी' शुद्ध कर देने से राग चन्द्रकौंस हो जाता है।

४) इस राग में पंचम स्वर वर्ज्य होने से तानपूरे को गाते समय मध्यम में मिलाना चाहिये ।

५) यह राग गंभीर और शांत प्रकृति का होने के कारण यह राग मींड-प्रधान राग है ।

६) निम्नलिखित स्वर संगतियोंसे इस राग की रोचकता बढ़ती है ।

(i) ध̲̣ नी̲̣ सा म, ग̲ म ग̲ सा,

(ii) म ग̲, म ग̲ सा

(iii) ग̲ म ध̲ नी̲ सां

(iv) सां नी̲ ध̲, नी̲ ध̲ म

७) पुष्टिभक्तिमार्गमें यह राग शीतकालमें पोष शुक्ल १ से बसंत पंचमी के दिन मंगला तक - नित्य मंगलासे श्रृंगार दर्शन के पहले गाया जाता है ।

राग परिचय :-

इस रागमें गांधार, धैवत और निषाद स्वर कोमल; एवं मध्यम स्वर शुद्ध है। रिषभ और पंचम स्वर वर्ज्य है।

थाट - भैरवी

जाति - औड़व

वादी - मध्यम

संवादी - षड़ज

गायन समय - रात्रीका तीसरा प्रहर ।

पुष्टिमार्गमें यह प्रात:कालीन राग है।

आरोह : नी़ सा, ग म, ध नी सां

अवरोह : सां नी ध, म, गम, ग सा

पकड़ : मग, मधनीध, मग, सा

स्वर विस्तार -

१) नी़ सा, ग म ग सा

२) ग म ध, नी ध म, गम, धम, गम, गसा

३) ग म ध नी सां, नी सां गं सां, नी सां नी ध म,
ग म, ध म, ग म, ग सा

कीर्तन नं. ७

खंडिताकौ पद : राग - मालकौंस ताल - त्रिताल : मात्रा - १६

तुमसों बोलवेकी नाहीं।।
घर घर गमन करत सुन्दर पिय, चित नाहीं एक ठांही।।१।।
कहा कहो श्यामलघन तुमसों, समझ देख मन मांही।।
कृष्णदास प्रभु प्यारी के वचन सुन, हृदयमांझ मुसकाहीं ।।२।।

मुखड़ा

x				२				०				३			
सां	सां	ध̲	नी̲	ध̲	ध̲	म	म	ग̲	सा	ग̲	म	ग̲	ऩी̲	सा	सा
तु	म	सों	-	बो	-	-	ल	वे	-	की	-	ना	-	ही	-

अन्तरा

x				२				०				३			
ग̲	म	ध̲	नी̲	सां	नी̲	सां	सां	नी̲	नी̲	गं̲	सां	ध̲	नी̲	ध̲	म
घ	र	घ	र	ग	म	न	क	र	त	सुं	-	द	र	पि	य
सां	सां	गं̲	सां	नी̲	सां	ध̲	नी̲	ध̲	ध̲	म	म	ग̲	म	ध̲	नी̲
चि	त	ना	-	हीं	-	ए	क	ठां	-	-	-	हीं	-	-	-

स्थायी

x				२				०				३			
सा	सा	म	ग̲	म	म	म	म	ग̲	ग̲	म	म	ग̲	म	ग̲	सा
क	हा	-	क	हो	-	श्या	-	म	ल	घ	न	तु	म	सों	-
ग̲	म	ग̲	सा	ऩी̲	सा	ध़̲	ऩी̲	सा	सा	म	ग̲	म	म	म	म
स	म	झ	दे	-	ख	म	न	मा	-	-	-	हीं	-	-	-

अन्तरा

x				२				०				३			
ग̲	म	ध̲	नी̲	सां	नी̲	सां	सां	नी̲	नी̲	गं̲	सां	ध̲	नी̲	ध̲	म
कृ	-	ष्ण	दा	-	स	प्र	भु	प्या	री	के	व	च	न	सु	न
सां	सां	गं̲	सां	नी̲	सां	ध̲	नी̲	ध̲	ध̲	म	म	ग̲	म	ध̲	नी̲
हृ	द	य	मां	-	झ	मु	स	का		-	-	-	हीं	-	-

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद गा सकते हैं।

कीर्तन नं. ८

श्री यमुनाजी कौ पद : राग मालकौंस : ताल - त्रिताल : मात्रा - १६

श्री यमुना यमुना नाम भजो ।।
हरखत करो आराधन इनको, ओरको पंथ तजो ।।१।।
देहें सकल पदारथ तुमकों, इनके नाम रजो।।
व्रजपतिकी अतिही पियारी, ताते सकल सिंगार सजो ।।२।।

कीर्तन नं. ९

श्री जन्माष्टमीकी बधाई : राग मालकौंस :ताल - चौताल : मात्रा - १२

सब मिल आवो गावो बजावो मृदंग,आज हमारे लालजुकी बरसगांठ।।
कनक थार भर भर मुक्ताफल, ले न्योछावर करवावो आवो।।१।।
नव नव पल्लव बंदनमाला, द्वार द्वार बंधावन आवो ।।
आनंदघन प्रभुकौ जन्म सुनतही, लाग्यो सुजस सुहावन आवो ।।२।।

X		०		२		०		३		४	
सां	सां	नी̲	गं̲	सां	सां	ध̲	ध̲	नी̲	ध̲	म	म
स	-	ब	मि	-	ल	आ	-	वो	गा	-	वो
ग̲	ग̲	सा	ग̲	ग̲	म	ग̲	ग̲	म	ग̲	सा	सा
ब	जा	-	वो	-	मृ	दं	-	-	ग	-	-
नी̲̣	नी̲̣	सा	ध̲̣	ध̲̣	नी̲̣	सा	म	ग̲	म	म	म
आ	-	-	ज	-	ह	मा	-	रे	-	-	-
ग̲	ग̲	म	ध̲नी̲	सां	नी̲	ध̲	नी̲	ध̲	म	ग̲	म
ला	-	ल	जु -	-	की	ब	र	स	गां	-	ठ

अंतरा

X		०		२		०		३		४	
ग॒	ग॒	म	नी॒	ध॒	नी॒	सां	सां	नी॒	सां	सां	सां
क	न	-	क	-	था	-	-	-	र	-	-
नी॒	नी॒	नी॒	सां	गं॒	सां	ध॒	ध॒	नी॒	ध॒	ध॒	म
भ	र	भ	र	मु	-	क्ता	-	-	फ	-	ल
सां	सां	सां	गं॒	सां	गं॒	मं	गं॒	सां	सां	सां	सां
ले	-	-	न्यो	-	-	छा	-	-	व	-	र
ग॒	ग॒	म	ध॒	नी॒	सां	ध॒	नी॒	ध॒	म	ग॒	म
क	-	र	वा	-	वो	आ	-	-	वो	-	-

स्थायी

X		०		२		०		३		४	
सा	नी़॒	सा	ध़॒	ध़॒	नी़॒	सा	म	ग॒	म	म	म
न	-	व	न	-	व	प	-	-	ल्ल	-	व
ग॒	ग॒	म	नी॒	ध॒	नी॒	सां	सां	नी॒	सां	सां	सां
बं	-	-	द	-	न	मा	-	-	ला	-	-
नी॒	नी॒	नी॒	गं॒	सां	सां	ध॒	ध॒	नी॒	ध॒	ध॒	म
द्वा	-	-	र	-	-	द्वा	-	-	र	-	बं
ग॒	ग॒	सा	ग॒	म	म	ग॒	ग॒	म	ग॒	सा	सा
धा	-	-	व	-	न	आ	-	-	वो	-	-

अंतरा

x		०		२		०		३		४	
ग	ग	म	नी	ध	नी	सां	सां	नी	सां	सां	सां
आ	-	नं	-	-	द	घ	न	प्र	भु	-	कौ
नी	नी	नी	सां	गं	सां	ध	ध	नी	ध	म	म
ज	-	-	न्म	-	सु	न	-	त	ही	-	-
सां	सां	सां	गं	सां	गं	मं	गं	सां	सां	सां	सां
ला	-	-	ग्यो	-	-	सु	ज	-	स	-	सु
ग	ग	म	ध	नी	सां	ध	नी	ध	म	ग	म
हा	-	-	व	-	न	आ	-	-	वो	-	-

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद गा सकते है।

कीर्तन नं. १०

शीतकाल खंडिताकौ पद : राग - मालकौंस : ताल - चौताल : मात्रा - १२

आवन कह गये अजहू न आये पिय, सब निस बीति मोहे गिनगिन तारे।।
दीपक ज्योत मलिन भई है, किन दुतियन बिरमाये प्यारे ।।१।।
तमचर बोले बगर सब खोले, कमलदल फूले मधुप गुँजारे।।
धोंधीके प्रभु तुम बहुनायक, आये निपट सवारे द्वारे ।।२।।

कीर्तन नं. ११

शीतकाल खंडिताकौ पद : राग - मालकौस :ताल - झपताल : मात्रा - १०

जरीके जरायवेकों तातेतन तायवेकूं
कटेलोन लायवेकूं द्वार आय ठरेहो ।।
रैन बसे और ठौर अब आये मेरी ओर
वाहीपें पधारो कान्ह जाके वस परेहो ।।१।।
बिनगुणमाल सोहे अधर अंजनरेख
मेरीसों कान्ह अब जाओ तुम भरेहो।।
चारयाम वीते मोहि घडी भर कल्प न्याई
सूरश्याम हियेहूते नेकहु न टरेहो।।२।।

मुखड़ा

x		२			०		३		
सां	सां	नी̲	गं̲	सां	ध̲	नी̲	ध̲	म	म
ज	री	के	-	ज	रा	य	वे	-	कों
ग̲	सा	ग̲	म	म	ग̲	म	ग̲	सा	सा
ता	ते	त	-	न	ता	य	वे	-	कूं
नी़̲	सा	ध़̲	ध़̲	नी़̲	सा	म	म	म	म
क	टे	लो	-	न	ला	य	वे	-	कूं
ग̲	म	ध̲नी̲	सां	नी̲	ध̲	नी̲	ध̲	म	म
द्वा	र	आ-	-	ये	ठ	रे	हो	-	-

अन्तरा

x		२			०		३		
ग॒	म	नी॒	ध॒	नी॒	सां	नी॒	सां	सां	सां
रै	न	ब	-	से	औ	र	ठौ	-	र
नी॒	नी॒	नी॒	गं॒	सां	ध॒	नी॒	ध॒	म	म
अ	ब	आ	-	ये	मे	री	ओ	-	र
सां	सां	गं॒	सां	गं॒	मं	गं॒	सां	सां	सां
वा	ही	पें	-	प	धा	रो	का	-	न्ह
ग॒	म	ध॒नी॒	सां	नी॒	ध॒	म	म	म	म
जा	के	ब-	-	स	प	रे	हो	-	-

स्थायी

x		२			०		३		
नी॒̣	सा	ध॒̣	ध॒̣	नी॒̣	सा	म	म	म	म
बि	न	गु	-	ण	मा	ल	सो	-	हे
ग॒	म	नी॒	ध॒	नी॒	सां	नी॒	सां	सां	सां
अ	ध	र	-	अं	ज	न	रे	-	ख
नी॒	नी॒	नी॒	गं॒	सां	ध॒	नी॒	ध॒	म	म
मे	री	सों	-	-	का	न्ह	अ	-	ब
ग॒	सा	ग॒	म	म	ग॒	म	ग॒	सा	सा
जा	ओ	तु	-	म	भ	रे	हो	-	-

अन्तरा

X		२			०		३		
ग॒	म	नी॒	ध॒	नी॒	सां	नी॒	सां	सां	सां
चा	र	या	-	म	वी	ते	मो	-	हि
नी॒	नी॒	नी॒	गं॒	सां	ध॒	नी॒	ध॒	म	म
घ	डी	भ	-	र	क	ल्प	न्या	-	ई
सां	सां	गं॒	सां	गं॒	मं	गं॒	सां	सां	सां
सू	र	श्या	-	म	ही	ये	हू	-	ते
ग॒	म	ध॒नी॒	सां	नी॒	ध॒	नी	ध	म	म
ने	क	हू-	-	न	ट	रे	हो	-	-

५.३ राग धनाश्री

“कोमल ग-नि लगायकर, आरोहन रि - ध त्याग।
प-स वादी-संवादीतें, कहते धनाश्री राग ।।”

राग धनाश्री प्राचीन राग है। यह राग काफी थाटोत्पन्न है। इस राग के आरोहमें ‘ऋषभ’ और ‘धैवत’ स्वर वर्ज्य होने से इस रागकी जाती औड़व-सम्पूर्ण है। धनाश्री रागका वादी स्वर ‘पंचम’ और संवादी स्वर ‘षड़ज’ है। इस रागमें गांधार और निषाद, दोनों स्वर कोमल लगाये जाते हैं। इस राग का गायन समय दिन का तीसरा प्रहर है। कुछ विद्वान इस रागको भैरवी थाट का मानते हुए प्रात:कालीन राग मानते है। कुछ विद्वान इस रागको आसावरी थाटोत्पन्नभी मानते हैं।

पुष्टिमार्गमें यह राग शीतकालमें गाया जाता है। माघ शुक्ल पूर्णिमासे लेकर श्रीनाथजीके पाटोत्सव तक राग बिलावल और राग जेतश्री के साथ-साथ राग धनाश्री भी गाया जाता है। श्रीसूरदासजीका अति प्रसिद्ध पद, ''अब मैं बहुत नाच्यो गोपाल'' - जो उन्होंने श्री महाप्रभुजीकी आज्ञा से श्रीजी सन्मुख गाया था वह इसी रागमें था। भक्तकवि नरसिंह महेता के पद भी इस रागमें पाये जाते हैं।

यह राग मांगलिक होनेसे इसमें बहुतसी बधाईयाँ गायी जाती हैं।

राग परिचय :

इस रागमें गांधार और धैवत स्वर कोमल हैं और दोनों निषाद लगते हैं। शेष स्वर शुद्ध हैं। आरोहमें 'ऋषभ' और 'धैवत' स्वर वर्ज्य है।

थाट - काफी
जाति - औड़व - सम्पूर्ण
वादी - पंचम
संवादी - षड़ज
गायन समय - दिनका तीसरा प्रहर
आरोह - ऩी सा ग, म प, नी सां
अवरोह - सां नी धप, मपगम, नीधप, मगरेसा
पकड़– गमपनीसां, नीधप, मगरेसा

स्वर विस्तार -

१) ऩी सा ग म प, ग म ग रे सा
२) मपगम, पनीसां, पनीसां, गंरेंसां
३) नीसां नी धप, मपगम, नीधप
४) मपगम, गरेसा

कीर्तन नं. १२

श्री जन्माष्टमीकी बधाई (आशिषका पद) : राग - धनाश्री : ताल - धमार (द्रुत) : मात्रा - १४

रानी तेरो चिर जीयो गोपाल।।
बेगि बडो बढ़ि होय बिरध लट, महरि मनोहर बाल।।१।।
उपजि परयो यह कूंखि भाग्यबल, समुद्र सीप जैसे लाल।।
सब गोकुल के प्राणजीवन धन, बैरिनके उर साल।।२।।
सूर कितौ जिय सुख पावत हैं, देखत श्याम तमाल।।
रज आरज लागौ मेरी अँखियन रोग दोष जंजाल।।३।।

मुखड़ा

X					२		०			३			
नीनी	नी	नी	सां	-	सां	रें	नीसां	ध	प	प	ध	नी	सां
चिर	जी	-	यो	-	गो	-	पा-	-	ल	रा	नी	ते	रो
सांसां	सां	सां	नी	सां	ध	प	मग	म	प	ग	ग	रे	सा
चिर	जी	-	यो	-	गो	-	पा-	-	-	-	-	-	ल

अंतरा

X					२		०			३			
मप	ग	म	प	नी	सां	सां	पनी	सां	गं	रें	रें	सां	सां
बे-	गि	ब	डो	-	ब	ढि	हो-	य	बि	र	ध	ल	ट
गंगं	गं	गं	रें	गं	सां	रें	नीसां	ध	प	प	ध	नी	सां
मह	रि	म	नो	-	ह	र	बा-	-	ल	रा	नी	ते	रो

स्थायी

X	२	०	३
ऩीसा ग म प प	प प	मग म प	ग ग रे सा
उप जि प रयो -	य ह	कू- ख भा	- ग्य ब ल
पप प प म प	ग म	नीध प प	ग ग रे सा
समु द्र सी - प	जै से	ला- - ल	- - - -

अंतरा

X	२	०	३
मप ग म प नी	सां सां	पनी सां गं	रें रें सां सां
सब गो - कु ल	के -	प्रा- ण जी	व न ध न
गंगं गं गं रें गं	सां रें	नीसां ध प	प ध नी सां
बै- रि न के -	उ र	सा- - ल	रा नी ते रो

स्थायी

X	२	०	३
ऩीसा ग म प प	प प	मग म प	ग ग रे सा
सू- र कि तौ -	जि य	सुख पा -	व त है -
पप प प म प	ग म	नीध प प	ग ग रे सा
निर ख त श्या -	म त	मा- - -	- - - ल

अंतरा

X	२	०	३
मप ग म प नी	सां सां	पनी सां गं	रें रें सां सां
रज आ - र ज	ला -	गो- मे री	अँ खि य न
गंगं गं गं रें गं	सां रें	नीसां ध प	प ध नी सां
रो- ग दो - ष	जं -	जा- - ल	रा नी ते रो

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद गा सकते है।

कीर्तन नं. १३

श्री जन्माष्टमीकी बधाई (पंचामृत और अभ्यंग) :

राग - धनाश्री : ताल - धमार (द्रुत) : मात्रा - १४

रानीजू आपुन मंगल गावें।।
आज लालको जन्म द्योसहै, मोतिन चौक पुरावैं ।।१।।
गाँमगाँमतें जाति आपनी, गोपिन न्योति बुलावें।।
अन्वाचार्य मुनि गर्ग परासर, तिनपै वेद पढ़ावें।।२।।
हरदी तेल सुगंध सुवासित, लालें उबटि न्हवावें।।
हरि तन ऊपर वारि न्यौछावरि, जन परमानँद पावै।।३।।

कीर्तन नं. १४

भोजन बुलायवेको पद : राग - धनाश्री : ताल - त्रिताल : मात्रा - १६

नेंक गोपाल ही दीजो टेर ।।
आज सवांरे कियो न कलेऊ, सुरत भई बडी बेर।।१।।
ढूंढत फिरत यशोदा मैया, कहां कहां हो डोलत।।
यह कहियो घर जाऊ सांवरे, बाबानंद तोहि बोलत।।२।।
इतनी बात सुनत ही आये, प्रीति जु मनमें आनी।।
परमानंदस्वामीकी जननी, देख वदन मुसकानी।।३।।

मुखड़ा

X	२	०	३
म प ग॒ म	नी॒ ध प प	म ग॒ म प	ग॒ ग॒ रे सा
ने - क गो	पा - ल ही	दी - जो -	टे - - र

अंतरा

X	२	०	३
म प ग॒ म	प नी सां सां	प नी सां गं॒	रें रें सां सां
आ - ज स	वां - रे -	कि यो न क	ले - ऊ -
प ध॒ गं॒ गं॒	रें सां नी सां	ध॒ ध॒ प प	- - - -
सु र त भ	ई - ब डी	बे - - र	- - - -

स्थायी

X	२	०	३
नी़ सा ग॒ म	प प प प	म ग॒ म प	ग॒ ग॒ रे सा
ढूं - ढ त	फि र त य	शो - दा -	मै - या -
प प प प	म प ग॒ म	नी॒ ध प प	- - - -
क हां - क	हां - हो -	डो - ल त	- - - -

अंतरा

X	२	०	३
म प ग॒ म	प नी सां सां	प नी सां गं॒	रें रें सां सां
य ह क हि	यों - घ र	जा - ऊ सां	- व रे -
प ध॒ गं॒ गं॒	रें सां नी सां	ध॒ ध॒ प प	- - - -
बा - बा -	नं द तो हि	बो - ल त	- - - -

स्थायी

X	२	०	३
नी़ सा ग॒ म	प प प प	म ग॒ म प	ग॒ ग॒ रे सा
इ त नी -	बा - त सु	न त ही -	आ - ये -
प प प प	म प ग॒ म	नी॒ ध प प	- - - -
प्री - त जु	म न में -	जा - नी -	- - - -

अंतरा

X	२	०	३
म प ग॒ म	प नी सां सां	प नी सां गं॒	रें रें सां सां
प र मा -	नं - द स्वा	मी - की -	ज न नी -
प ध॒ गं॒ गं॒	रें सां नी सां	ध॒ ध॒ प प	- - - -
दे - ख व	द न मु स	का - नी -	- - - -

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद भी गा सकते हैं।

कीर्तन नं. १५

हिलगकौ पद : राग धनाश्री : ताल - त्रिताल : मात्रा - १६

मेरो माई माधोसों मन मान्यो ।।
अपनो तन और वाढोटाको, एकमेककरसान्यो ।।१।।
लोकवेदकुलकानत्यजी मैं, न्योतिआपने आन्यो ।।
एक नंदनंदनके कारण, बैरसबनसौ ठान्यौ ।।
अब क्यों भिन्न होयमेरी सजनी, मिल्योदूधअरुपान्यो ।।
परमानंददासको ठाकुर, पहिलो ही पहिचान्यो ।।३।।

कीर्तन नं. १६

श्री जन्माष्टमीकी बधाई : राग - धनाश्री:

ताल - आदि ताल : मात्रा - ८

सबे मिली मंगल गावो माई।।
आज लालको जन्मद्योसहै, बाजत रंग बधाई।।१।।
आंगन लीपो चौक पुरावौ, विप्र पढन लागे वेद।।
करो सिंगार श्यामसुन्दरकौ, चोवा चंदन मेद ।।२।।
आनंद भरी नंदजूकी रानी, फूली अंग न समाई।।
परमानंददास तिहिं अवसर, बहुत न्योछावर पाई।।३।।

स्थायी

X	२	०	३	X	२	०	३
नी -	नी नी	सां -	सां -	ग̱ -	रें सां	सां नी̱	ध̱ प
मं -	ग ल	गा -	वो -	मा -	ई स	बे -	मि लि
प नी̱	ध̱ ध̱	प -	म -	म -	ग̱ म	प ग̱	रे सा
- मं	ग ल	गा -	वो -	मा -	- -	- -	ई -

अंतरा

X	२	०	३	X	२	०	३
प -	- -	म प	ग̱ म	प -	नी -	सां ग̱	रें सां
आ -	ज ला	- ल	को -	ज -	न्म द्यो	- स	है -
नी -	- -	सां -	सां रें	सां नी̱	ध̱ प	ग̱ म	प प
बा -	ज त	रं -	ग ब	धा -	ई -	स बे	मि लि

स्थायी

X		२		०		३		X		२		०		३	
नी़	सा	ग	म	प	-	-	-	म	ग	म	प	ग	ग	रे	सा
आं	-	ग	न	ली	-	पो	-	चौ	-	क	पु	रा	-	वो	-
प	-	प	-	म	प	ग	म	नी	ध	प	प	ग	ग	रे	सा
वि	-	प्र	प	ढ	न	ला	गे	वे	-	-	-	द	-	-	-

अंतरा

X		२		०		३		X		२		०		३	
प	-	-	-	म	प	ग	म	प	-	नी	-	सां	ग	रें	सां
क	रो	-	सिं	गा	-	र	-	श्या	-	म	सुं	द	र	को	-
नी	-	-	-	सां	-	सां	रें	सां	नी	ध	प	ग	म	प	प
चो	-	वा	चं	-	द	न	-	मे	-	-	-	द	-	-	-

स्थायी

X		२		०		३		X		२		०		३	
नी़	सा	ग	म	प	-	-	-	म	ग	म	प	ग	ग	रे	सा
आ	-	नं	द	भ	री	नं	द	जू	-	की	-	रा	-	नी	-
प	-	प	-	म	प	ग	म	नी	ध	प	प	ग	ग	रे	सा
फू	-	ली	-	अं	ग	न	स	मा	-	-	-	ई	-	-	-

अंतरा

X		२		०		३		X		२		०		३	
प	-	-	-	म	प	ग	म	प	-	नी	-	सां	ग	रें	सां
प	र	मा	-	नं	-	द	दा	-	स	तिं	हि	अ	व	स	र
नी	-	-	-	सां	-	सां	रें	सां	नी	ध	प	ग	म	प	प
ब	हु	त	न्यो	छा	-	व	र	पा	-	-	-	ई	-	-	-

५.४ राग वृन्दावनी सारंग

''ग-ध सुर वर्जित किये, ले काफी को अंग।
दोनों नि संवादी रि-प, वृन्दावनी सारंग।।''

सारंग रागको शास्त्रोक्त, प्राचीन एवं लोकप्रिय राग माना गया है। यह राग काफी थाटसे उत्पन्न होता है। इस रागमें 'गांधार' और ''धैवत'' स्वर वर्ज्य होनेसे, इस रागकी जाति औड़व है। इस रागका वादी स्वर है 'ऋषभ' और संवादी स्वर है 'पंचम'।

राग सारंग के छ: प्रकार प्रचलित हैं जो ऋतुक्रमानुसार गाये जाते हैं, जिसमें वृन्दावनी सारंग, शुद्‌ध सारंग, गौड़ सारंग, मधुमाद सारंग, नूर सारंग और सामंत सारंग गाये जाते हैं। इनके अलावा लंका दहन सारंग, मीयाँ की सारंग, इत्यादि प्रसिद्ध हैं । साधारणतया राग सारंग अर्थात् वृन्दावनी सारंग । यह राग शीत प्रकृतिका होने से विशेषकर उष्णकालमें गाया जाता है।

इस राग में द्रुपद और धमार के अलावा बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल व तराना भी गाया जाता है । ठुमरी नहीं गायी जाती।

इस रागका गायन समय मध्याह्न है। फागुन कृष्णपक्ष एकमसे ज्येष्ठ पूनम तक यह राग राजभोगमें गाया जाता है। पुष्टिमार्गमें राग सारंगमें जन्म-बधाई और उत्सवके पद विशेष गाये जाते हैं।

राग परिचय :-

इस रागमें ग और ध स्वरवर्जित हैं। आरोहमें शुद्ध नी और अवरोहमें कोमल नी लिया जाता है। शेष सभी स्वर शुद्ध है।

थाट - काफी

जाति - औड़व

वादी - ऋषभ

संवादी - पंचम

गायन समय - मध्याह्न

आरोह - सा, रे, म, प, नी, सां

अवरोह - सां, नी, प, म, रे, सा

पकड़ - सा, रे, म, प, नी, सां

स्वर विस्तार -

१) सा, रेमरे, सा

२) मपनीप, मप, मरेसा

३) मपनीसां, रेंसां, नीसांरें मं रें सां,
नीसां रें सां, नीसांनीप, मपनीप, मरे, सा

४) रे, म, प, नी, सां

कीर्तन नं. १७

राजभोग सन्मुख का पद (माहात्म्य का पद)

राग - वृन्दावनी सारंग : ताल - चौताल : मात्रा - १२

जाको वेद रटत ब्रह्मा रटत, शंभु रटत शेष रटत
नारद शुक व्यास रटत, पावत नहीं पाररी।।
ध्रुवजन प्रहलाद रटत, कुंती के कुँवर रटत,
द्रुपद सुता रटत नाथ, अनाथन प्रति पालरी ।।१।।
गणिका गज गीध रटत, गौतमकी नार रटत,
राजनकी रमणी रटत, सुतन दे दे प्यार री ।।
नंददास श्रीगोपाल, गिरिवरधर रूप रसाल,
यशोदाको कुँवर लाल, राधा उर हाररी।।२।।

मुखड़ा

X		०		२		०		३		४	
नी	नी	नी	सां	सां	रें	नी	सां	प	नी̲	म	प
वे	-	द	र	ट	त	ब्र	-	ह्मा	र	ट	त
रे	रे	म	नी̲	म	प	रे	म	रे	सा	नी़	सा
शं	-	भु	र	ट	त	शे	-	ष	र	ट	त
नी़	सा	म	रे	म	म	प	प	म	नी̲	म	प
ना	-	र	द	शु	क	व्या	-	स	र	ट	त
प	रें	रें	रें	सां	रें	नी	सां	प	नी̲	म	प
पा	-	व	त	न	हीं	पा	-	र	री	जा	को

अंतरा

X		०		२		०		३		४	
म	प	नी̲	प	नी	नी	सां	सां	नी	सां	सां	सां
ध्रु	व	ज	न	प्र	ह	ला	-	द	र	ट	त
नी	सां	रें	मं	रें	सां	नी	सां	रें	सां	नी̲	प
कुं	-	ती	-	के	-	कुँ	व	र	र	ट	त
म	रे	रे	म	म	म	प	प	म	नी̲	म	प
ध्रु	प	द	सु	ता	-	र	ट	त	ना	-	थ
प	रें	रें	रें	सां	रें	नी	सां	प	नी̲	म	प
अ	ना	थ	न	प्र	ति	पा	-	ल	री	जा	को

स्थायी

X		०		२		०		३		४	
नी़	सा	म	रे	म	म	प	प	म	नी॒	म	प
ग	णि	का	-	ग	ज	गी	-	ध	र	ट	त
रे	म	प	नी॒	प	म	रे	रे	सा	रे	नी़	सा
गौ	-	त	म	की	-	ना	-	र	र	ट	त
नी़	सा	म	रे	म	म	प	प	म	नी॒	म	प
रा	-	ज	न	की	-	र	म	णी	र	ट	त
प	रें	रें	रें	सां	रें	नी	सां	प	नी॒	म	प
सु	त	न	दे	-	दे	प्या	-	र	री	जा	को

अंतरा

X		०		२		०		३		४	
म	प	नी॒	प	नी	नी	सां	सां	नी	सां	सां	सां
नं	-	द	दा	-	स	श्री	-	गो	पा	-	ल
नी	सां	रें	मं	रें	सां	नी	सां	रें	सां	नी॒	प
गि	रि	व	र	ध	र	रु	प	र	सा	-	ल
म	रे	रे	म	म	म	प	प	म	नी॒	म	प
य	शो	दा	-	को	-	कुँ	व	र	ला	-	ल
प	रें	रें	रें	सां	रें	नी	सां	प	नी॒	म	प
रा	-	धा	-	उ	र	हा	-	र	री	जा	को

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद गा सकते हैं।

कीर्तन नं. १८

नावकौ पद : राग - वृन्दावनी सारंग : ताल - चौताल : मात्रा - १२

यमुना जल क्रीडत श्याम, चहुं ओर बनी वाम
नावमधि लाल, रावटी रची।।
फूलनको बंगला मनोहर राजत झुकि रही लता,
हंस और चकोर की, पंगति सचि।।१।।
कोकिला अलापत तान लेत सुखकारी,
गावत प्रवीन प्यारी, सारंग राग खची।।
छूटत जल जंत्रन फूहीं, मानों सुमन माल गुहीं,
ब्रजाधीश मेघश्याम, मूरति देखि ललचि।।२।।

कीर्तन नं. १९

श्री जन्माष्टमीकी बधाई : राग-वृन्दावनी सारंग : ताल-धमार (द्रुत) मात्रा - १४

घरघर ग्वाल देत हैं हेरी।।
बाजत ताल मृदंग बांसुरी, ढोल दमामा भेरी।।१।।
लूटत झपटत खात मिठाई, कही न सकत कोऊ फेरी।।
उन्मद ग्वाल करत कोलाहल, ब्रजवनिता सब घेरी।।२।।
ध्वजा पताका तोरनमाला, सबे सिंगारी सेरी।।
जय जय कृष्ण कहत परमानंद, प्रकट्यो कंसको बेरी।।३।।

स्थायी

X			२				०			३			
सांसां	सां	नी	सां	सां	सां	सां	नीनी	म	प	नी	नी	सां	सां
ग्वा-	ल	दे	-	त	हैं	-	हे-	री	-	घ	र	घ	र
रेंरें	रें	रें	नी	सां	नी	प	मरे	नी	प	म	रे	म	प
ग्वा-	ल	दे	-	त	हैं	-	हे-	-	-	री	-	-	-

अंतरा

X			२				०			३			
रेंरें	रें	सां	रें	रें	रें	रें	मंमं	रें	सां	रें	नी	सां	सां
बा-	ज	त	ता	-	ल	मृ	दं-	ग	बां	-	सु	री	-
नीनी	नी	नी	नी	सां	रें	मं	रेंसां	नी	मप	नी	नी	सां	सां
ढो-	ल	द	मा	-	मा	-	भे-	-	--	री	-	-	-

स्थायी

X			२				०			३			
सांसां	सां	नी	सां	सां	सां	सां	नीनी	म	प	नी	नी	सां	सां
लू-	ट	त	झ	प	ट	त	खा-	त	मि	ठा	-	ई	-
रेंरें	रें	रें	नी	सां	नी	प	मरे	नी	प	म	रे	म	प
कही	न	स	क	त	को	ऊ	फे-	-	-	री	-	-	-

अंतरा

X			२				०			३			
रेंरें	रें	सां	रें	रें	रें	रें	मंमं	रें	सां	रें	नी	सां	सां
उन	म	द	ग्वा	-	ल	क	र-	त	को	ला	-	ह	ल
नीनी	नी	नी	नी	सां	रें	मं	रेंसां	नी	मप	नी	नी	सां	सां
ब्रज	व	नि	ता	-	स	ब	घे-	-	--	री	-	-	-

स्थायी

X			२				०			३			
सांसां	सां	नी	सां	सां	सां	सां	नीनी	म	प	नी	नी	सां	सां
ध्व-	जा	प	ता	-	का	-	तो-	र	न	मा	-	ला	-
रेंरें	रें	रें	नी	सां	नी	प	मरे	नी	प	म	रे	म	प
स-	बें	सिं	गा	-	री	-	से-	-	-	री	-	-	-

अंतरा

X			२				०			३			
रेंरें	रें	सां	रें	रें	रें	रें	मंमं	रें	सां	रें	नी	सां	सां
जय	ज	य	कृ	-	ष्ण	क	हत	प	र	मा	-	नं	द
नीनी	नी	नी	नी	सां	रें	मं	रेंसां	नी	मप	नी	नी	सां	सां
प्रक	ट्यो	-	कं	-	स	को	बै-	-	--	री	-	-	-

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद भी गा सकते हैं।

कीर्तन नं. २०

गोवर्धनपूजा कौ पदः राग - वृन्दावनी सारंग : ताल - धमार : मात्रा - १४

हमारो देव गोवर्धन रानो।।
जाकी छत्र छांह हम बैठे, ताको त्यज औरे क्यों मानों।।१।।
नीको तृण सुंदर जल नीको नीको गोधन रहेत अघानों।।
नीको सब व्रजहोत सुखारो सुरपति कोप कहा पहेचानों ।।२।।
खीर खांड घृत भोजन मेवा ओदन सकल अनूपम आनों।।
परमानंद गोवर्धन उत्सव अन्नकूट अलौकिक जानों।।३।।

कीर्तन नं. २१

महात्म्यकौ पद : राग - वृन्दावनी सारंग : ताल - झपताल : मात्रा - १०

चक्रके धरणहार गरुडके असवार
नंदके कुमार मेरो संकट निवारो।।
यमला अर्जुन तार्यो गज ग्राहते उबार्यो
नागको नाथनहार, मेरौ प्रान प्यारो।।१।।
गिरिवर कर धार्यो इन्द्र हू कौ गर्व गार्यो,
ब्रजको रक्षणहार बिरद बिचारौ।।
द्रुपदसुताकी बेर, तब क्यों न कीनी अबेर,
अब क्यों अवेर करो, सूर सेवक तिहारौ।।२।।

मुखड़ा

X		२			०		३		
नी	नी	नी	सां	रें	नी	सां	नी̲	प	प
च	क्र	के	-	ध	र	ण	हा	-	र
प	प	प	नी̲	प	म	रे	नी़	सा	सा
ग	रु	ड	-	के	अ	स	वा	-	र
नी़	सा	रे	म	म	प	प	नी̲	म	प
नं	द	के	-	कु	मा	र	मे	-	रो
प	रें	रें	सां	सां	नी	सां	नी̲	म	प
सं	क	ट	-	नि	वा	-	रो	-	-

अंतरा

X		२			०		३		
म	प	नी	नी	नी	सां	नी	सां	सां	सां
य	म	ला	अ	-	र्जु	न	ता	-	र्यो
नी	सां	रें	मं	रें	नी	सां	नी̲	प	प
ग	ज	ग्रा	-	ह	ते	उ	बा	-	र्यो
प	प	प	नी̲	प	म	रे	नी़	सा	सा
ना	ग	को	-	ना	थ	न	हां	-	र
सा	रें	रें	सां	सां	नी	सां	नी̲	म	प
मे	रो	प्रा	-	न	प्या	-	रो	-	-

स्थायी

X		२			०		३		
नी	नी	सां	सां	सां	रें	सां	नी	प	प
गि	रि	व	-	र	क	र	धा	-	यों
प	प	प	नी	प	म	रे	नी़	सा	सा
इ	न्द्र	हूं	-	कौ	ग	र्व	गा	-	यों
नी़	सा	रे	म	म	प	प	नी	म	प
ब्र	ज	को	-	र	क्ष	ण	हा	-	र
प	रें	रें	सां	सां	नी	सां	नी	म	प
बि	र	द	-	बि	चा	-	रौ	-	-

अंतरा

X		२			०		३		
म	प	सां	नी	सां	सां	नी	सां	सां	सां
द्रु	प	द	-	सु	ता	की	बे	-	र
नी	सां	रें	मं	रें	नी	सां	नी	प	प
त	ब	क्यों	-	न	की	नी	अ	वे	र
प	प	प	नी	प	म	रे	नी़	सा	सा
अ	ब	क्यों	-	अ	वे	र	क	-	रो
सां	रें	रें	सां	सां	नी	सां	नी	म	प
सू	र	से	व	क	ति	हा	रो	-	-

कीर्तन नं. २२

नित्य छाककौ पदः राग - वृन्दावनी सारंग : ताल - आदि ताल : मात्रा - ८

छाक ले आई ग्वालिन गोरी।।
जसुमति सब पकवान छाब भरि, पठई टेरत भोरीं।।१।।
जबही आन अरोगत प्यारो, गोरस कनक कमोरी।।
ब्रजाधीश प्रभु श्यामढाकतर, भली बनी यह जोरी।।२।।

स्थायी

X		२		०		३		X		२		०		३	
नी	-	नी	-	सां	-	सां	सांरें	नी॒	-	म	प	नी	-	रें	सां
आ	-	ई	-	ग्वा	-	लि	न-	गो	-	री	-	छा	-	क	ले
रें	-	सां	-	नी॒	-	प	म	नी॒	-	पम	पम	रे	सा	नी़	सा
आ	-	ई	-	ग्वा	-	लि	न	गो	-	-	-	री	-	-	-

अंतरा

X		२		०		३		X		२		०		३	
म	प	नी	नी	सां	सां	नी	सां	रें	मं	रें	सां	रें	सां	नी	सां
ज	सु	म	ति	स	ब	प	क	वा	-	न	छा	-	ब	भ	रि
रें	रें	-	-	मं	रें	नी	सां	नी॒	-	म	प	नी	-	-	सां
प	ठ	ई	-	टे	-	र	त	भो	-	-	-	री	-	-	-

स्थायी

x		२		०		३		x		२		०		३	
नी	नी	-	-	सां	-	सां	सां	नी̲	-	म	प	नी	-	सां	-
ज	ब	ही	-	आ	-	न	अ	रो	-	ग	त	प्या	-	रो	-
नी̲	-	प	-	म	-	रे	सा	रे	-	म	रे	सा	नी़	सा	-
गो	-	र	स	क	न	क	क	मो	-	-	-	री	-	-	-

अंतरा

x		२		०		३		x		२		०		३	
म	प	नी	नी	सां	सां	नी	सां	रें	मं	रें	सां	रें	सां	नी	सां
व्र	जा	-	धी	-	श	प्र	भु	श्या	-	म	ढा	-	क	त	र
रें	रें	-	-	मं	रें	नी	सां	नी̲	-	म	प	नी	-	-	सां
भ	ली	-	ब	नी	-	य	ह	जो	-	-	-	री	-	-	-

५.५ राग गौरी

''रि-ध कोमल दोऊ लगें, चढते ध-ग न सुहाय
गौरी पूर्वी थाटकी, रि-प संवादी कहाय।।''

राग गौरी प्राचीन एवं ग्रंथोक्त राग है। इस राग के बारेमें दो मत प्रचलित हैं। एक मत इस रागको भैरव थाटोत्पन्न मानता है जबकि दूसरा मत इस रागमें तीव्र मध्यम लगाकर इसे पूर्वी थाटोत्पन्न मानता है। दोनोंही थाटके मतानुसार, राग गौरी औड़व - सम्पूर्ण जातीका राग है। दोनों प्रकार के रागमें 'गांधार' और धैवत स्वर आरोहमें वर्ज्य हैं। इस राग का वादी स्वर 'रे' और संवादी स्वर 'प' है। इस रागमें ऋषभ और धैवत स्वर कोमल हैं, शेष सभी स्वर शुद्ध हैं। पूर्वी थाट के गौरी रागमें दोनों ''मध्यमों'' का प्रयोग किया जाता है। इस रागका गायन समय सायंकाल है। इस राग के दो और प्रकार ललिता गौरी और चैती गौरी भी प्रचलित हैं।

राग परिचय - ऋषभ और धैवत स्वर कोमल । शेष स्वर शुद्ध ।
थाट - भैरव
जाति - औड़व - संपूर्ण
वादी - ऋषभ
संवादी - पंचम
गायन समय - सायंकाल । पुष्टिमार्गमें यह राग सांझी होरी धमार में विशेष गाया जाता है।
थाट - पूर्वी - रे, ध स्वर कोमल, म तीव्र शेष स्वर शुद्ध
जाति - औड़व - सम्पूर्ण

वादी - ऋषभ

संवादी - पंचम

गायन समय - सायंकाल । पुष्टिमार्गीय नित्यसेवा प्रकारमें इस राग के पद अधिकतर पाये जाते हैं। संध्याआरती दर्शन के समय अन्य रागों के साथ इस प्रकारके गौरी रागमें पदगान किया जाता है।

अष्टछापीय भक्तकवि श्री सूरदासजी ने महाप्रभुजी श्रीवल्लभाचार्यजी की शरणमें आनेके पश्चात राग देवगंधार, धनाश्री, सारंग, बिलावल, गौरी और बिहागरा में अधिकतर पदगान किया है।

''कौन सुकृत इन व्रजवासिनको'' - यह पद श्री सूरदासजीने गौरी रागमें गाया था।

भैरव थाटका गौरी राग -

आरोह - सा रे॒ मप, नी सां
अवरोह - सां नी ध॒प, म ग रे॒सा
पकड़ - मपध॒प, म, रे॒ गरे॒सा

स्वर विस्तार -

१) सा नी़ ध़॒ नी़ सा
२) रे॒ ग, मग, रे॒सा, म, पध॒सां, रें॒ सां
३) ध॒नी॒ध॒प, गमरे॒सा

पूर्वी थाटका गौरी राग -

आरोह - सा रे॒ म॑, प नी सां
अवरोह - सां नी ध॒प, म॑ग, रे॒सा
पकड़ - म॑ध॒नीसां, रें॒ सां

स्वर विस्तार -

१) सा ग म॑ ग रे॒ सा
२) म॑ ध॒ नी सां रें॒ सां, रें॒ नी ध॒ प
३) म॑ प, म॑गरे॒सा
४) सा प, म॑ध॒ नीध॒प, म॑ ग रे॒ सा
५) सा प, पम॑ध॒प, म॑ग, रे॒ ग रे॒ सा

कीर्तन नं. २३

आवनीकौ पद : राग गौरी (पूर्वी थाट) : ताल - त्रिताल : मात्रा - १६

बनतें आवत गावत गोरी ।।
हाथ लकुटिया गायन पाछें, ढोटा यशुमतिको री ।।१।।
मुरली अंधर धरें नंद नंदन, मानों लगी ठगोरी।।
याहींतें कुलकान हरी हे, ओढे पीतपिछोरी ।।२।।
व्रजवधू सबें अटन चढ देखत रूप निरख भई बोरी।।
नंददास जिन हरिमुख निरख्यो तिनको भाग्य बडोरी ।।३।।

मुखड़ा

x				२				०				३			
म॑	ध॒	नी	सां	रें॒	रें॒	सां	सां	नी	ध॒	नी	रें॒	नी	ध॒	प	प
ब	न	तें	-	आ	-	व	त	गा	-	व	त	गो	-	री	-
नी	नी	सां	रें॒	सां	सां	सां	-	नी	ध॒	नी	रें॒	नी	ध॒	प	-
हा	-	थ	ल	कु	टि	या	-	गा	-	य	न	पा	-	छे	-
सा	-	प	-	प	प	म॑	ध॒	नी	ध॒	प	प	म॑	ध॒	नी	सां
ढो	-	टा	-	य	शो	म	ति	को	-	री	-	ब	न	ते	-

स्थायी

X				२				०				३			
सा	सा	प	प	प	प	प	प	म॑	म॑	ध॒	ध॒	नी	ध॒	प	प
मु	र	ली	-	अ	ध	र	ध	रे	-	नं	द	नं	-	द	न
प	प	म॑	प	म॑	ग	ग	म॑	ग	रे॒	ग	म॑	ग	रे॒	सा	सा
मा	-	नो	-	ल	गी	-	ठ	गो	-	-	-	री	-	-	-

अंतरा

X				२				०				३			
ध॒	ध॒	म॑	ध॒	सां	सां	सां	सां	नी	सां	रें॒	रें॒	मं॑	गं	रें॒	सां
या	-	ही	-	ते	-	कु	ल	का	-	न	ह	री	-	है	-
सां	सां	सां	सां	नी	ध॒	नी	रें॒	नी	ध॒	प	प	म॑	ध॒	नी	सां
ओ	-	ढे	-	पी	-	त	पि	छो	-	री	-	ब	न	ते	-

स्थायी

X				२				०				३			
सा	सा	प	प	प	प	प	प	म॑	म॑	ध॒	ध॒	नी	ध॒	प	प
व्र	ज	व	धू	स	बें	-	अ	ट	न	च	ढ	दे	-	ख	त
प	प	म॑	प	म॑	ग	ग	म॑	ग	रे॒	ग	म॑	ग	रे॒	सा	सा
रू	-	प	नि	र	ख	भ	ई	बो	-	-	-	री	-	-	-

अंतरा

X				२				०				३			
ध॒	ध॒	म॑	ध॒	सां	सां	सां	सां	नी	सां	रें॒	रें॒	मं॑	गं	रें॒	सां
नं	-	द	दा	-	स	जि	न	ह	रि	मु	ख	नि	र	ख्यो	-
सां	सां	सां	सां	नी	ध॒	नी	रें॒	नी	ध॒	प	प	म॑	ध॒	नी	सां
ति	न	को	-	भा	-	ग्य	ब	डो	-	री	-	ब	न	ते	-

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद गा सकते हैं।

कीर्तन नं. २४

रासको पद : राग गौरी (पूर्वी थाट) - ताल - त्रिताल - मात्रा - १६

ततथेई ततथेईं ततताथेई थेई ।।
नाचत गावत गोपी नाना नई।।१।।
मृदंग धीधीकीट द्रुम द्रुम दई ।।
त्रिवट ताल गति लेत नई नई ।।२।।
गोवर्धनधारीलाल रीझे अति सई।।
कृष्णदास प्रभु प्यारी आँकों भरि लई।।३।

कीर्तन नं. २५

वसंत-धमारका पद : राग - गौरी (भैरव थाट) : ताल - द्रुत धमार : मात्रा - १४

गोकुल गाम सुहावनो सब मिल खेले फाग।।
मोहन मुरली बजाव ही, गावे गोरी राग।।१।।
नरनारी एकत्र भये आये नंद दरबार ।।
बाजे झालर किन्नरी, आवज डफकठतार।।२।।
चोवा चंदन अरगजा और कस्तुरी मिलाय।।
बालगोविंदको छिरक ही शोभा बरनी न जाय।।३।।
बूका बंदन कुंकुमा ग्वालन लिये अनेक।।
युथ परस्पर डार हीं अपने अपने टोल।।४।।
सुर कौतुक जो थकित भये थके रहे सूरज चंद।।
कृष्णदास प्रभु विहरत, गिरिधर आनंद कंद।।५।।

X			२				०			३			
रेंरें	रें	रें	रें	-	-	-	गरें	सां	-	सां	-	-	-
गो-	कु	ल	गा	-	म	सु	हा-	-	व	नो	-	-	-
सांसां	सां	-	ध	म	प	ध	सांसां	सां	-	सां	-	-	-
सब	मि	ल	खे	-	लें	-	फा-	-	-	-	-	-	ग
मम	म	म	प	प	प	प	नी-	ध	प	म	ग	रे	सा
मो-	ह	न	मु	र	ली	ब	जा-	-	व	ही	-	-	-
मम	म	म	प	प	ध	रें	सांसां	सां	-	ध	म	प	ध
गा-	वें	-	गो	-	री	-	रा-	-	ग	-	-	-	-

X			२				०			३			
रेंरें	-	-	रें	-	-	-	गरें	सां	-	सां	-	-	-
नर	ना	-	री	-	ए	-	क-	त्र	भ	ये	-	-	-
सांसां	-	-	ध	म	प	ध	सांसां	सां	-	सां	-	-	-
आ-	ये	-	नं	द	द	र	बा-	-	-	-	-	-	र
मम	म	-	प	प	प	प	नीनी	ध	प	म	ग	रे	सा
बा-	जै	-	झा	-	ल	र	कि-	न्न	री	-	-	-	-
मम	म	म	प	प	ध	रें	सांसां	सां	सां	ध	म	प	ध
आ-	व	ज	ड	फ	क	ठ	ता-	-	र	-	-	-	-

X			२				०			३			
रेंरें	-	-	रें	-	-	-	गरें	सां	-	सां	-	-	-
चो-	वा	-	चं	-	द	न	अर	ग	जा	-	-	-	-
सांसां	-	-	ध	म	प	ध	सांसां	सां	-	सां	-	-	-
और	क	-	स्तू	-	री	मि	ला-	-	य	-	-	-	-
मम	म	-	प	प	प	प	नीनी	ध	प	म	ग	रे	सा
बा-	ल	गो	विं	द	को	-	छिर	-	क	ही	-	-	-
मम	म	म	प	प	ध	रें	सांसां	सां	सां	ध	म	प	ध
शो-	भा	-	ब	र	नी	न	जा-	-	य	-	-	-	-

X			२				०			३			
रेंरें	रें	रें	रें	रें	रें	रें	गरें	सां	सां	सां	-	-	-
बू-	का	-	बं	-	द	न	कुम	कु	मा	-	-	-	-
सांसां	सां	-	ध	म	प	ध	सांसां	सां	-	सां	-	-	-
ग्वा-	ल	न	लि	ये	-	अ	ने-	-	क	-	-	-	-
मम	म	-	प	-	-	-	नीनी	ध	प	म	ग	रे	सा
यू-	थ	प	र	-	स्प	र	डा-	-	र	ही	-	-	-
मम	म	म	प	प	ध	रें	सांसां	सां	-	ध	म	प	ध
अप	ने	-	अ	प	ने	-	टो-	-	ल	-	-	-	-

X	२	०	३
रेंरें रें रें	रें रें रें रें	गरें सां सां	सां - - -
सुर कौ -	तु क जो -	थकि त भ	ये - - -
सांसां सां -	ध म प ध	सांसां सां -	सां - - -
थक र हैं	सू - र ज	चं- - द	- - - -
मम म म	प - - -	नीनी ध प	म ग रे सा
कृ- ष्ण दा	- स प्र भु	वि- ह -	र - त -
मम म म	प प ध रें	सांसां सां -	ध म प ध
गिर ध र	आ - नं द	कु- - न्द	- - - -

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद गा सकते हैं।

कीर्तन नं. २६

सांझीकौ पद : राग - गौरी (भैरव थाट) ताल - द्रुत धुमार : मात्रा - १४

श्याम सनेही गाईयै यातैं श्रीवृन्दावन रज पाईयै हो।।ध्रु।।
राधा जिनकी भामती, कुंजन कुंजन केलि।।
तरु तमाल ढिंग अरुझी मानों लसत कनककी बेलि।।१।।
महामोहनी मन हरयौ, रसबस कीने लाल।।
कुच कलशन पर मन मल्यौ, लट बाँध्यौ मैन मराल।।२।।
नयन सैन दै तन बेध्यौ, मन बेध्यौ कल गान।।
अंजन फंदन कुँवर कुरंगन, चलें दोऊ भ्रौंह कमान।।३।।
नकबेसर बड़सी लगी, चित्त चंचल मनमीन।।
अधर सुधा दै बेधियौ, चकृत किये आधीन।।४।।
अंग अंग रसरंगमें मगन भये हरि नाह।।
व्यास स्वामिनी सुख दियौ पिय संगमें सिंधु प्रवाह।।५।।

कीर्तन नं. २७

ब्याहकौ पद : राग गौरी (पूर्वी थाट) : ताल - आदिताल : मात्रा - ८

अरि चल दूल्हे देखन जाय।।
सुन्दर श्याम माधुरी मूरति, अँखियां निरख सिराय।।१।।
जुरि आई व्रजनारी नवेली, मोहन दिस मुसिक्याय।।
मोर बन्यो शिर कानन कुंडल, मरुवटि मुखहिं सुहाय।।२।।
पहेरे जरकसि पट आभूषण. अंग अंग मन अरुझाय।।
तेसीये बनी बरात छबीली, जगमग रंग चुचाय।।३।।
गोप सभा सरवरमें फूले, कमल परम झपटाय।।
नंददास गोपिनके द्रगअलि, लपटनकौ अकुलाय।।४।।

स्थायी

०		३		X		२		०		३		X		२	
म॑	ध॒	नी	सां	रें॒	-	सां	-	ध॒	प	म॑प	ध॒	म॑ग	रे॒ग	रे॒	सा
अ	रि	च	ल	दू	-	ल्हे	-	दे	-	ख-	न	जा-	--	-	य

अंतरा

X		२		०		३		X		२		०		३	
म॑	ध॒	नी	सां	रें॒	-	सां	-	नी	ध॒	नी	रें॒	सारें॒	गरें॒	सां	सां
सु	-	न्द	र	श्या	-	म	मा	-	धु	री	-	मु-	--	र	त
रें॒	सां	नी	ध॒	म॑	ध॒	नी	सां	रें॒	सांनी	ध॒	प	म॑	ध॒	नी	सां
अं	खि	याँ	-	नि	र	ख	सि	रा	--	-	य	अ	रि	च	ल

स्थायी

X		२		०		३		X		२		०		३	
प	प	प	प	म॑	प	-	ध॒	नी	ध॒	प	प	म॑प	ध॒	-	-
जु	रि	आ	-	ई	-	व्र	ज	ना	-	री	न	वे-	-	ली	-
म॑प	ध॒	म॑	ग	रे॒	ग	रे॒	सा	सा	-	ध॒	-	म॑	ग	रे॒	सा
मो-	ह	न	दि	स	मु	सि	क्या	-	-	-	य	-		-	

अंतरा

X		२		०		३		X		२		०		३	
म॑	ध॒	नी	सां	रें॒	-	सां	-	नी	ध॒	नी	रें॒	सांरें॒	गंरें॒	सां	सां
मो	-	र	ब	न्यो	-	शि	र	का	-	न	न	कुं-	--	ड	ल
रें॒	सां	नी	ध॒	म॑	ध॒	नी	सां	रें॒	सांनी	ध॒	प	म॑	ध॒	नी	सां
म	रु	व	टि	मु	ख	हि	सु	हा	--	-	य	अ	रि	च	ल

स्थायी

X		२		०		३		X		२		०		३	
प	प	प	प	म॑	प	-	ध॒	नी	ध॒	प	प	म॑प	ध॒	-	-
प	हे	रे	-	ज	र	क	सि	प	ट	आ	-	भू-	-	ष	ण
म॑प	ध॒	म॑	ग	रे॒	ग	रे॒	सा	सा	-	ध॒	-	म॑	ग	रे॒	सा
अं-	-	ग	अं	-	ग	म	न	अ	रु	झा	-	-	-	-	य

अंतरा

X	२	०	३	X	२	०	३
म॑ ध॒	नी सां	रें॒ -	सां -	नी ध॒	नी रें॒	सां‿रें॒ गं‿रें॒	सां सां
ते -	सी ये	ब नी	- ब	रा -	त छ	बी‿- -‿-	ली -
रें॒ सां	नी ध॒	म॑ ध॒	नी सां	रें॒ सां‿नी	ध॒ प	म॑ ध॒	नी सां
ज ग	म ग	रं -	ग चु	चा -‿-	- य	अ रि	च ल

स्थायी

X	२	०	३	X	२	०	३
प प	प प	म॑ प	- ध॒	नी ध॒	प प	म॑‿प ध॒	- -
गो -	प स	भा -	स र	व र	में -	फू‿- -	ले -
म॑‿प ध॒	म॑ ग	रे॒ ग	रे॒ सा	सा -	ध॒ -	म॑ ग	रे॒ सा
क‿- म	ल प	र म	ल प	टा -	- य	- -	- -

अंतरा

X	२	०	३	X	२	०	३
म॑ ध॒	नी सां	रें॒ -	सां -	नी ध॒	नी रें॒	सां‿रें॒ गं‿रें॒	सां सां
नं -	द दा	- स	गो -	पि न	के -	द्र‿- ग‿-	अ लि
रें॒ सां	नी ध॒	म॑ ध॒	नी सां	रें॒ सां‿नी	ध॒ प	म ध॒	नी सां
ल प	ट न	को -	अ कु	ला -‿-	- य	अ रि	च ल

राग - पूर्वी

''रि - ध कोमल कर गाईए, दोनों मध्यम मान ।
ग - नि वादी संवादी सों, राग पूर्वी जान ।।''

सम्प्रदायकी नित्य कीर्तन प्रणाली के मुख्य रागों में पूर्वी राग को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है ।

राग पूर्वी, पूर्वी थाट से उत्पन्न होता है । इसके आरोह - अवरोह दोनों में सातों स्वर लगने से यह संपूर्ण जातिका राग है । इस राग में रे - ध स्वर कोमल लगते हैं । तथा दोनों मध्यमों का प्रयोग किया जाता है । शेष स्वर शुद्ध हैं । इस राग का वादी स्वर 'गंधार' हैं व संवादी स्वर 'निषाद' है । पूर्वी राग का गायन समय दिन का अंतिम प्रहर है ।

पुष्टिमार्गमें शीतकालमें यह राग विशेष गाया जाता है । आवनी के कई पद इस रागमें प्राप्त हैं । पूर्वी राग संध्या-आरती से लेकर शयन पर्यन्त गाया जाता है ।

राग परिचय

इस रागमें 'रिषभ' और 'धैवत स्वर कोमल, दोनों मध्यम और शेष स्वर शुद्ध्ध लगते हैं ।

थाट : पूर्वी
जाति : सम्पूर्ण
वादी - गांधार
संवादी - निषाद
गायन समय - दिनका अंतिम (चौथा) प्रहर ।

आरोह :- सा रे ग, म॑ प, ध नि सां

अवरोह :- सां नि ध प, म॑, ग, रे, सा

पकड़ :- ऩि सा रे ग, म॑ ग, म, ग, रे ग रे सा

स्वर विस्तार :-

१) ऩि रे ग, म॑ ग रे सा

२) गम॑प, म॑ ध नी ध प

३) म॑ ध नी सां, रें सां

४)नी ध प, म॑ ग, म ग रे सा

कीर्तन नं. २८

आवनी कौ पद : राग : पूर्वी : ताल : चौताल/द्रुपद : मात्रा - १२

आगे गाय पाछें गाय इत गाय उत गाय
गोविंद को गायनमें बसवो ई भावे ।।
गायनके संग धावे गायनमें सचुपावे
गायनकी खुररेणु अंग लपटावें ।।१।।
गायनसों व्रजछायो वैकुंठ बिसरायो
गायनके हेत कर गिरि ले उठावे ।।
छीतस्वामी गिरिधारी विठ्ठलेश वपु धारी
ग्वारियाको भेख धरें गायन में आवें ।।२।।

X		०		२		०		३		४	
प	प	प	म॑	ध॒	प	म॑	ग	म	ग	ग	ग
आ	-	गे	गा	-	य	पा	-	छे	गा	-	य
नी़	नी़	रे॒	ग	ग	ग	म॑	ग	रे॒	सा	सा	सा
इ	-	त	गा	-	य	ऊ	-	त	गा	-	य
नी़	नी़	रे॒	ग	रे॒	ग	प	प	म॑	ध॒	प	प
गो	-	वि	न्द	को	-	गा	-	य	न	-	में
म॑	म॑	ध॒	नी	नी	नी	रें॒	नी	ध॒	प	रे॒	ग
ब	-	स	वो	-	ई	भा	-	-	वे	-	-

अन्तरा

X		०		२		०		३		४	
ग	ग	म॑	ध॒	म॑	ध॒	सां	सां	नी	रें॒	सां	सां
गा	-	य	न	के	-	सं	-	ग	धा	-	वे
नी	नी	रें॒	गं	गं	गं	मं॑	गं	रें॒	सां	सां	सां
गा	-	य	न	-	में	स	-	चु	पा	-	वे
नी	रें॒	नी	ध॒	प	प	म॑	प	ग	म	ग	ग
गा	-	य	न	की	-	खु	-	र	रे	-	णु
म॑	ध॒	नी	रें॒	नी	ध॒	नी	ध॒	प	म	रे॒	ग
अं	-	ग	ल	-	प	टा	-	-	वे	-	-

स्थाई

X		०		२		०		३		४	
नी़	नी़	रे॒	ग	रे॒	ग	प	प	म॑	ध॒	प	प
गा	-	य	न	सो	-	व्र	-	ज	छा	-	यो
म॑	म॑	ध॒	नी	नी	नी	रें॒	नी	ध॒	प	प	प
वै	-	कुं	-	-	ठ	वि	-	स	रा	-	यो
प	प	प	म॑	ध॒	प	म॑	ग	म	ग	ग	ग
गा	-	य	न	के	-	हे	-	त	क	-	र
नी़	नी़	रे॒	ग	ग	ग	म॑	ग	रे॒	सा	सा	सा
गि	-	रि	ले	-	उ	ठा	-	-	वे	-	-

अन्तरा

X		०		२		०		३		४	
ग	ग	म॑	ध॒	म॑	ध॒	सां	सां	नी	रें॒	सां	सां
छी	-	त	स्वा	-	मी	गि	-	रि	धा	-	री
नी	नी	रें॒	गं	गं	गं	मं॑	गं	रें॒	सां	सां	सां
वि	-	ठ्ठ	ले	-	श	व	-	पु	धा	-	री
नी	रें॒	नी	ध॒	प	प	म॑	प	ग	म	ग	ग
ग्वा	-	रि	या	-	को	भे	-	ख	ध	-	रे
म॑	ध॒	नी	रें॒	नी	ध॒	नी	ध॒	प	म॑	रे॒	ग
गा	-	य	न	-	में	आ	-	-	वे	-	-

इस स्वरलीपिमें निम्नलिखित पद आप गा सकते है ।

कीर्तन नं. २९

श्री गुंसाईजीकी बधाई राग - पूर्वी : चौताल :मात्रा-१२

श्री विठ्ठलेश चरण कमल, पावन त्रैलोक करन,
दरस परस सुन्दर वर, वार वार वंदे ।।
समरथ गिरिराज धरन, लीला निज प्रकट करन ।
संतन हित मानुष तनु, वृन्दावन चंदे ।।१।।
चरणोदक लेत प्रेत, ततक्षणते मुक्त भये,
करुणामय नाथ सदा, आनंद निधि कंदे ।।
वारने भगवानदास, विहरत सदा रसिकराय,
जय जय यश बोल बोल, गावत श्रुति छंदे ।।२।।

कीर्तन नं. ३०

रास का पद राग : पूर्वी : ताल : झपताल : मात्रा : १०

रास मंडल में बने गिरिधरन लाल ।।
सुभग यमुनापुलिन प्रफुल्लित कदंब बन
शरद रेन शशी देख थकित व्रजबाल ।।१।।
भूषण वसन अंग अंग नौतन सखी कंठ धर बांह करे ।
अधर मधुर पान ।।
बनी गौरश्याम छबि शोभा कहा कहे कवि
कोटि काम मोहे कुंभनदास जीय जान ।।२।।

मुखड़ा

X		२			०		३		
सां	सां	नी	ध॒	प	म॑	प	ग	म	ग
रा	-	स	मं	-	ड	ल	में	-	-
म॑	रे	ग	ग	म॑	ग	रे	सा	सा	सा
ब	ने	गि	रि	ध	र	न	ला	-	ल
ऩी	सा	ग	रे॒	ग	प	म॑	प	प	प
रा	-	स	मं	-	ड	ल	में	-	-
म॑	ध	सां	नी	ध॒	प	म	ग	म	ग
ब	ने	गि	रि	ध	र	न	ला	-	ल

अन्तरा

X		२			०		३		
म॑	ग	म॑	ध॒	ध॒	सां	नी	सां	सां	सां
सु	भ	ग	य	मु	ना	-	पु	ली	न
नी	रें॒	गं	गं	गं	मं॑	गं	रें॒	सां	सां
प्र	फु	लि	त	क	दं	ब	ब	-	न
सां	सां	नी	ध॒	प	म॑	प	ग	म	ग
श	र	द	रै	न	श	शि	दे	-	ख
ऩी	रे॒	ग	म॑	प	म॑	ग	रे॒	सा	सा
थ	कि	त	ब्र	ज	बा	-	ल	-	-

।।१।।

स्थाई

X		२			०		३			
नी̣	रे̲	ग	रे̲	ग	प	म॑	प	प	प	
भू	-	ष	ण	व	स	न	अं	-	ग	
म॑	ध̲	नी	नी	नी	रें̲	नी	ध̲	प	प	
अं	ग	नौ	-	-	त	न	स	-	खी	
प	प	प	प	प	म॑	प	ग	म	ग	
कं	-	ठ	ध	र	बां	ह	क	-	रे	
म	रे̲	ग	ग	म॑	ग	रे̲	सा	सा	सा	
अ	ध	र	म	धु	र	म	धु	पा	न	।।

अन्तरा

X		२			०		३			
म॑	ग	म॑	ध̲	ध̲	सां	नी	सां	सां	सां	
ब	नी	गो	-	र	श्या	म	छ	-	बी	
नी	रें̲	गं	गं	गं	म॑ं	गं	रें̲	सां	सां	
शो	भा	क	हा	-	क	है	क	-	वि	
सां	सां	नी	ध̲	प	म॑	प	ग	म	ग	
को	टि	का	-	म	मो	-	हे	-	-	
नी̣	रे̲	ग	म॑	प	म॑	ग	रे̲	सा	सा	
कुं	भ	न	दा	स	जी	य	जा	-	न	।।२।।

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित कीर्तन गा सकतें हैं ।

कीर्तन नं. ३१

श्री गोपाष्टमी कौ पद : राग - पूर्वी : ताल-झपताल :मात्रा-१०

मैयारी में केसी गाय चराई ।।
बूझ देख बलभद्र ददासों, केसी में टेर बुलाई ।।१।।
बिडर चली सघनबन महियां, हेरीदे, अहोटाई ।।
ग्वालनके लरिका पचिहारे जे सब मेरी दांई ।।२।।
भलो भलो कहि महेरि हसतहें, फूली अंग न माई ।।
परमानंद प्रभुके वीरबचन सुन, यशोमति देत बधाई ।।३।।

कीर्तन नं. ३२

आवनीको पदः राग - पूर्वी : ताल-त्रिताल :मात्रा-१६

कदंब चढि कान्ह बुलावत गैया ।
मोहन मुरलीको शब्द सुनतही, जहां तहां ते उठि धैया ।।१।।
आनो-आनो सखा सिमिट सब, पाई है इक ठैंया ।
गोविंद प्रभु बलदाऊसों कहन लागे, अब घर को बगदैया ।।२।।

स्थाई

X				२				०				३			
प	-	प	म॑	ग	रे॒	ग	पम॑	ग	रे॒	सा	गम॑	ग	रे॒	ऩि	रे॒ग
काऽ	-	न्ह	बु	ला	ऽ	व	तऽ	गै	ऽ	या	क	ढ	ब	च	ऽढ

अन्तरा

X				२				०				३			
म॑	ग	म॑	ध॒	सां	ऽ	ऽ	ऽ	नि	रें॒	गं	मं॑गं	रें॒	सां	ऽ	ऽ
मो	ऽ	ह	न	मु	र	ली	को	श	ऽ	ब्द	सुऽ	न	त	ही	ऽ
रें॒	नि	ध॒	प	प	ध॒	म॑	पम॑	ग	म॑रे॒	ग	म	ग	रे॒	ऩिरे॒	ग
ज	हां	त	हां	तें	-	उ	ठि	घे	ऽऽ	या	क	दं	ब	चऽ	ढ़ि

स्थाई

X				२				०				३			
प	ध॒	प	-	म॑	ध॒	मध॒	नि	सां	नी	ध॒	प	म॑	ग	रे॒	ग
आ	ऽ	वो	ऽ	आ	ऽ	वो	ऽ	स	खा	ऽ	सि	मि	ट	स	ब
ध॒	ऽ	प	ऽ	म॑	ग	म॑	रे॒	ग	-	म॑	ग	रे॒	-	सा	-
पा	ऽ	ई	ऽ	है	ऽ	इ	क	ठै	ऽ	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

X				२				०				३			
म॑	ग	म॑	ध॒	सां	ऽ	ऽ	ऽ	नी	रें॒	गं	मं॑गं	रें॒	सां	ऽ	ऽ
गो	ऽ	वि	न्द	प्र	भु	ब	ल	दा	उ	सौं	क	ह	न	ला	गे
रें॒	नी	ध॒	प	प	ध॒	म॑	पम॑	ग	म॑रे॒	ग	म	ग	रे॒	नी़रे॒	ग
अ	ब	घ	र	को	-	ब	ग-	दै	--	या	क	दं	ब	चड़	ढि

राग - हमीर

''कल्याणन ही के थाट में दोनों मध्यम जान ।
ध - ग वादी - संवादीसों राग हमीर बखान ।।''

राग हमीर कल्याण थाट से उत्पन्न होता है । तीव्र और शुद्ध दोनों मध्यमों का प्रयोग इस रागमें होता है । यह राग सम्पूर्ण जातिका राग है । इसका वादी स्वर ''धैवत'' और संवादी स्वर ''गंधार'' हैं ।

राग परिचय : पुष्टिमार्गमें राग हमीर सायंकालमें गाया जाता है । इस राग की प्रकृति शीतल होने से इस राग को उष्णकाल में गाया जाता है । पुष्टिमार्गमें अक्षय-तृतीया से संध्या-आरती में तथा शयन के दर्शन समय भी कभी - कभी गाया जाता है ।

राग हमीर की विशेषता :

१) तीव्र मं का अल्प प्रयोग केवल आरोहमें पंचम के साथ और शुद्ध म का प्रयोग आरोह - अवरोह दोनों में होता है । जैसे मं प, अथवा मंपधप, गमरेसा । राग केदार, कामोद और हमीरमें तीव्र''मं'' का प्रयोग एक ही ढंगसे किया जाता है ।

२) इस रागके आरोहमें अधिकतर नी वक्र प्रयोग किया जाता है जैसे गमध, नीधसां । इस राग के अवरोहमें गांधार स्वर वक्र है - जैसे ग म रे सा ।

३) राग की रंजकता बढ़ानेके लिये कभी-कभी अवरोहमें धैवत के साथ कोमल 'नी' का प्रयोग कल्याण थाट जन्य रागों जैसे हमीर, केदार व कामोद में किया जाता है ।

४) ग अथवा म से तार सातक को जाते समय आरोह में पंचम छोड़ दिया जाता है, जैसे - सा रे सा, ग म ध, नी ध सां ।

५) आरोहमें अधिकतर रे वक्र प्रयोग किया जाता है और सा से सीधे गांधार को चले जाते हैं जैसे - सा रे सा, ग म ध ।

६) धैवत पर निषाद का आस लेना इस राग की निजी विशेषता है जैसे - ग म ध, नी ध सां ।

इस राग में दोनों मध्यम का प्रयोग होता है । शेष स्वर शुद्ध हैं ।

थाट - कल्याण
जाति - सम्पूर्ण
वादी - धैवत
संवादी - गांधार
गायन समय - रात का प्रथम प्रहर ।

आरोह :- सा रे सा, ग म ध, नी ध सां
अवरोह :- सां नी ध प, मं प ध प, ग म रे सा
पकड़ - सा रे सा, ग म ध

स्वर विस्तार :-

१) सा रे सा, ग म ध, नी ध सां

२) नि सां ध प, ग म ध प, ग म रे सा ।

३) ग म ध, नी ध सां, रें सां, गं मं रें सां, नि सां रें सां, नी ध प

४) मं प ध प, ग म रे सा ।

कीर्तन नं. ३३

उष्णकाल आवनीको पद : राग - हमीर : ताल : तीनताल : मात्रा - १६

गिरिधर सब ही अंग को बांको ।।
बांकी चाल चलत गोकुलमें छैल छबीलो का को ।।१।।
बांकी भ्रोंह चरणगति बांकी बांको हृदय ताको ।।
परमानंददासको ठाकुर कियो खोर व्रज सांको ।।२।।

मुखड़ा

X	२	०	३
म॑ प ग म	ध ध़ प प	ध नी सां रें	नी सां ध प
गि रि ध र	स ब ही अं	- ग को-	बां - को - ।।

अंतरा

२	०	३	X
प प सां सां	सां सां सां सां	ध नी सां रें	नी सां ध प
बां - की -	चा - ल च	ल त गो -	कु ल में -
गं गं गं मं	रें रें सां सां	नी सां ध प	म॑ प ग म
छै - ल छ	बी - लो -	का - को -	गि रि ध र ।।१।।

स्थाई

२	०	३	X
प प प म॑	ध ध प प	ग म ध प	ग म रे सा
बां - की -	भ्रों - ह च	र ण ग ति	बां - की -
प प प प	म॑ प ग म	नीध नीसां	ध ध प प
बां - को -	हृ द - य	ता - - -	को- - - - ।।

अंतरा

२	०	३	X
प प सां सां	सां सां सां सां	ध नी सां रें	नी सां ध प
प र मा -	नं - द दा	- स को -	ठा - कु र
गं गं गं मं	रें रें सां सां	नी सां ध प	म॑ प ग म
कि यो - खो	- र व्र ज	सां - को -	गि रि ध र ।।२।।

इस स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद गा सकते हैं ।

कीर्तन नं. ३४

मुरली कौ पद : राग - हमीर : ताल - त्रिताल : मात्रा - १६

यातें माई भवन छाँड़ बन जैये ।।
आँखरस कानरस बातरस सबरस, नंदनंदनपै पैये ।। १ ।।
कल पल्लव कर कंध बाहु धर, संग मिले गुन गैये ।।
रास बिलास बिनोद अनूपम, माधौके मन भैये ।।२।।
यह सुख सखीरी कहत नहीं आवै, देखे दुख बिसरैये ।।
परमानंद स्वामीको संगम, भाग्य बड़े तें पैये ।।३।।

कीर्तन नं. ३५

श्री गुसांईजी की बधाई : राग - हमीर : ताल : आडा-चौताल : मात्रा - ७

श्री वल्लभलाल के गुण गाऊं ।।
माधुरी माधुरी मूरति देखे आनंद सदन मदन मोहन नयन चेन पाऊं ।।१।।
श्री वल्लभनंदन जगत वंदन शीतल चंदन ताप हरण
ये ही महाप्रभु ईष्टकरण चरणन चित्त लाऊं ।।
छीतस्वामी मन वच कर्म परम धर्म ये ही मेरे, लाडिलो लड्याऊं ।।२।।

मुखड़ा

X	२	३	४	X	२	३	४
ध	ध प	ध नी	सां रें	नीसां	ध प	म॑ प	ग म
ला	- ल	के -	गु ण	गा-	ऊं श्री	व -	ल्ल भ

अंतरा

X	२	३	४	X	२	३	४
प	प प	सां सां	सां सां	धनी	सां रें	नी सा	ध प
मा	धु री	मा -	धु री	मू-	र त	दे -	खे -
गं	गं गं	मं रें	सां सां	नी-	नी सां	ध ध	प प
आ	नं द	स द	न -	म-	द न	मो -	ह न
सां	नी ध	म॑ प	ग म	नी-	ध प	म॑ प	ग म
न	य न	चै -	न -	पा-	ऊ श्री	व -	ल्ल भ ।।१।।

स्थाई

X	२	३	४	X	२	३	४
प	प प	ध ध	प प	गम	ध प	ग म	रे सा
व	ल्ल भ	नं -	द न	ज-	ग त	वं -	द न
सा	सा सा	रे रे	सा सा	ग	म प	ग म	रे सा
शी	त ल	चं -	द न	ता	- प	ह र	- न
प	प प	ध ध	प प	धनी	सां रें	नी सा	ध प
ये	ही म	हा -	प्र भु	इ-	ष्ट क	र -	न -
सां	नी ध	म प	ग म	नी	ध प	म प	ग म
च	र -	न न	चि त	ला	ऊ श्री	व -	ल्ल भ ।।

अंतरा

X	२	३	४	X	२	३	४
प	प प	सां सां	सां सां	धनी	सां रें	नी सां	ध प
छी	- त	स्वा-	मी -	म-	न -	व च	क र्म
गं	गं गं	मं रें	सां सां	नी-	नी सां	ध ध	प प
प	र म	ध -	र्म -	ये-	ही	मे	- रे-
सां	नी ध	म॑ प	ग म	नीसां	ध प	म॑ प	ग म
ला	- डि	लो -	- ल	ड्या-	उं श्री	व -	ल्ल भ ।।२।।

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद गा सकतें हैं ।

कीर्तन नं. ३६

सांझीकौ पद राग - हमीरः ताल-आड़ा चौताल:मात्रा-७

केसर फूल बीनत राधा गोरी ।। भोरी संग सहचरी बारी ।।
जिनके अंग सुगंध केसर की अरु केसर रंग सारी ।।१।।
जिनके तन वरन केसरकौ केसर पंखुरी अंगुरिन पर बारी ।।
नख प्रतिबिंब देख केसरको भूल गई सुध सारी ।।२।।
बनही बन आये गिरिधर जहाँ बिहार करत सुकुमारी ।।
जीवन गिरिधर सखी रुप धरि, केलि करत मनुहारी ।।३।।

कीर्तन नं. ३७

राग हमीर - चोताल - मात्रा - १२

गये पाप ताप दूर देखत दरस परस चरन ।
हों तो एक पतित तिहारो पतितपावन विरद हों तुम
जगत के उद्धरन ।
स्तुति सेस कर न सके सकल कला गुन निधान ।
जानत हों तिहारी सब विधि अनुसरन ।
‘छीतस्वामी’ गिरीवरधर तेसे ही विठ्ठलेश,
होंतो तिहारी जन्म जन्म सरन ।

स्थाई

x		०		२		०		३		४	
									प	ग	म
									ग	ये	ऽ
घ	-	प	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	म	रे	सा	सा
पा	ऽ	प	ता	ऽ	प	दू	ऽ	र	दे	ख	त
सां	सां	ऽ	ध	नि	नि	सां	ध	फ	ऽ	ग	म
द	र	स	प	र	स	च	र	न	ग	ऽ	ये

अन्तरा

प	ऽ	ऽ	सां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रें	सां	ऽ	सां
हों	ऽ	तो	ए	क	प	ति	त	ति	हा	ऽ	रो
ध	ध	ऽ	सां	नि	रें	गं	रें	सां	ध	प	ऽ
प	ति	त	पा	व	न	वि	र	ध	ये	तु	म
सां	गंमं	रें	सां	ध	रें	सां	नि	धप	प	ग	म
ज	गऽ	त	के	ऽ	उ	द्ध	र	ऽन	ग	-	ये

संचारी

X		०		२		०		३		४	
प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध	नि	ध	प	ध	प
स्तु	ति	-	शे	ऽ	स	क	र	न	स	के	ऽ
सां	सां	ऽ	नि	ध	प	ध	नि	ध	प	ऽ	ऽ
स	क	ल	क	ला	ऽ	गु	न	नि	धा	ऽ	न
ध	ऽ	प	ऽ	ग	म	प	ग	म	रे	सा	ऽ
जा	ऽ	न	त	हों	ऽ	-	-	ति	हा	ऽ	री
सा	म	ग	प	म॑	ध	नि	ध	प	गम	रे	सा
स	ब	वि	धि	ऽ	अ	नु	ऽ	ऽ	सऽ	र	न

आभोग

X		०		२		०		३		४	
प	ऽ	ऽ	सां	ऽ	ऽ	रें	ऽ	सां	ऽ	ऽ	ऽ
छी	त	स्वा	ऽ	ऽ	मी	गि	रि	व	र	ध	र
ते	ऽ	ऽ	नि	ऽ	रें	गं	रें	सां	ध	प	ऽ
सां	ऽ	ऽ	गं	ऽ	ऽ	मं	रें	ऽ	सां	ऽ	ऽ
हों	ऽ	ऽ	तो	ऽ	ति	हा	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ
रें	सां	नि	ध	नि	रें	सां	नी	ध	प	ग	म
ज	न	म	ज	न	म	स	र	न	ग	ऽ	ये

राग - ईमन

''शुद्ध सुरनके संग जब मध्यम तीवर होय।
ग - नि वादी संवादी तें ईमन कहत सब कोय।।''

कल्याण थाट से इस राग की उत्पत्ति होती है और यह राग संपूर्ण जातिका राग है । वादी स्वर 'गंधार' और 'संवादी' स्वर 'निषाद' हैं । 'मध्यम' स्वर तीव्र और शेष स्वर शुद्ध हैं । इस राग का गायन समय रात्री का पहला प्रहर है । यह राग पूर्वांगवादी है । इसमें कभी कभी शुद्ध मध्यम का भी प्रयोग किया जाता है ।

राग परिचय :

इस राग में मध्यम तीव्र, शेष सभी स्वर शुद्ध लगते हैं ।

थाट -कल्याण,
जाति - संपूर्ण
वादी- गांधार,
संवादी - निषाद
गायन समय - रात्री का प्रथम प्रहर

पुष्टिमार्गमें इस राग को सायंकालीन राग माना जाता है । उष्णकालमें स्नानयात्रा से लेकर रथयात्रा के अगले दिन तक शयन भोग एवं दर्शनमें ईमन राग में कीर्तन गान किया जाता है । पुष्टि सम्प्रदायमें श्रीजी को जब सेहरा का श्रृंगार धराया जाता है, तब शयन दर्शनमें राग ईमन के पद गाये जाते हैं ।

आरोह :- ऩि रे ग, म॑ प, ध नी सां

अवरोह :- सां नी ध प, म॑ ग, रे सा

पकड़ :- ऩि रे ग रे सा, प म॑ ग रे सा

स्वर विस्तार :-

१) ऩि रे ग रे सा।

२) प म॑ ग रे, ग रे सा।

३) ग म॑ प, म॑ ध नी ध प, ग म॑ ध नी सां, नि रें गं रें सां

४) नी ध प, म॑ प, म॑ ग, म॑ ग रे सा।

कीर्तन नं. ३८

शयन दर्शनकौ पद राग - ईमन ताल : तीनताल : मात्रा-१६

मेरे तो गिरिधर ही गुणगान ।।
यह मूरति खेलत नयननमें यही हृदयमें ध्यान ।।१।।
चरणरेणु चाहत मन मेरो यही दीजिये दान ।।
कृष्णदासकी जीवन गिरिधर मंगलरुप निधान ।।२।।

मुखड़ा

X	२	०	३
सां सां नी ध	प प ग म॑	प प ग रे	ऩि रे सा सा
गि रि ध र	ही - गु न	गा - - न	मे - रे तो ।।

अन्तरा

म॑ ग म॑ ध	धनी सां सां सां	नी ध नी रें	गं रें सां सां
य ह मू -	रि- त खे -	ल त न य	न न में -
नि रें गं रें	सां नी ध प	ग रे ग प	ग रे सा सा
य ही - हृ	द य में -	ध्या- - न	मे - रे तो ।।१।।

स्थाई

X	२	०	३
प ग प प	प प प प	म॑ म॑ ध ध	नी ध प प
च र ण रे	- णु चा -	ह त म न	मे - रो -
प प म॑ प	म॑ ग ग म॑	ग रे रे ग	रे रे सा सा
य ही - दी	- जि ये -	दा - - न	मे - रे तो ।।

अन्तरा

X	२	०	३
म॑ ग म॑ ध	धनी सां सांसां	नी ध नी रें	गं रें सां सां
कृ -ष्ण दा	-- स की -	जी- व न	गि रि ध र
नीं रें गं रें	सांनी ध प	ग रे ग प	ग रे सा सा
मं - ग ल	रु - प नि	धा - - न	मे - रे तो ।।२।।

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित कीर्तन गा सकतें हैं ।

कीर्तन नं. ३९

उसीर दूधकौ पद राग - ईमन : ताल-त्रिताल:मात्रा-१६

दूध पियो हो कुँवर कन्हाई ।।
ओट्यो अति ही स्वच्छ भरलाई, तामें अधिक मिठाई ।।१।।
सुघर अरगजा अंग लेपन, कियो लागत परमसुहाई ।।
कृष्णदास भर लाई जमुनोदक, अचवन कीजिये आई ।।२।।

कीर्तन नं. ४०

श्री महाप्रभुजी की बधाई राग-ईमन : ताल : झपताल : मात्रा - १०

रुचिरपद कमल श्री वल्लभाधीशके,
रेन ओर दिवस निज शिरसि धरीयें ।।
गहत दृढ बांह जिहिं कान श्री नंदसुत,
पत्र फल पुष्प सेवानुसरियें ।।१।।
प्रेमभावतें निकट संतत सदा रहत, राख विश्वास व्रतते न टरियें ।।
श्री विठ्ठल गिरिधरन हित प्रगट लक्ष्मणसुवन,
भक्तके भवनमें वास करियें ।।२।।

X		२			०		३			
नी	ध	प	प	प	म॑	प	म॑	ग	ग	
रु	चि	र	प	द	क	म	ल	श्री	-	
रे	नी़	रे	ग	प	रे	ग	रे	सा	सा	
व	-	ल्ल	भा	-	धी	-	श	के	-	
नी़	ध़	नी़	रे	रे	ग	रे	म॑	ग	ग	
रे	-	न	औ	र	दि	व	स	नि	ज	
म॑	ध	सां	नी	ध	प	म॑	ग	रे	सा	
शि	र	सी	ध	री	ये	-	-	-	-	।।

अन्तरा

x		२			०		३			
म॑	ग	म॑	ध	म॑	सां	सां	सां	सां	सां	
ग	ह	त	द्र	-	ढ	बां	ह	जि	हीं	
नी	ध	नी	रें	रें	गं	रें	सां	सां	सां	
का	-	न	श्री	-	नं	-	द	सु	त	
नी	रें	गं	रें	सां	नी	ध	प	म॑	ग	
प	-	त्र	फ	ल	पु	-	ष्प	से	-	
म॑	ध	सां	नी	ध	प	म॑	ग	रे	सा	
वा	-	नु	स	रि	ये	-	-	-	-	।।१।।

स्थाई

x		२			०		३			
प	ग	प	प	प	म॑	प	म॑	ग	ग	
प्रे	म	भा	-	व	तें	-	नि	क	ट	
रे	नी़	रे	ग	प	रे	ग	रे	सा	सा	
सं	-	त	त	स	दा	-	र	ह	त	
नी़	ध़	नी़	रे	रे	ग	रे	म॑	ग	ग	
रा	-	ख	वि	-	श्वा	-	स	व्र	त	
म॑	ध	सां	नी	ध	प	म॑	ग	रे	सा	
तें	-	न	ट	रि	ये	-	-	-	श्री	।।

अन्तरा

X		२			०		३		
म॑	ग	म॑	ध	म॑	सां	सां	सां	सां	सां
वि	ठु	ल	गि	रि	ध	र	न	हि	त
नी	ध	नी	रें	रें	गं	रें	सां	सां	सां
प्र	क	ट	ल	-	क्ष्म	ण	सु	व	न
नी	रें	गं	रें	सां	नी	ध	प	म॑	ग
भ	-	क्त	के	-	भ	व	न	में	-
म॑	ध	सां	नी	ध	प	म॑	ग	रे	सा
वा	-	स	क	रि	ये	-	-	-	- ।।२।।

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित कीर्तन गा सकतें हैं ।

कीर्तन नं. ४१

अथ मानकौ पद : राग - ईमन : ताल-झपताल:मात्रा-१०

दोरी दोरी आवत मोहि मनावत,दामखरच कुछ, मोल लईरी ।।
अचरापसारकै मोहि खिजावतहौ, तेरे बाबाकी चेरी भईरी ।।१।।
जारीजा सखी भवन आपने लखबातनकी एककहीरी ।।
नंददास वे क्यों नहीं आवत उनके पायन कछु महेंदी दईरी ।।२।।

कीर्तन नं. ४२

रासकौ पद-राग ईमन-ताल-चोताल-मात्रा-१२

श्याम सजनी शरदरजनी पुलिन मध्य नृत्य नाट्य ।
तां त्रिगता त्रगता तिरप बंद करत कामिनी ।
गिडगिडान् गिडगिडान् गिडि गिडि गिडी गिडी गिडान् ।
धिधिकिटता लाग दई झां झां झां झं नननन सुर उपंगिनी (१)
स्याम को यह नाद भावे तां त्रिगता गति हि लावे,
तत थेई थेई शब्द उघटि, कोटि कामिनी ।
कृष्णदास जस हि गावे, कर ताथेई थेई नचावे,
कां कृति कां कृति कां कृति कां कृति कर मृदंगिनी (२)

स्थायी

X		०		२		०		३		४	
नि	नि	ध	प	ग	म॑	ध	प	ग	रे	ऩिरे	सा
श्या	ऽ	म	स	ज	नी	श	र	द	र	जऽ	नी
ध़	ऩि	रे	ग	-	ग	प	रे	ग	रे	ऩिरे	सा
पु	लि	न	म	ऽ	ध्य	नृ	ऽ	त्य	ना	-	ट्य
सा	-	रे	-	ग	-	म॑	ग	रे	ग	म॑	ध
तां	ऽ	त्र	ग	ता	ऽ	य	ग	ता	ति	र	प
सां	ऽ	नि	ध	प	ऽ	ध	म॑	प	ग	म॑	ध
बं	ऽ	द	क	र	त	का	ऽ	ऽ	नि	नी	ऽ

अन्तरा

X		०		२		०		३		४	
प	गग	म॑	ध	सां	सांसां	सां	-	सां	ध	नि	ध
गि	डगी	डा	ऽन	गि	डगी	डां	-न	गि	ड	गि	ड
नि	रें	गं	रें	गं	रें	सां	ऽ	नि	ऽ	ध	प
गिं	ड	गि	ड	गि	डां	ऽ	न्	धि	धि	कि	ट
प	-	ध	म॑	ग	रे	सा	-	ऩि	रे	ग	रे
ता	ऽ	ला	ऽ	ग	द	रु	ऽ	झां	झां	झां	झं
ग	म॑	ध	नि	रें	सां	नि	ध	प	प	म॑	ध
न	न	न	न	सु	र	उ	पं	ऽ	गि	नी	ऽ

स्थायी

X		०		२		०		३		४	
प	-	प	-	ग	म॑	ध	म॑	प	ऽ	ऽ	ऽ
श्या	ऽ	म	को	य	ह	ना	ऽ	द	मा	ऽ	वें
म॑	ऽ	ध	ऽ	म॑	ध	नि	ऽ	ध	प	प	ऽ
तां	ऽ	त्रि	ग	ता	ऽ	ग	ति	हि	ला	ऽ	वे
नि	ध	नि	ध	प	ऽ	ध	म॑	प	ग	रे	सा
त	त	थे	ई	थे	ई	श	-	ब्द	उ	ध	ट
ऩि	रे	ऽ	ग	ऽ	ऽ	प	रे	ग	रे	सा	ऽ
को	ऽ	ऽ	टि	ऽ	क	-	का	ऽ	नि	नी	ऽ

अन्तरा

X		०		२		०		३		४	
प	ग	ग	म॑	ध	म॑ध	सां	ऽ	ऽ	रें	सां	ऽ
कृ	ऽ	ष्ण	दा	ऽ	सऽ	ज	स	हि	गा	ऽ	वे
सां	ध	नि	रें	गं	रें	गं	रें	सां	नि	ध	प
क	र	ता	ऽ	थे	ई	थे	ई	न	चा	-	वे
सां	-	नि	ध	नि	-	ध	प	ध	-	प	म॑
कां	ऽ	कृ	ति	कां	ऽ	कृ	ति	कां	ऽ	कृ	ति
ग	ऽ	म॑	ध	सां	सां	नि	ध	प	प	म॑	ध
कां	ऽ	कृ	ति	क	र	मृ	दं	ऽ	गि	नी	ऽ

श्रीमत् प्रभुचरण श्री गुसांईजी श्री विठ्ठलनाथजी

''श्री विठ्ठल : कृपासिन्धुर्भक्तवश्योतिसुंदर: ।
कृष्णलीला रसाविष्ट: श्रीमान् वल्लभनंदन: ।।''

जगद्‌गुरु श्रीमद् वल्लभाचार्यजी महाप्रभुजीके द्वितीय आत्मज एवं श्री गोपीनाथजी प्रभुचरणके अनुज, ऐसे श्रीमत् प्रभुचरण श्री गुसांईजी श्री विठ्ठलनाथजी का प्राकट्य संवत १५७२ को पोष कृष्ण नवमी (गुर्जर मार्गशीर्ष कृ. नवमी) शुक्रवार के दिन काशीके निकटवर्ती ''चरणाट'' नामक स्थानमें हुआ था ।

श्री विठ्ठलनाथजी साक्षात् पुरुषोत्तम स्वरूप हैं क्योंकि पंढरपुरके श्री विठ्ठलनाथजीने स्वयं पुत्र बनकर श्री महाप्रभुजीके घरमें प्रकट होनेकी इच्छा व्यक्त की थी । द्वितीय परिक्रमाके अंतर्गत जब श्री महाप्रभुजी पंढरपुरमें बिराजमान, श्री विठ्ठलनाथजीके दर्शनार्थ गये थे तब प्रभुने स्वयं, श्रीमुखसे उनके पुत्ररूपमें प्रकट होनेकी इच्छा व्यक्त करते हुए कहा ''अमने तो इच्छा एक छे जे, हूं नंदन तमे तात ।'' इस आज्ञा अनुसार श्री विठ्ठल प्रभु स्वयं पुत्ररूपसे पधारे। योगानुयोग जन्मके दिनही एक व्रजवासी ब्राह्मण श्री विठ्ठलनाथजीका स्वरूप पधराने श्री वल्लभके गृहमें आया । तब श्री महाप्रभुजीने आज्ञा की कि ''आज तो प्रभु सेवक बनके पुत्ररूपसे पधारे और सेव्य बनके इस भगवद् - स्वरूपमें पधारें ।'' अतएव पुत्रका नाम श्री विठ्ठल रखा ।

श्री विठ्ठल नामका स्वारस्य इस प्रकार है :- श्री + विद् + ठ + ल। श्री पद ऐश्वर्य - सुन्दरता - आनंदवाची है । विद् = ज्ञान ! ठ = शून्य (रागरहित); ल - स्वीकारते हैं । अर्थात् शरण आये हुए ज्ञानशून्य जीवोंको संसारसे रागरहित करके सेवकके रूपमें स्वीकारतें हैं ऐसे

षड्विध ऐश्वर्यादि धर्मोंसे युक्त श्री विठ्ठल हैं । अज्ञानीको ज्ञानरूपी प्रकाश देनारे श्री विठ्ठल हैं ।

बाल्यकालसेही आप भगवत् सेवापरायण थे । आपकी ऐसी सेवापरायणता देखकर, श्री महाप्रभुजीने श्री बालकृष्णलालजीका छोटासा स्वरूप पधरा दिया था, जिनको नित्य भोग धराकर आप प्रसाद ग्रहण करते थे । एक दिन सामग्रीमें एक ठोर भोग धराया था। श्री ठाकुरजी साक्षात् आरोग रहे थे और श्री विठ्ठलनाथजी उनके हाथोंसे ठोर खींच रहे थे । जब श्री महाप्रभुजीने यह देखा, उसी दिनसे सामग्रीमें २ नंग धरानेका नियम बनाया । आपका जन्मदिन मनाने के लिये साक्षात् श्री गोवर्धननाथजीने जलेबी आरोगने की इच्छा प्रकट की थी । श्री कुंभनदासजीने श्री ठाकुरजीको जलेबीका भोग धराया था । उसी दिनसे आपका जन्मदिन ''जलेबी उत्सव'' के नामसे प्रसिद्ध है । भगवत् सेवाके साथ-साथ, श्रीमद् भागवत् के पाठ - पारायण करके ही भोजन करनेका आपका नियम था । इसलिए, भोजन करनेमें बहुत विलंब होता था । श्री महाप्रभुजीने आपश्रीके लिए दशमस्कंधके साररूप ''त्रिविधनामावली'' ग्रंथकी रचना की जिसमें प्रभुकी बाललीला, प्रौढलीला और राजलीलाके नाम हैं ।

श्री महाप्रभुजीकी इहलीला संवरण समय आपकी आयु केवल १० सालकी थी । तैरना, घुडसवारी एवं वीणावादनमें आप प्रवीण थे । उस समय आप मित्रोंके साथ थोडी हंसी मजाक कर लेते थे लेकिन श्रीदामोदरदास हरसानीजीके कहने पर - ''तात, अपनो मारग ताप-कलेशको है हंसी मजाकको नहीं'' - तबसे आपश्रीने सेवामें और ग्रंथवांचनमे अधिक मन लगाया ।

श्रीमहाप्रभुजीने सर्वस्व समर्पणपूर्वक, निजगृहमें बिराजमान प्रभुकी सेवाका मार्ग दिखाया । तो श्रीगुसांईजीने सेवाके क्रममें राग-भोग और श्रृंगारके वैभवपूर्ण विनियोगयुक्त सेवाका प्रकार प्रगट किया जिससे अपने गृहमें बिराजमान सेव्यप्रभुको, ब्रह्मसंबंध द्वारा स्वनिवेदित सर्वस्वका समर्पण हो सके ।

सम्प्रदायके उत्कर्ष हेतु और प्रभुके सुखार्थ, श्रीजीकी आज्ञानुसार राग, भोग, श्रृंगारकी सेवा भावनाको आपने स्वसिद्धान्तानुसार, क्रियात्मक प्रणालिका रूपसे नियत किया ।

राग - सांप्रदायिक सेवाके मुख्य अंगरूप रागके उत्कर्ष हेतु आपने अष्टसखाकी मंडली बनाई जिसमें श्रीमहाप्रभुजीके चारसेवक (१) श्रीकुंभनदासजी (२) श्रीसूरदासजी (३) श्रीपरमानंददासजी और (४) श्रीकृष्णदासजीथे । आपके सेवकोंमें (५) श्रीगोविंदस्वामी (६) श्रीछीतस्वामी (७) श्रीचतुर्भुजदासजी एवं (८) श्रीविष्णुदासजी छीपा थे । बादमें जबश्री नंददासजी शरणमें आये तब उनकी काव्य संगीत विषयक योग्यता देखकर उन्हें अष्टछाप मंडलमें स्थान दिया। तत्पश्चात् ''अष्टछाप'' की विधिवत् स्थापना हुई । श्रीविष्णुदासजी छीपा वृद्ध हो चुके थे, अतः उन्हें द्वारपाल नियुक्त किया । इन अष्टछाप भक्त कवियोंके अलावा आपके और भी सेवक, काव्यसंगीतमें निपुण थे, जिनकी संख्या करीबन ४० की है । उन्होंने व्रजभाषामें रचनाएं की और समयानुसार विविध राग रागिनीयोंमें गान किया, जो आजभी कीर्तनसेवा प्रणालीमें गाये जाते हैं ।

भोग - (सामग्री) में नन्दालयकी भावनानुसार एवं कुंजकी भावनानुसार प्रात: (कलेवा) मंगलभोग, श्रृंगारभोग, ग्वालभोग (घैया), राजभोगमें कुंजभोजन और गृहभोजनकी भावनाके अनुरूप, एवं सायंकालीन सेवाक्रममेंभी ऋतुअनुसार विविध सामग्रीका क्रम प्रभु सुखार्थ, श्रीमहाप्रभुजीने नियुक्त किया था । आपने उसका सुव्यवस्थित रीतिसे विस्तार किया ।

श्रृंगार - श्रृंगारमेंभी श्रीअंगके वस्त्र, आभूषण एवं श्रीमस्तकके अष्टप्रकारके श्रृंगार निश्चित किये । अन्य समस्त प्रकारकी सेवाओकें लिये उनके संकेतरूप नामवाले विविध कोठा, जैसे दूधघर, शाकघर, फूलघर, पानघर, रसोईघर, आरतीघर, गुलाबघर, जलघडा, इत्यादि बनवाये । प्रभुके सुखार्थ समस्त कलाओंका विनियोग किया जिसमें षट्ऋतु और छप्पनभोगके मनोरथ उल्लेखनीय हैं । इन मनोरथोंकी विविध सजावटों द्वारा विविध कलाओंका और राग-रागनियोंके कीर्तनगानका समयानुसार एवं ऋतुअनुसार नियोजन किया। श्रृंगारमेंभी श्रीअंगके वस्त्र, आभूषण एवं श्रीमस्तकके अष्टप्रकारके श्रृंगार निश्चित किये । अन्य समस्त प्रकारकी सेवाओंके लिये उनके संकेतरूप नामवाले, विविध कोठा जैसे दूधघर, शाकघर, फूलघर, पानघर, रसोईघर, आरतीघर, गुलाबघर, जलघडा, इत्यादि बनवाये। प्रभुके सुखार्थ समस्त कलाओंका विनियोग किया जिसमें षट्ऋतु और छप्पनभोगके मनोरथ उल्लेखनीय हैं । इन मनोरथोंकी विविध सजावटों द्वारा विविध कलाओंका और राग-रागनियोंके कीर्तनगानका समयानुसार एवं ऋतुअनुसार नियोजन किया ।

संगीतके प्रति आपका प्रेम अनन्य था । आप एक समर्थ वीणावादक एवं निपुण गायक थे । संप्रदायमें आपको ''गीत-संगीत-सागर'' कहा है । वीणा आपका प्रिय वाद्य था। प्रभुको जगाने तथा पौढ़ानेके समय आप स्वयं वीणावादन करके, मधुर राग-रागिनीयोंको प्रभुसेवामें अंगीकृत कराते थे । किन्तु वीणावादनसे कठोर हुई करांगुलीयोंके अग्रभागसे श्रीजीको स्पर्श करना अपराधरूप है ऐसा समझ कर प्रभुसुखके लिए उत्तरजीवनमें आपने वीणावादनका त्याग किया ।

आप काव्य एवं गायन कलामें अत्यंत निपुण थे । आपश्रीने संस्कृत भाषामें, विविध राग-रागिनियोंमें अनेक रचनाएं की है जो आज पर्यंत गाई जाती हैं । उदाहरणार्थ ''मंगल मंगलं व्रजभुवि मंगलं'' संप्रदायमें नित्य मंगलभोग सरे तब गाई जाती है । इस पदकी अंतिम तुकका गान मंगलाके दर्शन खुलनेपर किया जाता है। आप द्वारा रचित ''प्रेंख पर्यंक शयनम्'' श्री ठाकुरजी पलना झूलें तब प्रथम गायी जाती है । और ''हरिरिह व्रजयुवती शत संगे'' अष्टपदी आजभी बसंत खेलमें बसंतपंचमीसे लेकर कुंज एकादशी तक समयानुसार प्रथम गानेकी प्रथा है ।

संप्रदायके सिद्धान्तोंका ज्ञान देनेके लिए आपने 'भक्तिहंस','भक्तिहेतुनिर्णय', 'विद्वन्मंडन', 'गीतातात्पर्यनिरूपण' जैसे स्वतंत्र ग्रंथोंकी रचना की । ''सर्वोत्तमस्तोत्र'' में आपने श्री वल्लभके संपूर्ण नामोंका निरूपण किया । ब्रह्मसूत्रके बाकी सूत्रों पर भाष्य लिखकर आपने उसे पूर्ण किया । श्री सुबोधिनीजी पर श्री टिप्पणीजी नामक टीका, गायत्रीकारिका, श्रृंगाररसमंडन

इत्यादि अनेक ग्रंथों पर व्याख्या लिखी है । 'श्रीवल्लभाष्टक' 'श्री सप्तश्लोकी', 'सौन्दर्यपद्य' 'श्रीयमुनाष्टपदी' 'श्रीगोकुलाष्टक' जैसे अनेक स्तोत्र-ग्रंथोंकी रचनाभी आपने की ।

लेखनकार्यके साथ-साथ पुष्टिजीवोंके उद्धारार्थ, मार्गकी सेवाप्रणाली सिखाकर, स्वरूपज्ञान करानेके लिए आपने निरंतर यात्राएं की और अनेक दैवी जीवोंको शरण लेकर, समाजके प्रत्येक वर्ण और समुदायके लोगोंका उद्धार किया । इसीलिये कहा जाता है;

वेश्या भंगी, ढीमरन, निजनिंदक ठग चोर ।
श्रीविठ्ठल सबपें करी निज करूणाकी कोर ।।

सामाजिक उत्थानके लिये उन्होंने कन्या विक्रय बंद करवाया सन्मार्ग एवं सच्ची महेनतसे उपार्जित द्रव्यका ही सेवामें विनियोग करनेका आग्रह किया । वैष्णव को दुष्ट अन्न और दुःसंग से दूर रहकर प्रामाणिक एवं नीतिमय जीवन जीनेकी राह दिखायी ।

आपश्री परम कृपालु थे और समर्थ न्यायाधीश भी थे । आपके न्यायकौशलसे प्रभावित होकर बादशाह अकबरने आपको ''श्रीगुसांईजी'' के पदसे विभूषित किया था । आपश्रीको गायभी बहुत प्रिय थी । आप गायकी सेवा बडे प्रेमसे करते थे इसलिये बादशाह अकबरने आपको गोकुलगाम भेंट किया था । आपका 'गोब्राह्मणप्रतिपालक' नाम इसका प्रत्यक्षप्रमाण है ।

आपश्रीको 'नवनीतप्रियाजी' और 'श्रीनाथजी' दोनों ही स्वरूपोंमें आसक्ति थी । इसलिये नवनीतप्रियाजीकी सेवा करते थे और श्रीनाथजीको राजभोग धराने रोज पधारते थे । जब कृष्णदास अधिकारीने आपश्रीको सेवासे वंचित किया तब आप चंद्रसरोवर पधारे थे और वहांसे श्रीनाथजीको पत्र लिखते थे जो ''नव विज्ञप्ति'' के नामसे प्रसिद्ध है । कृष्णदास अधिकारीका ये प्रसंग आपकी परमदयालुताका ठोस प्रमाण है ।

आपश्रीका प्रथम विवाह श्री रुकमिणीजीके साथ हुआ था । इनसे पुष्टिमार्गके प्रचारार्थ आपश्रीको छः पुत्र - रत्नों एवं चार बेटीजीयोंकी प्राप्ति हुई जिनके नाम इस प्रकार हैं: श्री गिरिधरजी, श्री गोविंदजी, श्री बालकृष्णजी, श्री गोकुलनाथजी, श्री रघुनाथजी और श्री यदुनाथजी एवं श्री शोभाजी, श्री यमुनाजी, श्री कमलाजी और श्री देवकाजी का प्राकट्य हुआ । रुकमिणीजीके नित्यलीला प्रवेश बाद, आपश्रीने श्री पद्मावतीजीसे विवाह किया और श्री घनश्यामलालजीका प्राकट्य हुआ। इस प्रकार आपका गृहस्थाश्रम, सात्विक, सेवापरायण और सुखमय था । भगवदीयों ने गाया है, ''मधुर व्रजदेश बस मधुर कीनो । मधुर गोकुलगाम मधुर वल्लभनाम मधुर विठ्ठलभजन दान दीनो।।१।। मधुर गिरिधरन आदि सप्तनुवेणुनाद सप्तरंध्रन मधुर रूप लीनो।।२।। मधुर फलफलित अति ललित पद्मनाभप्रभु मधुर अलिगावत सरसरंगभीनो।।३।।

सत्तर वर्षकी आयुमें आपने मार्गके उत्कर्षके लिए सर्वतोमुखी सतत परिश्रम किया और ईहलीला समाप्त कर सं. १६४२-फागुन कृष्ण ७के दिन गोविन्दस्वामीको साथ लेकर सदेह श्रीगिरिराजजीकी कंदरामें प्रवेशकर आप तिरोहित हुए (आसुरव्यामोह लीला की) ।आपश्रीके लिये संक्षेपमें भगवदीयों ने गाया है; ''कलिमें एक बडो आधार । श्रीवल्लभगृह विठ्ठल प्रगटे, आयलियो अवतार।।'' ऐसे श्रीविठ्ठलनाथजीके चरणोमें कोटि कोटि प्रणाम करते हुए....

''गतिर्विठ्ठलेशे रतिर्विठ्ठलेशे मतिर्विठ्ठलेशे सदा वै ममास्तु''

श्रीमत् प्रभुचरण श्री गुसांईजी श्री विठ्ठलनाथजी

श्री सूरदासजी

श्री सूरदासजी

अष्टछाप भक्तकवियों में शिरमोर ऐसे भक्त शिरोमणि श्री सूरदासजीका जन्म वि. सं. १५३५ के वैशाख शुक्ल ५ को दिल्ही के पास ''सींही'' नामक गाँवमें सारस्वत ब्राह्मण परिवारमें हुआ था । जन्मसे ही वे नेत्रहीन थे । निष्किंचन कौटुंबिक स्थितीमें माता-पिताको अंधबालक के प्रति तनिकभी लगाव नहीं था ।

एक दिन भगवद् इच्छासे सूरदासजी के पिताश्रीको यजमानकी ओरसे कुछ सोनामहोरें मिलि । उन्होंने संभालकर रखी फिर भी सोनामहोरों की गठरी चूहोंने छत पर रख दी । इस बातपर पिताश्री और घरवालोंने सूरदासजीको अति कटु वचन सुनाये । प्रभुकृपासे सूरदासजीको भविष्य ज्ञान, सगुन, आंतरदृष्टि, मधुरकंठ, काव्यरचना शक्ति, आदि अनेक शक्तिओंका ज्ञान प्राप्त हुआ था । इसी ज्ञानसे उन्होंने सोनामहोरें जहाँ पडी थी वह स्थान पिताश्रीको बताया किन्तु उसी क्षण उन्होंने गृहका त्याग कर दिया और एक दूसरे गाँव के जलाशय के पास पीपलके वृक्ष के नीचे वास करने लगे ।

सूरदासजीके पिताश्रीको जब उसी स्थानसे सोनमहोरें मिलीं तब उन्हें बडा भारी पश्चाताप हुआ । वे सूरदासजीको वापस लौटाने गये किन्तु सूरदासजीने वापस घर आने का इन्कार कर दिया । यह बात पूरे गाँवमें फैल गई और सूरदासजीकी महत्ता और भी बढ़ गयी । सूरदासजी अपने मधुर कंठसे ज्ञान-वैराग्य के अनेक भजन गाया करते थे । इस तरह धीरे धीरे वे सूरस्वामीके नामसे विख्यात हुए और उनके अनेक शिष्य बने ।

अठारह वर्ष की आयुमें तब श्रीनारदजीने श्रीसूरदासजीको भगवद् यशोगान श्रवण करवाया । उन्होंने मथुरा व्रजमंडलकी और प्रयाण किया । आगरा के पास ''गौघाट'' पर श्रीयमुनाजीके पवित्र

तटपर पर्णकुटी बनाकर शिष्यमंडलके साथ वे रहने लगे । भगवत् दर्शनकी, प्रभु साक्षात्कारकी आतुरता बढ़ने लगी । इतने में ही श्रीमहाप्रभुजी श्रीवल्लभाचार्यजीके आगमन के समाचार सूरदासजीको मिले । उनकी महिमासे सूरदासजी ज्ञात ही थे । वे दौड़कर श्रीवल्लभ के पास पहोंचे । वहाँ जाते ही, आंतरदृष्टिसे, सूरदासजीको श्रीवल्लभके अलौकिक रुपके दर्शन प्राप्त हुए । सूरदासजीने श्री महाप्रभुजीको शरण लेने की विनती की और गद्गद् कंठसे ''प्रभु हों सब पतितनको नायक'' ''प्रभु हों सब पतितनको टीको'' इत्यादि पद गाये तब श्री महाप्रभुजीने ''सूर व्हेके काहे को घिघियात हो, कछु भगवद्लीला गाओ'' कहते हुए भगवद्लीलाके गुणानुवाद करनेकी आज्ञा दी । तब सूरदासजीने अत्यंत दीनतापूर्वक विनती की, प्रभु, में कुछ नहीं जानता हूं, आप कृपा करके मुझे शरणमें लो ।

ततपश्चात् श्रीमद् वल्लभाचार्यजीने श्री सूरदासजीको समर्पण दीक्षा देकर श्रीमद्भागवतके दशमस्कंधकी अनुक्रमणिका सुनाई और श्रीसुबोधिनीजीका ज्ञान सूरके हृदय में स्थापित किया । उसी दिनसे सूरस्वामी, सूरदासजी बन गये । श्रीमद् आचार्यचरणकी कृपासे भगवद् लीलाका यशवर्णन करने का सामर्थ्य प्राप्त किया, और नवधा भक्तिके साथ उन्हें प्रेमलक्षणा भक्ति सिद्ध हुई । वे श्रीमहाप्रभुजी के साथ श्रीजी द्वार चल पडे । तब श्री आचार्यचरणकी आज्ञासे उन्होंने ''चकईरी चल चरण सरोवर जहाँ नहीं प्रेम वियोग... जहाँ श्री सहस्त्र सहित नित क्रीडत सोभित सूरजदास । अब न सुहाय विषय रस छिल्लर वा समुद्रकी आस ।।'' यह पद दशम स्कंधकी कारिका ''लक्ष्मी सहस्त्र लीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् ।'' अनुसार गाया ।

इस पदको श्रवणकर श्री महाप्रभुजी बहुत प्रसन्न हुए और श्री नंदालयकी लीला गानेकी आज्ञा की । तब श्री सूरदासजीने नंदमहोत्सवका कीर्तन वर्णन मांगलिक राग देवगंधारमें ''व्रज भयो महरिके पूत'' बधाईका गान किया ।

नंदालयकी लीलामें स्थित श्री सूरदासजीको देखके श्री महाप्रभुजीने उन्हें पुरुषोत्तम सहस्त्रनाम सुनाया जिससे उनके हृदयमें श्री भागवतकी लीला स्फुरी । श्रीमद् भागवतके प्रथम स्कंध से लेकर श्रीमद् भागवतके द्वादश स्कंध पर्यंत अनेक लीलाओं के कीर्तन वर्णन किये जिसमें दानलीला, मानलीला आदि के कीर्तन समाविष्ट हैं ।

संवत १५६७ में श्रीमहाप्रभुजीने सूरदासजीको श्रीनाथजीके कीर्तनगानकी सेवामें नियुक्त किये । और ''परासोली'' ग्राममें उनके रहनेका प्रबंध करवाया । वे नित्य मंगलासे शयनपर्यंतकी कीर्तन सेवा करने लगे । नेत्रहीन होते हुए भी गुरुकृपा से श्रीनाथजी और श्रीनवनीतप्रियाजी के जैसे वस्त्रश्रृंगारादि धारण होते थे वैसे ही वर्णनात्मक कीर्तनगान करते थे । इस बातकी परीक्षा करनेके लिये एक दिन श्री गिरधरजी आदि बालकोंने किसीको बताये बिना स्वयं ही निरावरण श्री नवनीतप्रियाजीको मोतीके सूक्ष्म श्रृंगार करके सूरदासजीको कीर्तन करनेकी आज्ञा की तब उन्होंने बहुत ही सुंदर पद ''देखो री हरि नंगमनंगा.'' गाया । यह सुनकर सब बालक आश्चर्यचकित हुए और प्रसन्न होकर बोले कि, इन पर तो श्रीठाकुरजीकी अनंत कृपा है । और भगवंल्लीलाओंका अनुभव इनको अष्टप्रहर है । आपने ऋतु-ऋतु के, उत्सवों के और नित्यक्रम के समय-समय के तथा बिनती, दीनता, विरह आदि के सहस्त्रावधि पद रचकर श्रीजीके सन्मुख गाये । सवालक्ष पद रचनेकी आपकी

इच्छाथी की किन्तु केवल एक लक्षपद ही आप बना सके तब आपके संकल्पको सिध्द करनेके लिये, स्वयं प्रभुने ''सूरश्याम'' के नाम से शेष पद प्रसिध्द किये, उनमेंसे बहुत सा साहित्य विधर्मियोंके शासन कालमें नष्ट हो जानेकी मान्यता प्रसिध्द हैं । शेष पद ''सूर सागर'' ग्रंथमें उपलब्ध हैं ।

सूरके भक्तिपद इतने व्यापक हो चुके हैं कि द्रुपद गायक, द्रुपद शैलीमें, खयाल गायक खयालोंके ढंगमें, भजनीक भजनकी धुनोमें, और ठुमरीकी बंदिशमें, अपनी पसंदके अनुसार गायन करते हैं ।

सूरमल्हार राग अपने स्वयं संयोजित किया है । तालोंमें आदिताल, त्रिताल, सूलताल, चौताल, धमार, मत्तताल, यतिताल, अठताल आदि द्रुपद अंगके तालोंका विशेषत: प्रयोग किया है । सूरदासजीने सूरसागर के अतिरिक्त सूर सारावली, भंवरगीत और साहित्यलहरी जैसी अनेक रचनाएँकी है । उनके 'दृष्टकूट' पदोंमें विशेष विद्वत्ताकी अलौकिक झांकी होती है । रसरुप प्रभु और प्रेमस्वरुपा श्री स्वामिनीजीके दिव्यभावोंकी अभिव्यक्ति इन पदोंसे मिलती है । जिससे भावुक जनके हृदय आनंदसे भर जाते है । यही सूरदासजीके पदोंकी विशिष्टता भी है ।

सारस्वतकल्पमें प्रभुके अष्टसखाओमें 'कृष्ण' नामके सखा सूरदासजी थे । सखीके रुपमें वे ''चंपकलता'' सखी थे । प्रभुके साथ जुडी हुई प्रत्येक वस्तुमें सूरदासजीकी आसक्ति थी किन्तु पुष्टिसम्प्रदायके अष्टस्वरुपोमें ''श्रीमथुरानाथजीके'' स्वरुपमें, अष्टसमयके दर्शनमें 'उत्थापन' के दर्शनमें, प्रभुके श्रृंगारमें 'पाग' और प्रभुके वस्त्रोमें चंपई रंगके वस्त्रोमें, चंपई वर्णमें उनकी आसक्ति थी । श्री अंगमें मुखारविंद के प्रति कुंजोमें नीलमकुंजके प्रति,

लीलाओमें मानलीला और ऋतुओमें वर्षाऋतुके प्रति उनका अधिक प्रेम था ।

ऐसा दिव्य-भव्य जिनका जीवनथा, ऐसै श्री सूरदासजी श्रीमहाप्रभुजीके द्वितीयपुत्र श्रीविठ्ठलनाथजी द्वारा, श्रीनाथजीकी सेवाके लिये नियुक्त किये गये अष्टछाप कविओंमे मूर्धन्य स्थान पर थे ।

जब निजधाम जानेका समय हुआ तब प्रभुकी रासस्थली परासोलीमें श्रीगोवर्धनधरण श्रीनाथजीकी ध्वजाको दंडवत् प्रणाम करके ध्वजा सन्मुख मुख रख कर सो गये । वैष्णवोंने यह खबर श्रीगुसांइजीको दी तब आपने आज्ञा की कि ''पुष्टिमारगको जहाज जा रह्योहै, जिन्हें जो चाहिये ले लो ।'' बादमें श्रीगुसांईजी कुंभनदासजी, गोविंदस्वामी, चतुर्भुजदासजी एवं वैष्णवोंको साथ लेकर सूरदासजीके निकट पधारे तब उन्होंने ''खंजन नयन रुप रसमाते'' और ''बल बल बल कुंवरि राधिके'' कीर्तन गाते हुए चित्तवृत्तिको रसो वै सः प्रभुके युगल स्वरुपमें स्थिर करके श्रीगुसांइजीके चरणस्पर्श करते हुए ''भरोसो दृढ इन चरनन केरो'' अंतिम पद गान किया । भगवद् इच्छासे १०५ वर्षकी आयुमें भगवद् लीलाका अलौकिक गुणगान करके लौकिक देहत्याग कर लीला प्रवेश कियाा ।

श्री सूरदासजीके चार नाम उनके पदोंकी छापमें दिखाई देते हैं । श्रीमहाप्रभुजी उन्हें ''सूर'' कहते । श्रीगुसांइजी उन्हें ''सूरदास'' कहते । उनकी दीनता देखकर श्रीस्वामिनीजीकी अलौकिक लीला वर्णन युक्त सात हजार पदोंमें ''सूरजदास'' छाप है । श्री गोवर्धननाथजीने पचीस हजार पद करे उनमें ''सूरश्याम'' छाप दिखाई देती है ।

श्री छीतस्वामीजी

श्री छीतस्वामीजी

अष्टछाप भक्तकवियोंमेंसे एक, प्रभुचरण श्री विठ्ठलनाथजीके परम सेवक श्री छीतस्वामी उनकी कृपाप्रसादी प्राप्त करनेवाले भक्तोंमेंसे एक थे ।

पूर्वावस्थामें 'छीतूचौबे' नामसे वे जाने जाते थे । श्री छीतस्वामीके शुरुआती वर्षोंका बाल्यकाल, माता-पिता, आदिका ऐतिहासिक विवरण प्राप्त नहीं है । ऐसी मान्यता है कि उनका जन्म मथुरा नगरमें मार्गशीर्ष कृष्ण १० के दिन वि सं. १५७२ में हुआ था । वे मथुराके पंडा थे । भावसे बड़े उग्र थे, उद्दण्ड एवं खलताकी मूर्तिमती अभिव्यक्ति थे। विप्रकुलमें अभिजात होने पर भी दुःसंगने उनके ऊपर जो रंग पोता था,जिससे नामी गुंडोमें उनकीभी नामगणना होती थी । परिवारमें यजमानी का काम होता था और वे बीरबलके तीर्थ-पुरोहित थे । एक बार छीतू चौबेने सुना कि गोकुलमें श्री विठ्ठलनाथजी नामके गुसांई आए हैं और वे जादू-टोनासे सबको वश कर लेते हैं । उच्छृंखल स्वभावसे विवश होकर छीतू-चौबे अपने चार साथियों को लेकर गोकुल गये । श्री गुसांईजीकी परिक्षा करनेके लिए साथमें एक थोथा नारियल और खोटा रुपया भी लेकर गये । गोकुलमें आकर कुछ सकुचाते हुए दोनों चीज श्री गुसांईजीको भेंट कर दी । उपाहृत वस्तुएं वास्तविक रुपमें स्वीकारते हुए प्रभुचरणने श्री मुखसे कहा, ''छीतस्वामी' तुम नीके हो ! आगे आउ, बहोत दिननमें देखे ।'' उनके मुखसे अपना नाम सुनकर और दर्शन करके वे बड़े प्रभावित हुए । श्री गुसांईजीके स्वरुपमें उन्हें साक्षात् श्री कृष्णके दर्शन हुए । श्री विठ्ठलनाथजी ने नारियल तोडकर सबको इसका प्रसाद बांटने को कहा और खोटा रुपया देकर बाज़ारसे सामान मंगवाया । सेवकने

नारियल तोडा तो उसमेंसे सफेद गिरी निकली । खोटे रुपयेसे सेवक सामान खरीद कर लाया । जब छीतू चौबे ने यह चमत्कार देखा तब वे दंगसे रह गये और श्री गुसांईजीकी तेजस्विताके सामने नतमस्तक हो गये । अनुग्रह मार्गकी निसर्ग करुणाने उस दिनसे ''छीतू-चौबे'' को ''छीतस्वामी'' के रुपमें ढाल दिया ।

''पारसतें मिलि लोह होत सुवरन सुखदाई, साचे गुरु कहं पाय खल हु छांडत खलताई। रहत प्रेम रसमत्त करत गुणगान निरंतर, सेवा सुमिरन छांडि परत नाहिं पल छित अंतर । श्री गुरु - कृपा - प्रभाव मिलेउ हरिरस अति रूरो, छीतस्वामी तजि दोष भयो हरि सेवक पूरो ।''

श्री प्रभुचरणके दिव्य स्वरुपका उन्हें एहसास हुआ; उन्होंने श्री गुसांईजीके चरण पकड़ कर ''चरणातपत्रकी छैंया'' पद गाया । उसी पलसे उनके जीवनमें आमूल परिवर्तन आया । छीतस्वामी पुष्टिमार्गमें दीक्षित होकर भगवत्सख्य रसका आस्वादन लेने लगे । शरण आने पश्चात् उन्होंने राग नटमें ''भई अब गिरिधर सों पहिचान'' और राग सारंगमें ''जे वसुदेव किये पूरण तप, सो फल फलित श्री वल्लभ देह। छीतस्वामी गिरिधरन श्री विठ्ठल तेई एई, एई तेई कछु न संदेह ।'' ये पद गाये ।

पुष्टिमार्गीय दीक्षा के बाद, गोवर्धनके पास ''पूंछरी'' नामक स्थान पर श्यामतमाल वृक्षके नीचे उन्होंने निवास किया और श्रीनाथजीकी कीर्तन सेवामें अपना जीवन व्यतीत किया ।

एक बार छीतस्वामी प्रतिवर्षकी भांति वर्षासनवृत्ति लेने बीरबलके पास आगरा जा पहुँचे । बीरबलने अपनेही महलमें उन्हें निवास दिया। रात्री विश्रामके अनंतर प्रातःकाल उन्होंने अपनें गुरुदेव

श्री गुसांईजीका स्मरण करते हुए-यह पद गया ''जै श्री वल्लभ राजकुमार!.... छीतस्वामी गिरीधरन श्री विठ्ठल, प्रकट कृष्ण अवतार।'' यह पंक्ति सुनकर बीरबलको बड़ा आश्चर्य हुआ । प्रभु और गुरुमें छीतस्वामीकी एकरुपता और दृढ निश्चयात्मकता बीरबलको न पच सकी । बीरबलके मनमें बादशाहका डर भी था । ऐसी कुबुद्धि के कारण छीतस्वामीने बीरबलकी वार्षिक वृत्तिका त्याग किया । व्यावृत्तिके लिए अपने धर्मका उपयोग न करना ऐसा सुन्दर सिद्धान्त, उनका गुरु प्रति दृढ आश्रय और त्याग के दर्शन इस प्रसंगसे हमें दृष्टिगोचर होते हैं ।

एक बार श्री गुसांईजीने जन्माष्टमी एवं नंदोत्सवका उत्सव बड़ी धाम-धूमसे मनाया । इस मनोरथके दर्शन करने बीरबल,उनकी बेटी शोभावती - जो श्री गुसांईजीकी अनन्य कृपापात्र सेवक थी; और भेष बदलकर अकबर बादशाह भी आये । श्री गुसांईजीकी कृपासे छीतस्वामीको इस अलौकिक लीलाके विलक्षण दर्शन हुए और उन्होंने गाया ''प्रिय नवनीत पालने झूले, श्री विठ्ठलनाथ झुलावे हो । धनि धनि भाग्य दास निजजनके जो यह दर्शन पावे, छीतस्वामी गिरिधरन श्री विठ्ठल, निगम एक करि गावे'' यह कीर्तन श्रवण कर श्री गुसांईजी अत्यंत प्रसन्न हुए । इस पदमें वर्णित अलौकिक दर्शन केवल छीतस्वामी और गुप्त वेशमें आये अकबर बादशाह को ही हुए थे ।

उनके पदोंमें 'छीतस्वामी' या 'छीतस्वामी गिरिधरन श्री विठ्ठल' यह शब्द अवश्य पाये जाते हैं । ''छीतस्वामी''में छीत शब्द अपने लिये और स्वामी शब्द प्रभु एवं गुरुके लिये प्रयुक्त करके दोनोंके लिये समान भावना प्रगट की है । अपने गुरु श्री विठ्ठलनाथजीके साथ-साथ श्री महाप्रभुजी, श्री यमुनाजी, श्री गिरीराजजी वर्षोत्सव और नित्यलीलाके

अनेक पद आपने रचे । भगवद्लीला एवं अन्य पद मिलाकर उनके प्राय: २०० पद प्राप्त हैं ।

शरण आनेके पश्चात् संगीत और काव्य-विषयोंके ज्ञानमें इनकी निपुणता देखकर श्री विठ्ठलनाथजीने सं. १६०२ में इनका अष्टसखा मंडलीमें समावेश किया । तत्पश्चात, अष्टछापकी स्थापना होने पर उन्हें बडे सम्मानपूर्वक अष्टछाप कवियोमें स्थान दिया ।

इनके काव्योंकी भाषा-शैली सरल और सीधी थी । उनका संगीत - विषयक ज्ञान प्रशंसनीय रहा है । अपने पदोंमें इन्होनें ३६ रागिनियोंका प्रयोग किया है । उनके पदोंमे संगीत के अनेक पारिभाषिक शब्द पाये जाते हैं । प्रभुके लीलात्मक अष्टसखाओंमें छीतस्वामी 'सुबल' सखा और 'पद्मा. सखी हैं । 'पद्मा' की अधिक आसक्ति चंद्रावली जी में होनेसे यहाँ छीततस्वामीकी श्री विठ्ठलनाथजीमें आसक्ति में थी । श्रृंगारमें 'सेहरा' में उनका विशेष लगाव था । जीवनभर कीर्तनद्वारा उन्होंने प्रभुकी सेवा की ।

वि. सं १६४२ में थी विठ्ठलनाथजीने लीलाप्रवेश किया तब छीतस्वामी भी अत्यंत व्यथित हुए । तब प्रभु श्री गोवर्धनधरणने उन्हें साक्षात् दर्शन दिये और छीतस्वामीने प्रभुचरणके अलौकिक तेजपूंजको तदीय सप्त आत्मजोंके रुपमें विकसित देखा और प्रभुचरणकी सतत भूतल अवस्थिति की अनुभूतिमें ''विहरत सातों रुप धरें'' पद गाया । और अंतिम तुक ''छीतस्वामी गिरिधरन श्री विठ्ठल जिहीं भजि अखिल तरें ।'' गा कर लौकिक देहका त्याग किया ।

ऐसे गुरु और गोविन्दको एकरुपही माननेवाले छीतस्वामीको कोटि कोटि प्रणाम ।

आश्रय का पद

राग - तिलंग ताल : कहेरवा मात्रा-८

इस राग के आरोहमें शुद्ध निषाद और अवरोहमें कोमल निषाद लगता है । रोष स्वर शुद्ध हैं । रिषभ और धैवत वर्ज्य हैं ।

आरोह : सा, ग म प नी सां

अवरोह : सां नी̲ प, ग म ग, सा

पकड : ग म प नी सां, नी̲ प, ग म ग, सा

गाने का समय : रात्रि का दूसरा प्रहर

वादी - ग, संवादी-नी, जाति-औड़व

कीर्तन नं. ४३

श्री वल्लभ ही को भारी भरोसो ।।
काहेको मन भटकत डोलत जो चाहत फलकारी ।।१।।
श्री विठ्ठलगिरिधर सब बालक जगत कियो उद्धारी ।।
पुरुषोत्तमप्रभु नाम मंत्र दे चरण कमल सिरधारी ।।२।।

x	०	x	०
प सां नी सां	नी̲ प ग म	ग ग ग सा	ग म पनी̲‿ मप‿
व - ल्लभ	ही - को -	भा - री भ	रो - सो‿- --‿

अंतरा

x	०	x	०
ग म प नी	सां नीसां सां	नी सां नी̲ प	ग म ग ग
का- हे -	को - म न	भ ट क त	डो - ल त
सा सा ग म	प प नी सां	नी̲ नी̲ प प	ग म ग ग
जो - चा -	ह त फ ल	का - - -	री - - -

स्थाई

X	○	X	○
सा सा ग म	प प प प	ग म $\underline{\text{नी}}$ प	ग म ग ग
श्री - वि -	ठ्ठ ल गि रि	ध र स ब	बा - ल क
प सां नी सां	$\underline{\text{नी}}$ $\underline{\text{नी}}$ प प	ग म ग ग	सा ग म प
ज ग त कि	यो - ऊ -	द्धा - - -	री - - -

अंतरा

X	○	X	○
ग म प नी	सां नी सां सां	नी सां $\underline{\text{नी}}$ प	ग म ग ग
पु रु षो -	त्त म प्र भु	ना - म मं	- त्र दे -
सा सा ग म	प प नी सां	$\underline{\text{नी}}$ $\underline{\text{नी}}$ प प	ग म ग ग
च र ण क	म ल सि र	धा - - -	री - - -

आश्रय का पद

राग - हंसध्वनी ताल : तीनताल मात्रा - १६

इस रागमें सब स्वर शुद्ध हैं ।

मध्यम और धैवत स्वर वर्ज्य हैं ।

जाति - औडव वादी - सा संवादी - प

आरोह : सा रे, ग प ग रे, ग प नी सां

अवरोह : सा, नी, प, ग, रे, सा

पकड : सां नी प, ग सा रे, ग रे सा

गाने का समय : रात्रि का प्रथम प्रहर

कीर्तन नं. ४४

श्री गोवर्धनकी रहिये तरेटी ।।
नित प्रति मदन गोपाल लालके
चरण कमल चित लहिये ।।१।।
तन पुलकित व्रज रजमें लोटत
गोविंद कुंडमें नहिये ।।
रसिकप्रीतम हित चित की बातें
श्री गिरिधारीजी सो कहिये ।।२।।

X	२	०	३
नी सां गं रें सां नी	प प ग सा	रे रे रे रे	ग प रे सा
गो- -- व र	ध न की-	र हि ये त	रे - टी -

अन्तरा

X	२	०	३
ग प नी नी	सां सां सां सां	प नी सां गं	रें रें सां सां
नि त प्र ति	म द न गो	पा - ल ला	- ल के -
सां सां नी नी	प प रे सा	रे रे रे रे	ग रे सा सा
च र ण क	म ल चि त	ल हि ये -	- - - -

स्थायी

X	२	०	३
सा सा प ग	प प प प	ग प सां नी	प ग रे सा
त न पु ल	कि त ब्र ज	र ज में -	लो - ट त
ग प सां नी	प प ग सा	रे रे रे रे	ग रे सा सा
गो - वि न्द	कुं ड में -	न हि ये -	- - - -

अन्तरा

X	२	०	३
ग प नी नी	सां सां सां सां	प नी सां गं	रें रें सां सां
र सि क प्री	त म हि त	चि त की-	बा - ते श्री
सां सां नी नी	प प रे सा	रे रे रे रे	ग रे सा सा
गि र धा -	री - जी सो	क हि ये त	रे - टी श्री

।। श्री हरिः ।।

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

द्वारा प्रकाशित

पुष्टिभक्ति संगीत पाठ्यक्रम की पुस्तिका

कीर्तन प्रवेशिका : पाठ्यक्रम नं १
कीर्तन प्रबोध : पाठ्यक्रम नं २
कीर्तन सुबोध : पाठ्यक्रम नं ३
कीर्तन प्रवीण : पाठ्यक्रम नं ४
कीर्तन विशारद : पाठ्यक्रम नं ५

पू.पा.गो.श्री निकुंजलताबेटीजी

की आज्ञा एवं मार्गदर्शनसे अंग्रेजीमें पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं । जिसमें

Jagadguru Shri Vallabhacharyaji
(With colour pictures)
Mahaprabhu Shri Vallabh
(Complete Pictorial story for children)
Prabhucharan Shri Gusainji
(With colour pictures)
Shri Shrinathji
(With colour pictures)
ABC of Pushtimarg
(With pictures)
Thus You Pray
(Nityaniyam strotras, Kirtan, Dhol etc for children & youngsters)

प्राप्ति स्थान

पू.पा.गो.श्री निकुंजलताबेटीजी
अे/४, राजनीलम, ग्राउन्ड फ्लोर,
डॉ. रजबअली पटेल लेन,
ब्रीजकेन्डी अस्पताल के सामने,
भुलाभाई देसाई रोड, मुंबई - ४०००२६.
फोन : २३५३८८१४ / ९८२००२३७८२
ईमेल : nikunjalabetiji@hotmail.com

श्री सुरेन्द्रभाई महेता
६०४/मेकर चेम्बर-५, नरीमन पोईन्ट,
मुंबई - ४०० ०२०.
फोन : २२८३ ५२९५
२२८७ ५५३४

श्रीमती उर्मिलाबेन बी. वोरा
४०१, सी, पूर्णिमा बील्डींग,
२३, पेडर रोड, मुंबई - ४०००२६.
फोन नं.: २३५१०२७२
मो.: ९८१९६३८७७६

श्री सुरेन्द्रभाई शाह
सुखधाम, ठठाई भाटियावाडी,
एस. वी. रोड, कांदिवली (वेस्ट),
मुंबई - ४००१०१.
फोन : २८६३२३९६
मो.: ९८३३२७२३८३

श्रीमती नलीनीबेन महेता
६०१, एस. एस. सदन,
गुलमहोर क्रोस रोड नं.६,
जे.बी.पी.डी. स्कीम,
मुंबई - ४०००४७.
फोन नं.: ६५०१४८२४
मोबाईल : ९८६७६२४७४४

श्रीमती सोहिणी बी. परिख
बी/२३, शांति निकेतन,
लल्लुभाइ पार्क, अंधेरी (वेस्ट),
मुंबई - ४०००५८.
फोन : २६७०६३५०

।। श्री हरिः ।।

पूज्यपाद गो. श्री निकुंजलता बेटीजी

संस्थापित

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट प्रेरित

''वंदे श्री विठ्ठल चरणं''

श्री गुसांईजी की बधाईके पदकी C.D.

मुख्य गायिका कलाकार :

अ.सौ.श्रीमती श्रीमीनाक्षीजी श्रीमयंककुमारजी नेरल्ला

स्वर और संगीत संयोजन :

पं. श्री. सुखदेवजी चतुर्वेदी एवं
कु. ख्याति निर्मल द्वारकादास

प्रवक्ता :

श्री व्रजेश हीरजी

(नामसेवार्थ वितरण)

प्राप्ति स्थान
पू.पा.गो.श्री निकुंजलताबेटीजी
ओ/४, राजनीलम, ग्राउन्ड फ्लोर,
डॉ. रजबअली पटेल लेन,
भुलाभाई देसाई रोड, मुंबई - ४०००२६.
फोन : २३५३८८१४ / ९८२००२३७८२
ईमेल : nikunjalabetiji@hotmail.com